केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

अध्ययन सामग्री / Study Material

शैक्षिक सत्र / Session - 2022-23

कक्षा / Class - बारहवीं

विषय / Subject - हिन्दी (आधार)

विषय कोड / Subject Code - 302

तैयारकर्ता : संतोष कुमार कुशवाहा, सह-प्रशिक्षक (हिंदी)
Prepared By: SANTOSH KUMAR KUSHWAHA, TA (HINDI)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH
सेक्टर-33 सी, चंडीगढ़ / **SECTOR-33C, CHANDIGARH**

वेबसाइट / Website : zietchandigarh.kvs.gov.in

ई-मेल / e-mail :kvszietchd@gmail.com दूरभाष / Phone : 0172-2621302, 2621364

हमारे संरक्षक

श्रीमती निधि पांडे, आईआईएस आयुक्त	**Mrs. NIDHI PANDEY, IIS** **COMMISSIONER**
श्री एन. आर. मुरली संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)	**Mr. N R MURALI** **JOINT COMMISSIONER(TRAINING)**
श्री सत्य नारायण गुलिया संयुक्त आयुक्त (वित्त)	**Mr. SATYA NARAIN GULIA,** **JOINT COMMISSIONER (FINANCE)**
श्रीमती अजीता लौंग्जम संयुक्त आयुक्त (प्रशासन-I)	**Mrs. AJEETA LONGJAM** **JOINT COMMISSIONER (ADMIN-I)**
डॉ. जयदीप दास संयुक्त आयुक्त (प्रशासन-II)	**Dr. JAIDEEP DAS** **JOINT COMMISSIONER (ADMIN-II)**

निदेशक महोदय का संदेश

विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को ध्यान में रखते हुए उपयोगी अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना हमारा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इससे न केवल उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सरलता एवं सुविधा होगी बल्कि वे अपने आंतरिक गुणों एवं अभिरुचियों को पहचानने में सक्षम होंगे। बोर्ड परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करना हर एक विद्यार्थी का सपना होता है। इस संबंध में तीन प्रमुख आधार स्तंभों को एक कड़ी के रूप में देखा जाना चाहिए- अवधारणात्मक स्पष्टता, प्रासंगिक परिचितता एवं आनुप्रयोगिक विशेषज्ञता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की मूलभूत बातों को गौर करने पर यह तथ्य स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की सोच को सकारात्मक दिशा देने के लिए उन्हें तकनीकी आधारित समेकित शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराए जाएँ। बोर्ड की परीक्षाओं के तनाव और दबाव को कम करने के उद्देश्य को प्रमुखता देना अति आवश्यक है।

यह सर्वमान्य है कि छात्र-छात्राओं का भविष्य उनके द्वारा वर्तमान कक्षा में किए गए प्रदर्शन पर ही निर्भर करता है। इस तथ्य को समझते हुए यह अध्ययन सामग्री तैयार की गई है। उम्मीद है कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री के माध्यम से वे अपनी विषय संबंधी जानकारी को समृद्ध करने में अवश्य सफल होंगे।

शुभकामनाओं सहित।

मुकेश कुमार
(उपायुक्त एवं निदेशक)

विषय-सूची / INDEX

क्रम सं.	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं.
1.	पाठ्यक्रम	1
2.	अंक-विभाजन	3
3.	अपठित बोध : गद्य व पद्य (बहुविकल्पी प्रश्न)	4
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम : निर्धारित प्रकरण (बहुविकल्पी प्रश्न)	14
5.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-2) : पद्य (बहुविकल्पी प्रश्न)	18
6.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-2) : गद्य (बहुविकल्पी प्रश्न)	39
7.	पाठ्य पुस्तक (वितान भाग-2) : (बहुविकल्पी प्रश्न)	58
8.	रचनात्मक लेखन : (वर्णनात्मक प्रश्न)	71
9.	गद्य-विधाएँ- कहानी और नाटक : (वर्णनात्मक प्रश्न)	76
10.	जनसंचार और पत्रकारिता : निर्धारित प्रकरण (वर्णनात्मक प्रश्न)	83
11.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-2) : पद्य (वर्णनात्मक प्रश्न)	98
12.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-2) : गद्य (वर्णनात्मक प्रश्न)	111

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा – 12वीं (2022-23) परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खंड 'अ' और 'ब' का होगा।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगें।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक 100 **निर्धारित समय 3 घंटे**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1	**अपठित गद्यांश**		**15**
	अ	एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का) (1 अंक x 5 प्रश्न)	05
2	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित**		**05**
	बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)		05
3	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
4	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित पाठों पर दस बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**		**20**
	1	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (6 अंक x 1 प्रश्न)	06
	2	कहानी का नाट्यरूपांतरण / रेडियो नाटक / अप्रत्याशित विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में)	06
	3	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (4 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 80 शब्दों में)	08
6	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2**		**20**

	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	2	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	3	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	4	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	4
7	**(अ) श्रवण तथा वाचन**		**10**
	(ब) परियोजना कार्य		**10**
कुल अंक			**100**

प्रस्तावित पुस्तकें :

1. **आरोह, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम',** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	काव्य खंड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी – गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे – चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		• एन फ्रैंक - डायरी के पन्ने

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिये कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

विषय - हिन्दी (आधार)

कक्षा - बारहवीं (2022-23)

अंक-विभाजन

बहुविकल्पी प्रश्न				
क्रम संख्या	प्रश्न खंड	प्रश्नों की संख्या	प्रश्न करना है	निर्धारित अंक
1.	अपठित बोध (गद्यांश)	10	10	1X10=10
2.	अपठित बोध (पद्यांश) अथवा के साथ	05 / 05	05	1X5=05
3.	अभिव्यक्ति और माध्यम	05	05	1X5=05
4.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 गद्य	05	05	1X5=05
5.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पद्य	05	05	1X5=05
6.	पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2	10	10	1X10=10
		45	**40**	**40**
वर्णनात्मक प्रश्न				
7.	रचनात्मक लेखन	01	06	6X1=06
8.	गद्य-विधाएँ : कहानी और नाटक	02	02	3X2=06
9.	अभिव्यक्ति और माध्यम	03	02	4X2=08
10.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पद्य	03	02	3X2=06
11.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 पद्य	03	02	2X2=04
12.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 गद्य	03	02	3X2=06
13.	पाठ्य पुस्तक आरोह भाग-2 गद्य	03	02	2X2=04
				40
				80

सामान्य निर्देश-

1. प्रश्नपत्र दो खंडों में विभाजित किया गया है:- खंड अ बहुविकल्पी प्रश्न तथा खंड ब वर्णनात्मक प्रश्न।
2. खंड-अ में 45 बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें 40 के उत्तर देने होंगे।
3. खंड-ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें उचित आंतरिक विकल्प भी होंगे।
4. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित होंगे।
5. वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर निर्धारित शब्द-सीमा में लिखे जाने चाहिए।

खंड-'अ' - अपठित बोध

अपठित गद्यांश

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

(1)

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवन-यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो; माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा , उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है, परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं , उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए , जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं, इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

i- किन लोगों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है?

(क) इतिहास वेत्ताओं के अनुसार

(ख) भूगोल वेत्ताओं के अनुसार

(ग) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार

(घ) काव्य-शास्त्रियों के अनुसार

ii- द्वितीय विद्या हमें क्या सिखाती है?

(क) ज्ञान

(ख) मरना

(ग) ध्यान

(घ) जीना

iii- किस विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है?

(क) चौथी विद्या

(ख) पहली विद्या

(ग) दूसरी विद्या

(घ) तीसरी विद्या

iv- पूँछ-सींगविहीन पशु किसके लिए प्रयोग हुआ है?

(क) पशु के लिए

(ख) पूँछ के लिए

(ग) संसार के लिए

(घ) विद्याहीन मनुष्य के लिए

v- वर्तमान भारत में किस विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है?

(क) चौथी विद्या

(ख) पहली विद्या

(ग) दूसरी विद्या

(घ) तीसरी विद्या

vi- 'सुसभ्य' शब्द में 'सु' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

vii- आज का युवक अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है-

(क) घर-घर जाकर शिक्षा देने में ही

(ख) अपनी विद्वता दिखने के चक्कर में ही

(ग) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही

(घ) इनमें से कोई नहीं

viii- भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए?

(क) जो उपयोगी न हो

(ख) जो उपयोगी हो

(ग) जो आवश्यक न हो

(घ) जो आवश्यक हो

ix- 'भारतीय' शब्द में 'ईय' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

x- वर्तमान शिक्षा-पद्धति की विशेषताओं को .....है।

(क) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।

(ख) सर्वथा नकारा भी जा सकता।

(ग) इनमें से दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

i-(ग) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार ii-(घ) जीना iii-(ख) पहली विद्या iv-(घ) विद्याहीन मनुष्य के लिए v-(ग) दूसरी विद्या vi-(क) उपसर्ग vii-(ग) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही viii-(घ) जो आवश्यक हो ix-(ख) प्रत्यय x-(क) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।

(2)

जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं , उस स्थान को अपने देश में 'तीर्थ' कहने का रिवाज है। और यह केवल रिवाज की ही बात नहीं है ; हम सचमुच मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किंतु, भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं।

नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ , अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना के आँसू और उमंग , भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अत: जहाँ भाषाओं का मिलन होता है , वहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं , उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है।

हमारी भाषाएँ जितनी ही तेजी से जगेंगी , हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय कि वे केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ , बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचे और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है, उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं, हैं तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

i- जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में क्या कहने का रिवाज है?

(क) संगम

(ख) तीर्थ

(ग) मोक्ष

(घ) तट

ii- भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम क्या है?

(क) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर वाद-विवाद होता है

(ख) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर नाटक होता है

(ग) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं

(घ) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर जादू दिखाया जाता है

iii- जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ

(क) भावों और विचारों का मिलन होता है

(ख) भावों और विचारों का मिलन नहीं होता है

(ग) भावों और विचारों का संघर्ष होता है

(घ) भावों और विचारों का संघर्ष नहीं होता है

iv- लेखक ने सबसे बड़ा तीर्थ किसे माना है?

(क) भाषाओं के संगम को

(ख) नदियों के संगम को

(ग) विचारों के संगम को

(घ) इनमें से कोई नहीं

v- लेखक के अनुसार भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत कौन है?

(क) भाषाओं की नदियों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है

(ख) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है

(ग) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान नहीं करता है

(घ) इनमें से कोई नहीं

vi- भारतीय भाषाओं के तेजी से जगने का क्या परिणाम होगा?

(क) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से बढ़ता जाएगा

(ख) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से कम होता जाएगा

(ग) कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा

(घ) इनमें से कोई नहीं

vii- भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही क्या होने लगा है?

(क) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप टूटने लगा है

(ख) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप खत्म होने लगा है

(ग) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है

(घ) इनमें से कोई नहीं

viii- प्रत्येक भाषा के भीतर क्या जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है?

I. भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है

II. उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं

III. कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है

(क) केवल एक

(ख) केवल दो

(ग) एक , दो, और तीन

(घ) इनमें से कोई नहीं

ix- 'विभिन्न' शब्द में उपसर्ग है-

(क) भिन्न

(ख) न

(ग) वि

(घ) भि

x- 'पारस्परिक' शब्द में प्रत्यय है-

(क) पा

(ख) पार

(ग) रिक

(घ) इक

उत्तर-

i-(ख) तीर्थ ii-(ग) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं iii-(क) भावों और विचारों का मिलन होता है iv-(क) भाषाओं के संगम को v-(ख) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है vi-(क) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से बढ़ता जाएगा vii-(ग) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है viii-(ग) एक, दो, और तीन ix-(ग) वि x-(घ) इक

(3)

परियोजना शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी खेल की तरह का ही आनंद मिलता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है-खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाना। यदि आपको कहा जाए कि दशहरा पर निबंध लिखिए , तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अखबारों से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आप में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है। इससे आपमें एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का विकास होता है।

आपमें चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से , अपने तरीके से तैयार कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे हर व्यक्ति का बातचीत करने का , रहने का, खाने-पीने का अपना अलग तरीका होता है। ऐसा निबंध, कहानी कविता लिखते या चित्र बनाते समय भी होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं-एक तो वे परियोजनाएँ, जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती हैं और दूसरी वे , जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं।

समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के निदान के लिए भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्राय: सरकार अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य – योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती हैं। किंतु दूसरे प्रकार की परियोजना को आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे 'शैक्षिक परियोजना' भी कहा जाता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए बहुत सारी नई-नई बातों से अपने-आप परिचित भी होते हैं।

i- लेखक के अनुसार किसे तैयार करने में खेल की तरह आनंद मिलता है?

(क) पढ़ना-लिखना न पड़े बस खेलते रहने में

(ख) खेल के दौरान दिए गए गृह कार्य को करने में

(ग) शिक्षा के तहत दी गई परियोजना को तैयार करने में

(घ) खेलना भी जरुरी है और पढ़ना भी जरुरी है

ii- आपको किस कार्य में बहुत आनंद आएगा?

(क) दशहरा विषय पर निबंध लिखने में

(ख) क्रिकेट या फुटबाल खेलकर समय बिताने में

(ग) अख़बार के अलावा भी अपनी पसंद की बातें एकत्रित करने में

(घ) अपने से छोटे बच्चों को चिढ़ाने में

iii- किस कार्य से बच्चों में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है।

(क) मित्रों के साथ बैठकर बातें करने से

(ख) तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने से

(ग) घर में बड़ों द्वारा कही गई बात को नजरअंदाज करनेसे

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv- परियोजना तैयार करने की क्या शैली हो सकती है?

(क) हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है

(ख) इसे एक ही ढंग से दूसरों के साथ मिलकर तैयार किया जा सकता है

(ग) कुछ लोग इसे सहज ढंग से समझ नहीं पाते हैं

(घ) कुछ लोग परियोजना कार्य करना ही नहीं चाहते

v- निबंध, कहानी, कविता लिखते या चित्र बनाते समय कैसा परिणाम होता है?

(क) सबका एक जैसा ही होता है

(ख) कुछ लोगों का एक जैसा और कुछ का अलग-अलग होता है

(ग) सब लोग किसी एक का देखकर लिख या बना लेते हैं

(घ) सबका अलग-अलग होता है

vi- 'एकाग्रता' शब्द में 'ता' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

vii- हम मोटे तौर पर परियोजना को जिन दो भागों में बाँट सकते हैं,वे हैं-

(क) समस्याओं को छोड़ देने के लिए और नई जानकारी प्राप्त करने के लिए

(ख) समस्याओं के निदान के लिए और समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए

(ग) समस्याओं के समझने के लिए और विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए

(घ) 'क' और 'ख' दोनों

viii- सरकार अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर तैयार होने वाली कार्ययोजना है-

(क) समस्याओं के निदान के लिए

(ख) समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए

(ग) 'क' और 'ख' दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

ix- 'परियोजना' शब्द में 'परि' है-

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

x- दूसरे प्रकार की परियोजना को कहा जा सकता है-

(क) शैक्षिक परियोजना

(ख) गैरशैक्षिक परियोजना

(ग) इनमें से दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

i-(ग) शिक्षा के तहत दी गई परियोजना को तैयार करने में ii- (ग) अख़बार के अलावा भी अपनी पसंद की बातें एकत्रित करने में iii-(ख) तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने से iv-(क) हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है v-(घ) सबका अलग-अलग होता है vi-(ख) प्रत्यय vii-(ख) समस्याओं के निदान के लिए और समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए viii- (ग) 'क' और 'ख' दोनों ix-(क) उपसर्ग x-(क) शैक्षिक परियोजना

अपठित काव्यांश

प्रश्न- निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-

(1)

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन संबल।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें
श्रम से कातर जीव नहाकर
फिर नूतन धारण करता है,
काया रूपी वस्त्र बहाकर।
सच्चा प्रेम वही है जिसकी –
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर!
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर ।

i- कवि ने मृत्यु को क्या माना है?

(क) मोक्ष
(ख) सरोवर
(ग) उपवन
(घ) जीवन का ठहराव

ii- कवि मृत्यु का निर्भय स्वागत करने की बात क्यों करता है?

(क) क्योंकि जीव फिर से नया आवरण और संबल पाकर आगे बढ़ता है
(ख) क्योंकि जीवन की कोई निश्चितता नहीं है
(ग) क्योंकि जीवन में सदैव दुःख ही दुःख है
(घ) क्योंकि जीवन रुक जाता है फिर आगे नहीं बढ़ता है

iii- श्रम से कातर जीव कहाँ स्नान करता है?

(क) मृत्यु रूपी सरिता में
(ख) जीवन रूपी नदी में
(ग) काया रूपी वस्त्र में
(घ) शरीर रूपी नदी में

iv- कवि ने सच्चा प्रेम किसे कहा है?

(क) जिस प्रेम में आत्मसमर्पण हो
(ख) जो स्वार्थ पर आधारित हो
(ग) जिस प्रेम में चालाकी हो
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- प्रेम में सर्वाधिक महत्त्व किसका है?
(क) जीवन का
(ख) त्याग का
(ग) संघर्ष का
(घ) प्राण का

उत्तर-

i- (घ) जीवन का ठहराव ii-(क) क्योंकि जीव फिर से नया आवरण और संबल पाकर आगे बढ़ता है iii-(क) मृत्यु रूपी सरिता में iv- (क) जिस प्रेम में आत्मसमर्पण हो v-(ख) त्याग का

(2)

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
पुरुष क्या, पुरुषार्थ हुआ न जो,
हृदय की सब दुर्बलता तजो।
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो,
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो?
प्रगति के पथ में विचरों उठो ।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।
न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है,
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।
समझ लो यह बात यथार्थ है
कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है।
भुवन में सुख-शांति भरो, उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ।।

न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है,
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है।
न पुरुषार्थ बिना क्रियत कहीं,
न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर-तुल्य वरो, उठो ।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

i- पुरुष में पुरुषार्थ होने का क्या मतलब है?
(क) व्यक्ति में परिश्रम होना
(ख) जीवन में त्याग होना
(ग) कार्य में परावलंबी होना

(घ) जीवन में सत्य होना

ii- यदि व्यक्ति में प्रबल पुरुषार्थ हो तो इसका क्या परिणाम होगा?

(क) व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं होगा

(ख) व्यक्ति का जीवन बहुत कठिन होगा

(ग) व्यक्ति को संसार की वांछित सभी वस्तुएँ सुलभ हो सकती हैं

(घ) व्यक्ति को जीवन भर पछताना पड़ेगा

iii- 'कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है'- इस पंक्ति का क्या आशय है?

(क) व्यक्ति चाहे कुछ करे या न करे लाभ मिलता ही है

(ख) जीवन में परिश्रम के अलावा भी बहुत कुछ है

(ग) यह सच्चाई है कि जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है

(घ) जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है, यह सही नहीं है

iv- न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है, न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है- इसमें है-

(क) पदमैत्री एवं तुक का निर्वाह

(ख) दोहा एवं चौपाई छंद

(ग) रूपक एवं श्लेष अलंकार

(घ) प्रसाद गुण संपन्न भाषा

v- उक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-

(क) पुरुषार्थ और कवि

(ख) पुरूषार्थी की विशेषता

(ग) पुरुषार्थ की महत्ता

(घ) पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ

उत्तर-

i-(क) व्यक्ति में परिश्रम होना ii- (ग) व्यक्ति को संसार की वांछित सभी वस्तुएँ सुलभ हो सकती हैं iii- (ग) यह सच्चाई है कि जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है iv -(क) पदमैत्री एवं तुक का निर्वाह

v- (ग) पुरुषार्थ की महत्ता

(3)

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उसे
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
बाहर दाने का टोटा है
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिये का डर है
यहाँ निद्र्वद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,

मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू जोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

i- कवि के अनुसार चिड़िया के लिए पिंजड़े के बाहर क्या कठिनाई है -
(क) पिंजड़े के बाहर आराम और मौज अधिक है
(ख) पिंजड़े के बाहर विस्तार अधिक है और हमेशा जीवन का संकट है
(ग) धरती दिखाई नहीं पड़ती है
(घ) लोग बहुत ही निर्मम होते हैं

ii- बाहर समुद्र, नदी, और झरना होते हुए भी चिड़िया को पानी के लिए क्यों भटकना पड़ेगा?
(क) इन पर पहरा होता है और उसे शिकारियों से भी बचना पड़ेगा इसलिए
(ख) समुद्र का पानी खारा होता है इसलिए
(ग) नदियों का पानी सूख गया है इसलिए
(घ) झरने का पानी पीने लायक नहीं होता इसलिए

iii- यहाँ चुग्गा मोटा है- इस पंक्ति में 'यहाँ' शब्द किसके लिए आया है?
(क) चिड़िया के लिए
(ख) धरती के लिए
(ग) पिंजड़े के लिए
(घ) शिकारी के लिए

iv- चिड़िया मुक्ति का गाना क्यों गाएगी?
(क) उसे सुविधाओं से अधिक आजादी प्रिय है
(ख) उसे सुविधाएँ पसंद हैं
(ग) उसे पिंजड़े में रहना पसंद है
(घ) इनमें से कोई नहीं

v- उक्त काव्यांश का उपयुक्त सारांश है-
(क) धरती और पिंजड़ा
(ख) चिड़िया का गीत
(ग) कवि की चिड़िया
(घ) आजादी महत्त्वपूर्ण है

उत्तर-

i-(ख) पिंजड़े के बाहर विस्तार अधिक है और हमेशा जीवन का संकट है ii-(क) इन पर पहरा होता है और उसे शिकारियों से भी बचना पड़ेगा इसलिए iii- (ग)पिंजड़े के लिए iv-(क)उसे सुविधाओं से अधिक आजादी प्रिय है v-(घ) आजादी महत्त्वपूर्ण है

अभिव्यक्ति और माध्यम

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए-

i- छापाखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है?

(क) जे एल बेयर्ड को

(ख) गुटेनबर्ग को

(ग) पं. जुगल किशोर को

(घ) जी मार्कोनी को

ii- उलटा पिरामिड शैली में-

(क) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे बाद में लिखा जाता है

(ख) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को मध्य में लिखा जाता है

(ग) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को नहीं लिखा जाता है

(घ) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है

iii- टेलीविज़न से संबंधित शब्द 'लाइव' का क्या अर्थ है?

(क) किसी खबर का सिनेमा हॉल से सीधा प्रसारण

(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

(ग) किसी खबर का स्टूडियो से सीधा प्रसारण

(घ) किसी खबर का रेडियो स्टेशन से सीधा प्रसारण

iv- संचार के किस माध्यम को श्रव्य और दृश्य माध्यम कहा जाता है-

(क) रेडियो

(ख) समाचार पत्र

(ग) टेलीविजन

(घ) दूरभाष यंत्र

v- किसी समाचार संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी कहलाता है-

(क) पूर्णकालिक पत्रकार

(ख) अंशकालिक पत्रकार

(ग) स्वतंत्र पत्रकार

(घ) इनमें से कोई नहीं

vi- समाचार के तत्वों में शामिल है-

(क) नवीनता

(ख) प्रभावकारिता,

(ग) निकटता

(घ) उक्त तीनों

vii- भारत में सबसे पहले छापाखाना कहाँ खुला?

(क) कोलकाता में

(ख) मुंबई में

(ग) दिल्ली में

(घ) गोवा में

viii- छह ककारों का प्रयोग होता है-

(क) उल्टा पिरामिड शैली में

(ख) टेलीविजन में

(ग) सिनेमा में

(घ) पत्रकारिता में

ix- ब्रेकिंग न्यूज़ का अर्थ है-

(क) कम शब्दों में तुरंत की महत्त्वपूर्ण घटना का प्रसारण

(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

(ग) अधिक शब्दों में कल की घटना का प्रसारण

(घ) किसी खबर का रेडियो स्टेशन से सीधा प्रसारण

x- राजनीति, अपराध, खेल, फ़िल्म व कृषि क्षेत्र के लिए संवाददाताओं के बीच रूचि एवं विशेज्ञता के आधार पर काम के बँटवारे को क्या कहते हैं?

(क) ताजा खबर

(ख) सीधा प्रसारण

(ग) बीट

(घ) पत्रकारिता

xi- स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है-

(क) किसी समाचार संगठन का नियमित एवं वेतनभोगी कर्मचारी

(ख) किसी समाचार संगठन का निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाला अनियमित कर्मचारी

(ग) किसी समाचार संगठन के लिए अपने लेख के लिए भुगतान पाने वाला पत्रकार

(घ) इनमें से 'क' और 'ख'

xii- कूटवाचन का अर्थ है-

(क) संचारक द्वारा संदेश के लिए प्रयोग की गई कूटभाषा को उसी अर्थ में समझना

(ख) प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश के लिए प्रयोग की गई कूटभाषा को उसी अर्थ में समझना

(ग) संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच तालमेल होना

(घ) 'क', 'ख' और 'ग'

xiii- किसी विशेष विषय पर विचार एवं गद्य प्रधान अभिव्यक्ति को क्या कहा जाता है?

(क) संपाकीय

(ख) समाचार

(ग) टिप्पणी

(घ) आलेख

xiv- इंट्रो, मुखड़ा और बाडी किसके महत्त्वपूर्ण भाग हैं-

(क) समाचार पत्र के

(ख) टेलीविजन के

(ग) उलटा पिरामिड शैली के

(घ) इंटरनेट के

xv- टेलीविज़न से संबंधित शब्द 'लाइव' का क्या अर्थ है?

(क) किसी खबर का सिनेमा हॉल से सीधा प्रसारण

(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

(ग) किसी खबर का स्टूडियो से सीधा प्रसारण

(घ) किसी खबर का रेडियो स्टेशन से सीधा प्रसारण

xvi- इंटरनेट पत्रकारिता का आशय है-

(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान

(ख) इंटरनेट पर वीडियो गेम का आदान-प्रदान

(ग) इंटरनेट पर पैसों का लेन-देन

(घ) इनमें से कोई नहीं

xvii- भारत में सबसे पहला समाचार पत्र कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ?

(क) 1835 ई. में गोवा से प्रकाशित हुआ

(ख) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी का 'बंगाल गजट' कोलकाता से प्रकाशित हुआ

(ग) 1826 ई. में कोलकाता से प्रकाशित हुआ

(घ) 1885 ई. में मुंबई से प्रकाशित हुआ

xviii- पत्रकारिता से क्या आशय है?

(क) अखबार, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के माध्यम से खबरों का संचार ही पत्रकारिता है

(ख) विविध क्षेत्रों से ख़बरों का संकलन करना पत्रकारिता कहलाती है

(ग) संवाददाताओं से प्राप्त ख़बरों में काट-छाँट करना ही पत्रकारिता है

(घ) उक्त तीनों सही हैं

xix- झूठी अफवाहों, सनसनीखेज मुद्दों को प्रमुखता देने वाली पत्रकारिता क्या कहलाती है?

(क) खोजी पत्रकारिता

(ख) पीत पत्रकारिता

(ग) वैकल्पिक पत्रकारिता

(घ) पेज थ्री पत्रकारिता

xx- निम्नलिखित में से मुद्रित माध्यम नहीं है?

(क) अखबार,

(ख) रेडियो

(ग) पुस्तक

(घ) बैनर

उत्तर-

i-(ख) गुटेनबर्ग को

ii-(घ) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है

iii-(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

iv-(ग) टेलीविजन

v-(क) पूर्णकालिक पत्रकार

vi-(घ) उक्त तीनों

vii-(घ) गोवा में

viii-(घ) पत्रकारिता में

ix-(क) कम शब्दों में तुरंत की महत्त्वपूर्ण घटना का प्रसारण

x-(ग) बीट

xi-(ग) किसी समाचार संगठन के लिए अपने लेख के लिए भुगतान पाने वाला पत्रकार

xii-(ख) प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश के लिए प्रयोग की गई कूटभाषा को उसी अर्थ में समझना

xiii-(घ) आलेख

xiv-(ग) उलटा पिरामिड शैली के

xv-(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

xvi-(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान

xvii-(ख) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी का 'बंगाल गजट' कोलकाता से प्रकाशित हुआ

xviii-(घ) उक्त तीनों

xix-(ख) पीत पत्रकारिता

xx-(ख) रेडियो

काव्य-खंड

आत्मपरिचय, दिन जल्दी जल्दी ढलता है - हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय- कविवर हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर सन 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1942-1952 ई० तक यहीं पर प्राध्यापक रहे। उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय , इंग्लैंड से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। अंग्रेजी कवि कीट्स पर उनका शोधकार्य बहुत चर्चित रहा। वे आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंद्ध रहे और फिर विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। उन्हें राज्यसभा के लिए भी मनोनीत किया गया। 1976 ई० में उन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया।

रचनाएँ- हरिवंश राय बच्चन की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. **काव्य-संग्रह**-मधुशाला (1935), मधुबाला (1938), मधुकलश (1938), निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल-अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ।
2. **आत्मकथा**-क्या भूलें क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक।
3. **अनुवाद**-हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ।
4. **डायरी**-प्रवासी की डायरी।

काव्यगत विशेषताएँ- बच्चन हालावाद के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। दोनों महायुद्धों के बीच मध्यवर्ग के विक्षुब्ध विकल मन को बच्चन ने वाणी दी। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की बजाय सीधी-सादी जीवंत भाषा और संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहजअनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से की है। यही विशेषता हिंदी काव्य-संसार में उनकी प्रसिद्ध का मूलाधार है। कवि ने अपनी अनुभूतियाँ सहज स्वाभाविक ढंग से कही हैं। इनकी भाषा आम व्यक्ति के निकट है। बच्चन का कवि-रूप सबसे विख्यात है उन्होंने कहानी , नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरीन आत्मकथा भी लिखी है। इनकी रचनाएँ ईमानदार आत्मस्वीकृति और प्रांजल शैली के कारण आज भी पठनीय हैं।

आत्मपरिचय

प्रतिपादय- कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता। क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है।

कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है- उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग , विरुद्धों का विरोधाभासमूलक सामंजस्य साधते-साधते ही वह बेखुदी , वह मस्ती, वह दीवानगी व्यक्तित्व में उत्तर आई है कि दुनिया का तलबगार नहीं हूँ। बाजार से गुजरा हूँ, खरीदार नहीं हूँ-

जैसा कुछ कहने का ठस्सा पैदा हुआ है। यह ठस्सा ही छायावादोत्तर गीतिकाव्य का प्राण है। किसी असंभव आदर्श की तलाश में सारी दुनियादारी ठुकराकर उस भाव से कि जैसे दुनिया से इन्हें कोई वास्ता ही नहीं है।

सार- कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है , फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। वह निरर्थक कल्पनाओं में विश्वास नहीं रखता क्योंकि यह संसार कभी भी किसी की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाया है। कवि सुख-दुख , यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक जैसा रहता है। यह संसार मिथ्या है , अत: यहाँ स्थायी वस्तु की कामना करना व्यर्थ है।

कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के जरिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता है। संसार उसे कवि कहता है , परंतु वह स्वयं को नया दीवाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों , द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

विशेष-

1. कवि ने स्वयं के निजी प्रेम को स्वीकार किया है।
2. संसार के स्वार्थी स्वभाव पर टिप्पणी की है।
3. 'स्नेह-सुरा' व 'साँसों के तार' में रूपक अलंकार है।
4. 'जग-जीवन', 'स्नेह-सुरा' में अनुप्रास अलंकार है।
5. खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।
6. 'किया करता हूँ', 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति में गीत की मस्ती है।
7. तत्सम शब्दावली की बहुलता है।
8. श्रृंगार रस की सरस अभिव्यक्ति हुई है।
9. 'मैं' शैली के प्रयोग से कविता का सौन्दर्य बढ़ गया।

एक गीत

प्रतिपादय- कवि ने 'निशा-निमंत्रण' से उद्धृत इस गीत में प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश की है। कवि का मानना है कि किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों में गति भर सकता है अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने को अभिशिप्त हो जाते हैं। प्रस्तुत गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है। प्रेम की तरंग ही मानव के जीवन में उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है। प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी-जल्दी बीता जा रहा है। इससे अपने प्रियजनों से मिलने की उमंग से कदमों में तेजी आती है तथा पक्षियों के पंखों में तेजी और गति आ जाती है। यदि जीवन में प्रेम न हो तो शिथिलता आ जाती है।

सार- कवि गीत का आशय स्पष्ट करते हुए कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती , वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है।

विशेष-

1. समय की गतिशीलता का यथार्थ चित्रण है।
2. कवि ने जीवन की क्षणभंगुरता व प्रेम की व्यग्रता को व्यक्त किया है।
3. 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्तिप्रकाश तथा 'मुझसे मिलने' में अनुप्रास अलंकार है।
4. भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है, जिसमें खड़ी बोली का प्रयोग है।
5. कविता में बिम्बों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
6. पथिक के प्रसंग में वीर, चिड़िया के प्रसंग में वात्सल्य और कवि (प्रेमी) के प्रसंग वियोग श्रृंगार रस की अनुभूति है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 कवि किस तरह का भार लेकर संसार में जीवन जी रहा है?

(क) प्रिय-मिलन की उत्कंठा का भार
(ख) स्वार्थ की पूर्ति का भार
(ग) लोगों से दूरी बनाकर रहने का भार
(घ) लोगों की भलाई का भार

प्र-2 कवि के अनुसार संसार अधूरा क्यों है?

(क) क्योंकि सांसारिक लोग प्रेम रहित जीवन जीते है
(ख) क्योंकि वे स्वार्थ के पीछे भागते हैं
(ग) क्योंकि उनमें घृणा का भाव है
(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-3 कवि किस ज्ञान को सीख रहा है?

(क) ज्ञानमय जीवन जीना
(ख) प्रेम को महत्त्व देना
(ग) सीखे हुए ज्ञान को भुलाना

(घ) लोक-लाज खोना

प्र-4 'शीतल वाणी में आग' होने का क्या आशय है?

(क) मधुर वचनों में क्रोध

(ख) कोमल वाणी में व्यंग्य

(ग) सहज स्वर में प्रेम

(घ) सरस स्वर में विरह की तीव्रता

प्र-5 कवि किस तरह का वेश धारण किए घूमता है?

(क) राजनेताओं सा

(ख) संन्यासियों सा

(ग) दीवानों सा

(घ) अभिनेताओं सा

प्र-6 दिन भर का थका होने पर भी पथिक जल्दी-जल्दी क्यों चलता है?

(क) पथिक के जीवन में अंधेरा है

(ख) उसकी मंजिल दिखाई पड़ रही है और रात होने वाली है

(ग) चिड़िया के बच्चे उसके साथ हैं

(घ) उसे अपने बच्चों की याद आ रही है

प्र-7 चिड़ियों के पंखों में तेजी आने का क्या कारण है?

(क) वे बहुत दूर चले गए हैं

(ख) उनके घोसलों में कोई नहीं है

(ग) चिड़ियों के बच्चे उड़ गए होंगे

(घ) बच्चे अपने माता-पिता के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे

प्र-8 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है- पंक्ति का क्या अर्थ है ?

(क) समय स्थिर है

(ख) समय गतिशील है

(ग) समय न तो स्थिर है और न ही गतिशील है

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-9 कवि में किस बात से निराशा है?

(क) उससे मिलने वाला कोई नहीं है

(ख) वह अपनी मंजिल से दूर है

(ग) चिड़ियों का दुःख देखकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-10 बच्चे प्रत्याशा में होंगे.... में कौन-सा रस है?

(क) वीर रस

(ख) संयोग श्रृंगार रस

(ग) करुण रस

(घ) वात्सल्य रस

उत्तर-

1-(घ) लोगों की भलाई का भार 2-(घ) उपर्युक्त सभी 3-(ग) सीखे हुए ज्ञान को भुलाना 4-(घ) सरस स्वर में विरह की तीव्रता 5-(ग) दीवानों सा 6-(ख) उसकी मंजिल दिखाई पड़ रही है और रात होने वाली है 7-(घ) बच्चे अपने माता-पिता के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे 8-(ख) समय गतिशील है 9-(क) उससे मिलने वाला कोई नहीं है 10- (घ) वात्सल्य रस

पतंग - आलोक धन्वा

जीवन परिचय- आलोक धन्वा सातवें-आठवें दशक के बहुचर्चित कवि हैं। इनका जन्म सन 1948 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था। इनकी साहित्य-सेवा के कारण इन्हें राहुल सम्मान मिला। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने इन्हें साहित्य सम्मान से सम्मानित किया। इन्हें बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान व पहल सम्मान से नवाजा गया। ये पिछले दो दशकों से देश के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहे हैं। इन्होंने जमशेदपुर में अध्ययन मंडलियों का संचालन किया और रंगकर्म तथा साहित्य पर कई राष्ट्रीय संस्थानों व विश्वविद्याल रचनाएँ-इनकी पहली कविता जनता का आदमी सन 1972 में प्रकाशित हुई। उसके बाद भागी हुई लड़कियाँ , ब्रूनो की बेटियाँ कविताओं से इन्हें प्रसिद्ध मिली। इनकी कविताओं का एकमात्र संग्रह सन 1998 में 'दुनिया रोज बनती है ' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

काव्यगत विशेषताएँ- कवि की 1972-73 में प्रकाशित कविताएँ हिंदी के अनेक गंभीर काव्य-प्रेमियों को जबानी याद रही हैं। आलोचकों का मानना है कि इनकी कविताओं के प्रभाव का अभी तक ठीक से मूल्यांकन नहीं किया गया है। इसी कारण शायद कवि ने अधिक लेखन नहीं किया। इनके काव्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण है। ये बाल मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते हैं। 'पतंग' कविता बालसुलभ इच्छाओं व उमंगों का सुंदर चित्रण है।

भाषा-शैली- कवि ने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। ये बिंबों का सुंदर प्रयोग करते हैं। इनकी भाषा सहज व सरल है। इन्होंने अलंकारों का सुंदर व कुशलता से प्रयोग किया है।

प्रतिपादय- 'पतंग' कविता कवि के 'दुनिया रोज बनती है' व्यंग्य संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं और उमंगों का सुंदर चित्रण किया है। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होंने सुंदर बिंबों का उपयोग किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है जिसके जरिये वे आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं तथा उसके पार जाना चाहते हैं।

यह कविता बच्चों को एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है , जहाँ तितलियों की रंगीन दुनिया है, दिशाओं के मृदंग बजते हैं, जहाँ छतों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर भय पर विजय पाते बच्चे हैं जो गिरगिरकर सँभलते हैं तथा पृथ्वी का हर कोना खुद-ब-

खुद उनके पास आ जाता है। वे हर बार नई-नई पतंगों को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए औधेरे के बाद उजाले की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सार- कवि कहता है कि भादों के बरसते मौसम के बाद शरद ऋतु आ गई। इस मौसम में चमकीली धूप थी तथा उमंग का माहौल था। बच्चे पतंग उड़ाने के लिए इकट्ठे हो गए। मौसम साफ़ हो गया तथा आकाश मुलायम हो गया। बच्चे पतंगें उड़ाने लगे तथा सीटियाँ व किलकारियाँ मारने लगे। बच्चे भागते हुए ऐसे लगते हैं मानो उनके शरीर में कपास लगे हों। उनके कोमल नरम शरीर पर चोट व खरोंच अधिक असर नहीं डालती। उनके पैरों में बेचैनी होती है जिसके कारण वे सारी धरती को नापना चाहते हैं।

वे मकान की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं मानी छतें नरम हों। खेलते हुए उनका शरीर रोमांचित हो जाता है। इस रोमांच मैं वे गिरने से बच जाते हैं। बच्चे पतंग के साथ उड़ते-से लगते हैं। कभी-कभी वे छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर भी बच जाते हैं। इसके बाद इनमें साहस तथा आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

विशेष-

1. कवि ने बिंबात्मक शैली में शरद ऋतु का सुंदर चित्रण किया है।
2. बाल-सुलभ चेष्टाओं का अनूठा वर्णन है।
3. शरद ऋतु का मानवीकरण किया गया है।
4. उपमा, अनुप्रास, श्लेष, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का सुंदर प्रयोग है।
5. खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
6. लक्षणा शब्द-शक्ति का प्रयोग है।
7. मिश्रित शब्दावली है।
8. मुक्त छंद का प्रयोग है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 पतंग कविता में किस ऋतु का मनोहारी चित्रण है?

(क) बसंत ऋतु का
(ख) शीत ऋतु का
(ग) शरद ऋतु का
(घ) ग्रीष्म ऋतु का

प्र-2 पतंग के माध्यम से कवि ने क्या चित्रित क्या है?

(क) बाल-सुलभ उमंगों एवं चेष्टाओं का
(ख) वर्षा ऋतु की घनघोर बारिश का
(ग) धरती के जीव-जंतुओं का
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-3 पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास- पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा

(ख) मानवीकरण

(ग) अनुप्रास

(घ) रूपक

प्र-4 खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा- पंक्ति में कौन-सा बिम्ब है?

(क) श्रव्य बिम्ब

(ख) स्पर्श बिम्ब

(ग) दृश्य बिम्ब

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-5 बच्चों के शरीर का लचीलापन किसकी तरह है?

(क) इन्द्रधनुष की तरह

(ख) कपास की तरह

(ग) जलधारा की तरह

(घ) पेड़ की डाल की तरह

उत्तर-

1-(ग) शरद ऋतु का 2-(क) बाल-सुलभ उमंगों एवं चेष्टाओं का 3- (ख) रूपक 4-(ग) दृश्य बिम्ब 5-(घ) पेड़ की डाल की तरह

कविता के बहाने - कुँवर नारायण

कवि परिचय - कुँवर नारायण आधुनिक हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 19 सितंबर, सन 1927 को फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से पूरी की। कुँवर नारायण ने सन 1950 के आस-पास काव्य-लेखन की शुरुआत की। इन्होंने चिंतनपरक लेख, कहानियाँ सिनेमा और अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं। इन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है ; जैसे-कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा केरल का कुमारन आशान पुरस्कार आदि।

रचनाएँ- कुँवर नारायण का 'तीसरे सप्तक' के कवियों में प्रमुख स्थान है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. काव्य-संग्रह- चक्रव्यूह, परिवेश : हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों।
2. प्रबंध-काव्य-आत्मजयी।
3. कहानी-संग्रह-आकारों के आस-पास।
4. समीक्षा-आज और आज से पहले।
5. सामान्य—मेरे साक्षात्कार।

काव्यगत विशेषताएँ- कुँवर नारायण ने कविता को अपने सृजन कर्म में हमेशा प्राथमिकता दी। आलोचकों का मानना है कि उनकी कविता में व्यर्थ का उलझाव , अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध की बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है। कुँवर नारायण नगरीय संवेदना के कवि हैं। इनके यहाँ विवरण बहुत कम हैं, परंतु वैयक्तिक तथा सामाजिक ऊहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता में सामने आता है। भाषा और विषय की विविधता इनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं। इनमें यथार्थ का खुरदरापन भी मिलता है और उसका सहज सौंदर्य भी। सीधी घोषणाएँ और फैसले इनकी कविताओं में नहीं मिलते क्योंकि जीवन को मुकम्मल तौर पर समझने वाला एक खुलापन इनके कवि-स्वभाव की मूल विशेषता है।

प्रतिपादय- 'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता , कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है।

सार- 'कविता के बहाने' कविता एक यात्रा है जो चिड़िया और फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो , भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

विशेष–

1. कविता की रचनात्मक व्यापकता को प्रकट किया गया है।
2. 'बच्चा ही जाने' पंक्ति से बालमन की सरलता की अभिव्यक्ति होती है।
3. चिड़िया क्या जाने?- में प्रश्न अलंकार है।
4. कविता का मानवीकरण किया गया है।
5. कविता में लाक्षणिकता तथा शांत रस विद्यमान है
6. मुक्त छंद से युक्त पंक्तियों में सरल एवं सहज खड़ीबोली भावानुकूल है।
7. मुरझाए महकने - में अनुप्रास अलंकार तथा 'फूल क्या जाने?" में प्रश्न अलंकार है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'कविता के बहाने' कविता के रचनाकार का नाम बताइए?

(क) महादेवी वर्मा
(ख) रघुवीर सहाय
(ग) कुँवर नारायण
(घ) धर्मवीर भारती

प्र-2 'कविता की उड़ान' का क्या आशय है?

(क) कविता में कल्पनाओं एवं भावनाओं की उड़ान का असीमित होना

(ख) चिड़िया की उड़ान का सीमित होना

(ग) चिड़िया की उड़ान का असीमित होना

(घ) कविता में कल्पनाओं एवं भावनाओं की उड़ान का सीमित होना

प्र-3 'बिना मुरझाए महकने के माने' पंक्ति से किसकी ओर संकेत है?

(क) फूल के मुरझाने की ओर

(ख) कविता के मुरझाने की ओर

(ग) कविता के शाश्वत होने की ओर

(घ) फूल के खिलने की क्षमता की ओर

प्र-4 कविता में किसके खेल की चर्चा की गई है?

(क) क्रिकेट के खेल की

(ख) गिल्ली-डंडे के खेल की

(ग) रंगों के खेल की

(घ) बच्चों के खेल की

प्र-5 बच्चों के खेल की क्या विशेषता है?

(क) उनके खेल में नवीनता और एकजुटता होती है

(ख) वे सदैव एकाकी होकर खेलते हैं

(ग) वे किसी दूसरे को अपने खेल में शामिल नहीं करते हैं

(घ) वे घर से दूर जाकर खेलते हैं

उत्तर- 1 (ग) कुँवर नारायण 2- (क) कविता में कल्पनाओं एवं भावनाओं की उड़ान का असीमित होना 3- (ग) कविता के शाश्वत होने की ओर 4- (घ) बच्चों के खेल की

5- (क) उनके खेल में नवीनता और एकजुटता होती है

प्रकरण- कैमरे में बंद अपाहिज - रघुवीर सहाय

कवि परिचय- रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि हैं। इनका जन्म लखनऊ (उ०प्र०) में सन् 1929 में हुआ था। इनकी संपूर्ण शिक्षा लखनऊ में ही हुई। वहीं से इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया। प्रारंभ में ये पेशे से पत्रकार थे। इन्होंने 'प्रतीक' अखबार में सहायक संपादक के रूप में काम किया। फिर ये आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे। कुछ समय तक हैदराबाद से निकलने वाली पत्रिका 'कल्पना' और उसके बाद 'दैनिक नवभारत टाइम्स' तथा 'दिनमान' से संबद्ध रहे। साहित्य-सेवा के कारण इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका देहावसान सन 1990 में दिल्ली में हुआ।

रचनाएँ- रघुवीर सहाय नई कविता के कवि हैं। इनकी कुछ आरंभिक कविताएँ अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरा सप्तक (1935) में प्रकाशित हुई। इनकी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं-

काव्य-संकलन- सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसी, लोग भूल गए हैं आदि।

काव्यगत विशेषताएँ- रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में आम आदमी की पीड़ा को बड़ी गहराई से व्यक्त किया है। ये साठोत्तरी काव्य-लेखन के सशक्त , प्रगतिशील व चेतना-संपन्न रचनाकार हैं। इन्होंने सड़क , चौराहा, दफ़्तर, अखबार, संसद, बस, रेल और बाजार की बेलौस भाषा में कविता लिखी। घर-मोहल्ले के चरित्रों पर कविता लिखकर उन्हें हमारी चेतना का स्थायी नागरिक बनाया। इन्होंने कविता को एक कहानीपन और नाटकीय वैभव दिया। रघुवीर सहाय ने बतौर पत्रकार और कवि घटनाओं में निहित विडंबना और त्रासदी को देखा। इन्होंने छोटे की महत्ता को स्वीकारा और उन लोगों व उनके अनुभवों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया जिन्हें समाज में हाशिए पर रखा जाता है। इन्होंने भारतीय समाज में ताकतवरों की बढ़ती हैसियत व सत्ता के खिलाफ़ भी साहित्य और पत्रकारिता के पाठकों का ध्यान खींचा। रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में अधिकतर बातचीत की सहज शैली में लिखा और सीधी, सरल तथा सधी भाषा का प्रयोग किया । ये अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते रहे हैं। इन्होंने कविताओं में अत्यंत साधारण तथा अनायास-सी प्रतीत होने वाली शैली में समाज की दारुण विडंबनाओं को व्यक्त किया है।

प्रतिपादय- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से संकलित है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है। किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए। किन्तु आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहीन हो जाता है। यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है। साथ ही उन सभी व्यक्तियों की तरफ इशारा करती है जो दुख-दर्द , यातना-वेदना आदि को बेचना चाहते हैं।

सार- इस कविता में दूरदर्शन (मीडिया) के लोग स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरे को कमजोर मानते हैं। वे शारीरिक चुनौती झेलने वाले से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं? तो आप अपाहिज क्यों हैं? क्या आपको इससे दुख होता है? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है। प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है। इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है। प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जगा सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है , परंतु 'परदे पर वक्त की कीमत है' वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है।

विशेष -

1. कवि ने क्षीण होती मानवीय संवेदना का चित्रण किया है।
2. मीडिया की मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।
3. दूरदर्शन के कार्यक्रम निर्माताओं पर करारा व्यंग्य है।
4. काव्यांश में नाटकीयता है।
5. सरल एवं भावानुकूल खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
6. व्यंजना शब्द-शक्ति का प्रयोग किया गया है।
7. 'परदे पर' तथा 'बहुत बड़ी' में अनुप्रास अलंकार है।
8. कविता में मुक्तक छंद का प्रयोग है। कोष्ठकों का प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता के रचनाकार का नाम बताइए?

(क) महादेवी वर्मा

(ख) रघुवीर सहाय

(ग) कुँवर नारायण

(घ) धर्मवीर भारती

प्र-2 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता में मीडिया के किस माध्यम का उल्लेख है?

(क) रेडियो

(ख) समाचारपत्र

(ग) इंटरनेट

(घ) टेलीविजन

प्र-3 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता में कार्यक्रम प्रस्तोता किससे सवाल करता है?

(क) कैमरामैन से

(ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज से

(ग) दर्शकों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 'परदे पर वक्त कीमत है'- इसका सही आशय क्या होगा?

(क) टेलीविजन पर सबको मौका मिलता है

(ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज को अवसर दिया जाता है

(ग) टेलीविजन पर कोई भी दिखाया जा सकता है

(घ) टेलीविजन पर सिर्फ नामी-गिरामी लोगों को ही अवसर मिलता है

प्र-5 बस थोड़ी ही कसर रह गयी - इस पंक्ति का क्या मतलब है?

(क) कार्यक्रम समाप्त हो गया

(ख) कार्यक्रम फिर से दिखाया जाएगा

(ग) कार्यक्रम अधूरा रह गया

(घ) कार्यक्रम अभी शुरू नहीं हुआ

उत्तर-1- (ख) रघुवीर सहाय 2-(घ) टेलीविजन 3- (ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज से 4- (घ) टेलीविजन पर सिर्फ नामी-गिरामी लोगों को ही अवसर मिलता है 5 -(ग) कार्यक्रम अधूरा रह गया

उषा - शमशेर बहादुर सिंह

जीवन परिचय- नई कविता के कवियों में शमशेर बहादुर सिंह की एक अलग छवि है। इनका जन्म 13 जनवरी, सन 1911 को देहरादून में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा देहरादून में ही हुई। इन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। चित्रकला में इनकी रुचि प्रारंभ से ही थी। इन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार

उकील बंधुओं से चित्रकारी में प्रशिक्षण लिया। इन्होंने सुमित्रानंदन पंत के पत्र 'रूपाभ' में कार्य किया। 1977 ई. में 'चुका भी हूँ नहीं मैं ' काव्य-संग्रह पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। इन्हें कबीर सम्मान सहित अनेक पुरस्कार मिले। सन 1993 में अहमदाबाद में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ- शमशेर बहादुर सिंह ने अनेक विधाओं में रचना की। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कवितासंग्रह– कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ नहीं मैं, इतने पास अपने

संपादन-उर्दू-हिंदी कोश

निबंध-संग्रह-दोआब

कहानी-संग्रह-प्लाट का मोर्चा

काव्यगत विशेषताएँ- वैचारिक रूप से प्रगतिशील एवं शिल्पगत रूप से प्रयोगधर्मी कवि शमशेर को एक बिंबधर्मी कवि के रूप में जाना जाता है। इनकी बिंबधर्मिता शब्दों में माध्यम से रंग , रेखा, एवं सूची की अद्भुत कशीदाकारी का माद्दा रखती है। इन्होंने अपनी कविताओं में समाज की यथार्थ स्थिति का भी चित्रण किया है। ये समाज में व्याप्त गरीबी का चित्रण करते हैं। कवि ने प्रकृति के सौंदर्य का सुंदर वर्णन किया है। प्रकृति के नजदीक रहने के कारण इनके प्राकृतिक चित्र अत्यंत जीवंत लगते हैं। 'उषा' कविता में प्रात:कालीन वातावरण का सजीव चित्रण है। शमशेर की कविता एक संधिस्थल पर खड़ी है। यह संधि एक ओर साहित्य, चित्रकला और संगीत की है तो दूसरी ओर मूर्तता और अमूर्तता की तथा ऐंद्रिय और ऐंद्रियेतर की है।

भाषा-शैली- शमशेर बहादुर सिंह ने साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। कथा और शिल्प-दोनों ही स्तरों पर इनकी कविता का मिजाज अलग है। उर्दू शायरी के प्रभाव से संज्ञा और विशेषण से अधिक बल सर्वनामों, क्रियाओं, अव्ययों और मुहावरों को दिया है। सचेत इंद्रियों का यह कवि जब प्रेम , पीड़ा, संघर्ष और सृजन को गूँथकर कविता का महल बनाता है तो वह ठोस तो होता ही है, अनुगूंजों से भी भरा होता है।

प्रतिपाद्य- प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द-चित्र उकेरा है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है। कवि भोर की आसमानी गति की धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है। इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है जो गाँव की सुबह से जुड़ता है-वहाँ सिल है , राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ हैं। कवि ने नए बिंब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है।

सारांश- कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंखकी नीली आभा से युक्त दिखाई देता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल पर किसी ने केसर मल कर उसे धो दिया हो या किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक से लिखकर उसे मिटा दिया हो।

नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में स्नान करती हुई किसी गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा है। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

विशेष-

1-कवि ने इस कविता में प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है।
2-ग्रामीण परिवेश की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की गई है जिसमें दृश्य सजीव हो उठा है।
3-कवि ने उषा का सुंदर दृश्य बिंब प्रस्तुत किया है।
4-प्रकृति के उपादानों का मनोरम चित्रण हुआ है।
5-सरल, सहज खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।
6-नए उपमानों का प्रयोग किया गया है।
7-'शंख जैसे' में उपमा अलंकार है।
8-पूरे काव्यांश में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
9-मुक्तक छंद का प्रयोग है।
10नए बिंबों व उपमानों का प्रयोग है।
11-कविता में माधुर्य गुण विद्यमान है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 कवि ने भोर के नभ के सौन्दर्य की तुलना के लिए किन किन उपमानों को चुना है?

(ङ) नीली आभा से युक्त शंख
(च) राख से लीपा चौका
(छ) काली सिल पर केसर का मलना
(ज) उपर्युक्त सभी

प्र-2 राख से लीपा हुआ चौका अभी गीला पड़ा है- से भोर के नभ की किस विशेषता का पता चलता है?

(क) नमी और सौंधापन
(ख) गरम और भुरभुरापन
(ग) ठंडा और फीकापन
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-3 गौर झिलमिल देह प्रकृति के किस उपादान की है?

(क) धरती
(ख) चन्द्रमा
(ग) सूर्य
(घ) जंगल

प्र-4 उषा कविता में किस जीवन शैली को चित्रित किया गया है?

(क) शहरी जीवन शैली
(ख) ग्रामीण जीवन शैली
(ग) कस्बाई जीवन शैली

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-5 भोर के नभ का सौन्दर्य कब विनष्ट हो जाता है?

(क) सूर्योदय से पहले

(ख) सूर्योदय के दौरान

(ग) सूर्योदय के बाद

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-

1-(घ) उपर्युक्त सभी 2-(क) नमी और सौंधापन 3-(ग) सूर्य 4-(ख) ग्रामीण जीवन शैली
5- सूर्योदय के बाद

कवितावली (उत्तर कांड से), लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप (लंका कांड) - तुलसीदास

जीवन परिचय- गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन 1532 में हुआ था। कुछ लोग इनका जन्म-स्थान सोरों मानते हैं। इनका बचपन कष्ट में बीता। बचपन में ही इन्हें माता-पिता का वियोग सहना पड़ा। गुरु नरहरिदास की कृपा से इनको रामभक्ति का मार्ग मिला। इनका विवाह रत्नावली नामक युवती से हुआ। कहते हैं कि रत्नावली की फटकार से ही वे वैरागी बनकर रामभक्ति में लीन हो गए थे। विरक्त होकर ये काशी , चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थों पर भ्रमण करते रहे। इनका निधन काशी में सन 1623 में हुआ।

रचनाएँ- गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
रामचरितमानस, कवितावली, रामलला नहछु, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, रामाज्ञा-प्रश्न, कृष्ण गीतावली, पार्वती–मंगल, जानकी-मंगल, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदीपनी। इनमें से 'रामचरितमानस' एक महाकाव्य है। 'कवितावली' में रामकथा कवित्त व सवैया छंदों में रचित है। 'विनयपत्रिका' में स्तुति के गेय पद हैं।

काव्यगत विशेषताएँ- गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि हैं। ये लोकमंगल की साधना के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह तथ्य न सिर्फ़ उनकी काव्य-संवेदना की दृष्टि से , वरन काव्यभाषा के घटकों की दृष्टि से भी सत्य है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि शास्त्रीय भाषा (संस्कृत) में सर्जन-क्षमता होने के बावजूद इन्होंने लोकभाषा (अवधी व ब्रजभाषा) को साहित्य की रचना का माध्यम बनाया। तुलसीदास में जीवन व जगत की व्यापक अनुभूति और मार्मिक प्रसंगों की अचूक समझ है। यह विशेषता उन्हें महाकवि बनाती है। 'रामचरितमानस' में प्रकृति व जीवन के विविध भावपूर्ण चित्र हैं जिसके कारण यह हिंदी का अनुपम महाकाव्य बनकर उभरा है। इसकी लोकप्रियता का कारण लोक-संवेदना और समाज की नैतिक बनावट की समझ है। इनके सीता-राम ईश्वर की अपेक्षा तुलसी के देशकाल के आदर्शों के अनुरूप मानवीय धरातल पर पुनः सृष्ट चरित्र हैं।

भाषा-शैली- गोस्वामी तुलसीदास अपने समय में हिंदी-क्षेत्र में प्रचलित सारे भावात्मक तथा काव्यभाषायी तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें भाव-विचार , काव्यरूप, छंद तथा काव्यभाषा की बहुल समृद्ध मिलती है। ये अवधी तथा ब्रजभाषा की संस्कृति कथाओं में सीताराम और राधाकृष्ण की कथाओं को साधिकार अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं। उपमा अलंकार के क्षेत्र में जो प्रयोग-वैशिष्ट्य कालिदास की पहचान है, वही पहचान सांगरूपक के क्षेत्र में तुलसीदास की है।

सारांश-1 पहले कवित्त में कवि ने पेट की आग को सबसे बड़ा बताया है। मनुष्य सारे काम इसी आग को बुझाने के उद्देश्य से करते हैं चाहे वह व्यापार , खेती, नौकरी, नाच-गाना, चोरी, गुप्तचरी, सेवा-टहल, गुणगान, शिकार करना या जंगलों में घूमना हो। इस पेट की आग को बुझाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। यह पेट की आग समुद्र की बड़वानल से भी बड़ी है। अब केवल रामरूपी घनश्याम ही इस आग को बुझा सकते हैं।

दूसरे कवित्त में कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारी को भीख नहीं मिलती , व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वह राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।

सवैये में कवि ने भक्त की गहनता और सघनता में उपजे भक्त-हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया है। वे कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे , अवधूत या जोगी कहे , कोई राजपूत या जुलाहा कहे, किंतु मैं किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करने वाला और न किसी की जाति बिगाड़ने वाला हूँ। मैं तो केवल अपने प्रभु राम का गुलाम हूँ। जिसे जो अच्छा लगे , वही कहे। मैं माँगकर खा सकता हूँ तथा मस्जिद में सो सकता हूँ किंतु मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सब प्रकार से भगवान राम को समर्पित हूँ।

सारांश-2 युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम की सेना में हाहाकार मच गया। सब वानर सेनापति इकट्ठे हुए तथा लक्ष्मण को बचाने के उपाय सोचने लगे। सुषेण वैद्य के परामर्श पर हनुमान हिमालय से संजीवनी बूटी लाने के लिए चल पड़े। लक्ष्मण को गोद में लिटाकर राम व्याकुलता से हनुमान की प्रतीक्षा करने लगे। आधी रात बीत जाने के बाद राम अत्यधिक व्याकुल हो गए। वे विलाप करने लगे कि तुम मुझे कभी भी दुखी नहीं देख पाते थे। मेरे लिए ही तुमने वनवास स्वीकार किया। अब वह प्रेम मुझसे कौन करेगा? यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पता होता तो मैं तुम्हें कभी साथ नहीं लाता। संसार में सब कुछ दुबारा मिल सकता है , परंतु सहोदर भाई नहीं।

तुम्हारे बिना मेरा जीवन पंखरहित पक्षी के समान है। अयोध्या जाकर मैं क्या जवाब दूँगा ? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को गवा आया। तुम्हारी माँ को मैं क्या जवाब दूँगा ? तभी हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए। वैद्य ने दवा बनाकर लक्ष्मण को पिलाई और उनकी मूच्छी ठीक हो गई। राम ने उन्हें गले से लगा लिया। वानर सेना में उत्साह आ गया। रावण को यह समाचार मिला तो उसने परेशान होकर कुंभकरण को उठाया। कुंभकरण ने जगाने का कारण पूछा तो रावण ने सीता के हरण से युद्ध तक की सारी बात बताई तथा बड़े-बड़े वीरों के मारे जाने की बात कही। कुंभकरण ने रावण को बुरा-भला कहा और कहा कि तुमने साक्षात ईश्वर से वैर लिया है और अब अपना कल्याण चाहते हो! राम साक्षात हरि तथा सीता जी जगदंबा हैं। उनसे वैर लेना कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

विशेष-1 कवि ने समाज में भूख की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। पेट की आग बुझाने के लिए मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कार्यों का प्रभावपूर्ण वर्णन है। तत्कालीन समाज की बेरोजगारी व अकाल की भयावह स्थिति का चित्रण है। तत्सम शब्दावली की प्रधानता है। ब्रजभाषा का लालित्य विद्यमान है। राम घनश्याम' में रूपक अलंकार है। 'किसबी किसान-कुल', 'चाकर चपल', 'बेचत बेटा-बेटकी' आदि में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। अभिधा शब्द-शक्ति है।
भगवान श्रीराम के प्रति तुलसीदास की भक्ति भावना प्रकट हुई है। वह समाज की मनोवृत्ति से बहुत दुखी है। समाज में समन्वय स्थापित करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। कवि का दास्यभक्ति भाव चित्रित है। ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग है। सवैया छंद में सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' मुहावरे का सशक्त प्रयोग है। अनुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है।

विशेष-2 श्रीराम के मानवीय रूप एवं उनके विलाप का मार्मिक वर्णन है। प्रस्तुत प्रसंग में राम का भ्रातृ-प्रेम प्रशंसनीय है। करुण रस की प्रधानता है। सरल और सहज अवधी भाषा का प्रयोग है। दोहा, चौपाई और सोरठा छंद का सुंदर प्रयोग है। अनुप्रास , उत्प्रेक्षा तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। 'सिर धुनना' व 'मुख सूखना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 संसार के सभी लोग तरह-तरह के काम किसलिए करते हैं?

(ङ) मनोरंजन करने के लिए
(च) पेट की भूख शांत करने के लिए
(छ) शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए
(ज) दूसरों से आगे बढ़ने के लिए

प्र-2 कवि के अनुसार पेट की भूख का शमन किसकी कृपा से हो सकता है?

(क) प्रभु श्री विष्णु की कृपा से
(ख) भगवान श्री कृष्ण की कृपा से

(ग) प्रभु श्रीराम की कृपा से

(घ) श्री ब्रह्मा जी की कृपा से

प्र-3 जीविकोपार्जन से विहीन लोग किस चिंता में डूबे हैं?

(क) कोई दूसरा व्यवसाय नहीं है

(ख) नगर छोड़कर कहाँ जाएँ

(ग) राजा ने कोई प्रबंध नहीं किया है

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-4 कवि के अनुसार संकट की घड़ी में कौन सभी पर कृपा करके दुःख दूर करते हैं?

(क) भगवान श्रीकृष्ण

(ख) प्रभु श्रीराम

(ग) श्री हरि विष्णु

(घ) भगवान शिव

प्र-5 भक्त कवि तुलसीदास का स्वाभिमान क्या है?

(क) ऊँचे कुल का होना

(ख) उच्च कुल में बेटे की शादी करना

(ग) प्रभु श्रीराम का परम भक्त होना

(घ) भिक्षा माँगकर भोजन करना

प्र-6 प्रभु श्रीराम की आज्ञा पाकर हनुमानजी क्या लेने के चल पड़ते हैं?

(क) संजीवनी बूटी

(ख) हिमालय पर्वत

(ग) गंगाजल

(घ) कठोर शिला

प्र-7 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' में किस रस की प्रमुखता है?

(क) वीर रस

(ख) शांत रस

(ग) हास्य रस

(घ) करुण रस

प्र-8 मुर्च्छित पड़े लक्ष्मण के बिना श्रीराम का जीवन किस तरह है?

(क) मणिहीन सर्प के समान

(ख) सूड़विहीन हाथी के समान

(ग) पख रहित पक्षी के समान

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र-9 'मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता' यह कथन किसका है?

(क) लक्ष्मण का

(ख) श्रीराम का

(ग) रावण का

(घ) विभीषण का

प्र-10 जागने के बाद कुंभकरण कैसा दिखाई दे रहा था ?

(क) साक्षात् मौत की तरह

(ख) राक्षस की तरह

(ग) मनुष्य की तरह

(घ) वानर की तरह

उत्तर- 1-(ख) पेट की भूख शांत करने के लिए 2- (ग) प्रभु श्रीराम की कृपा से 3-(घ) उपर्युक्त सभी 4-(ख) प्रभु श्रीराम 5-(ग) प्रभु श्रीराम का परम भक्त होना 6-(क) संजीवनी बूटी 7-(घ) करुण रस 8-(घ) उपर्युक्त सभी 9-(ख) श्रीराम का 10-(घ) वानर की तरह

छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी

जीवन परिचय- गुजराती कविता के सशक्त हस्ताक्षर उमाशंकर जोशी का जन्म 1911 ई० में गुजरात में हुआ था। 20वीं सदी में इन्होंने गुजराती साहित्य को नए आयाम दिए। इनको परंपरा का गहरा ज्ञान था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा , आम जिंदगी के अनुभव से परिचय कराया और नयी शैली दी। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए। इनका देहावसान सन 1988 में हुआ।

रचनाएँ- उमाशंकर जोशी का साहित्यिक अवदान पूरे भारतीय साहित्य के लिए महत्वपूर्ण है। इन्होंने एकांकी, निबंध, कहानी, उपन्यास, संपादन व अनुवाद आदि पर अपनी लेखनी सफलतापूर्वक चलाई। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

एकांकी- विश्व-शांति, गंगोत्री, निशीथ, प्राचीना, आतिथ्य, वसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा आदि।

कहानी- सापनाभारा, शहीद।

उपन्यास- श्रावणी मेणी, विसामो।

निबंध- पारकांजव्या ।

संपादन- गोष्ठी, उघाड़ीबारी, क्लांत कवि, म्हारा सॉनेट, स्वप्नप्रयाण तथा 'संस्कृति' पत्रिका का संपादन।

अनुवाद- अभिज्ञान शाकुंतलम् व उत्तररामचरित का गुजराती भाषा में अनुवाद।

काव्यगत विशेषताएँ- उमाशंकर जोशी ने गुजराती कविता को नया स्वर व नयी भंगिमा प्रदान की। इन्होंने जीवन के सामान्य प्रसंगों पर आम बोलचाल की भाषा में कविता लिखी। इनका साहित्य की विविध विधाओं में योगदान बहुमूल्य है। हालाँकि निबंधकार के रूप में ये गुजराती साहित्य में बेजोड़ माने

जाते हैं। जोशी जी की काव्य-भाषा सरल है। इन्होंने मानवतावाद, सौंदर्य व प्रकृति के चित्रण पर अपनी कलम चलाई है। इन्होंने कविता के माध्यम से शब्दचित्र प्रस्तुत किए हैं।

छोटा मेरा खेत - इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंतत: कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज से पुष्पितपल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

विशेष-

1- कवि ने कल्पना के माध्यम से रचना-कर्म की गहराई को व्यक्त किया है।
2- कवि ने खेती व कविता की तुलना सूक्ष्म ढंग से की है।
3- 'पल्लव-पुष्प', 'गल गया' में अनुप्रास अलंकार है।
4- 'रस' शब्द के अर्थ हैं-काव्य रस और फल का रस। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है
5- तत्सम शब्दावलीयुक्त खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।
6- दृश्य बिंब का सुंदर उदाहरण है।
7- प्रतीकात्मकता का समावेश है। कवि-कर्म का सुंदर वर्णन है।
8- कविता का आनंद शाश्वत है।
9- 'छोटा मेरा खेत चौकाना' में रूपक अलंकार है।

बगुलों के पंख- यह कविता सुंदर दृश्य बिंबयुक्त कविता है जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के ब्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। इस नयनाभिराम दृश्य में कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता है , लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

विशेष-

1- कवि ने प्रकृति के उपादानों का मनोरम चित्रण किया है।
2- पंक्तिबध्द होकर उड़ते जा रहे बगुलों केदृश्य का मनोहारी वर्णन हुआ है।
3- 'हौले-हौले' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
4- 'आँखें चुराना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।
5- साहित्यिक खड़ी बोली है।
6- बिंब-योजना का सुंदर प्रयोग है।
7- कोमलकांत पदावली का प्रयोग है। जैसे-पाँती बँधे, हौले-हौले, बगुलों की पाँखें।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 कविता में कवि-कर्म की तुलना किससे की गई है?
(क) शिल्प-कर्म से
(ख) लौह-कर्म से
(ग) कृषि-कर्म से
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-2 कवि कागज़ के एक पन्ने को किस रूप में देखता है?
(क) चौकोर खेत के रूप में
(ख) आयताकार आकृति के रूप में
(ग) हरे-भरे बाग के रूप में
(घ) निश्छल भावनाओं के रूप में

प्र-3 'कोई अंधड़ कहीं से आया' - पंक्ति में **'अंधड़'** से क्या संकेत किया गया है?
(क) चौकोर खेत के रूप में
(ख) विचारों एवं भावनाओं की आँधी
(ग) आँधी और बारिश
(घ) गरम हवाओं की आँधी

प्र-4 'शब्द के अंकुर फूटे' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(क) उपमा
(ख) अनुप्रास
(ग) यमक
(घ) रूपक

प्र-5 'झूमने लगे फल' इसमें क्या अर्थ निहित है?
(क) कवि की रचना तैयार हो जाती है
(ख) किसान की फसल पक जाती है
(ग) चित्रकार का चित्र बन जाता है

(घ) शिल्पी का शिल्प सामने आ जाता है

प्र-6 रस का अक्षय पात्र किसे कहा गया है?

(क) फ़सल को

(ख) खेत को

(ग) साहित्य को

(घ) फल को

प्र-7 आसमान में बगुले किस तरह उड़ते जा रहे हैं?

(क) अलग-थलग होकर

(ख) सब एक झुंड में

(ग) पंक्तिबध्द होकर

(घ) वृत्ताकार रूप में

प्र-8 पंक्तिबध्द होकर उड़ते जा रहे बगुलों के दृश्य में कौन-सा बिम्ब है?

(क) गतिशील बिम्ब

(ख) स्थिर बिम्ब

(ग) स्पर्श बिम्ब

(घ) श्रव्य बिम्ब

प्र-9 उड़ते जा रहे बगुलों को देखकर कवि पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क) कवि एक टक उन्हें देखता रहा

(ख) कवि उन्हें पकड़ना चाह रहा था

(ग) कवि स्वयं उड़ रहा था

(घ) कवि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा

प्र-10 'बगुलों के पंख' कविता के रचनाकार का नाम बताइए।

(क) शिवमंगल सिंह सुमन

(ख) शमशेर बहादुर सिंह

(ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(घ) उमाशंकर जोशी

उत्तर-

1-(ग) कृषि-कर्म से 2-(क) चौकोर खेत के रूप में 3-(ख) विचारों एवं भावनाओं की आँधी 4-(घ) रूपक 5-(क) कवि की रचना तैयार हो जाती है 6-(ग) 7-(ग) पंक्तिबध्द होकर 8-(क) गतिशील बिम्ब 9-(क) कवि एक टक उन्हें देखता रहा 10- उमाशंकर जोशी

गद्य-खंड

भक्तिन - महादेवी वर्मा

प्रतिपादय- 'भक्तिन' महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो **'स्मृति की रेखाएँ'** में संकलित है। इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का दिलचस्प खाका खींचा है। महादेवी के घर में काम शुरू करने से पहले उसने कैसे एक संघर्षशील , स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन जिया , कैसे पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती रही और हारकर कैसे ज़िंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुँची, इसका संवेदनशील चित्रण लेखिका ने किया है। साथ ही , भक्तिन लेखिका के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखाई पड़ती है , जिसके कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए आयाम उद्घाटित होते हैं। इसी कारण अपने व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं।

सारांश- लेखिका कहती है कि भक्तिन का कद छोटा व शरीर दुबला था। उसके होंठ पतले थे। वह गले में कंठी-माला पहनती थी। उसका नाम लक्ष्मी था , परंतु उसने लेखिका से यह नाम प्रयोग न करने की प्रार्थना की। उसकी कंठी-माला को देखकर लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रख दिया। सेवा-धर्म में वह हनुमान से स्पर्द्धा करती थी। उसके अतीत के बारे में यही पता चलता है कि वह ऐतिहासिक झूसी के गाँव के प्रसिद्ध अहीर की इकलौती बेटी थी। उसका लालन-पालन उसकी सौतेली माँ ने किया। पाँच वर्ष की उम्र में इसका विवाह हंडिया गाँव के एक गोपालक के पुत्र के साथ कर दिया गया था। नौ वर्ष की उम्र में गौना हो गया। भक्तिन की विमाता ने उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से भेजा। सास ने रोने -पीटने के अपशकुन से बचने के लिए उसे पीहर यह कहकर भेज दिया कि वह बहुत दिनों से गई नहीं है। मायके जाने पर विमाता के दुर्व्यवहार तथा पिता की मृत्यु से व्यथित होकर वह बिना पानी पिए ही घर वापस चली आई। घर आकर सास को खरी-खोटी सुनाई तथा पति के ऊपर गहने फेंककर अपनी व्यथा व्यक्त की। भक्तिन को जीवन के दूसरे भाग में भी सुख नहीं मिला। उसके लगातार तीन लड़कियाँ पैदा हुई तो सास व जेठानियों ने उसकी उपेक्षा करनी शुरू कर दी। इसका कारण यह था कि सास के तीन कमाऊ बेटे थे तथा जेठानियों के काले-काले पुत्र थे। जेठानियाँ बैठकर खातीं तथा घर का सारा काम-चक्की चलाना , कूटना, पीसना, खाना बनाना आदि कार्य-भक्तिन करती। छोटी लड़कियाँ गोबर उठातीं तथा कंडे थापती थीं। खाने के मामले में भी भेदभाव था। जेठानियाँ और उनके लड़कों को भात पर सफेद राब , दूध व मलाई मिलती तथा भक्तिन को काले गुड़ की डली, मट्ठा तथा लड़कियों को चने-बाजरे की घुघरी मिलती थी। इस पूरे प्रकरण में भक्तिन के पति का व्यवहार अच्छा था। उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था।

पति-प्रेम के बल पर ही वह परिवार से अलग हो गई। अलग होते समय अपने ज्ञान के कारण उसे गाय-भैंस, खेत, खलिहान, अमराई के पेड़ आदि ठीक-ठाक मिल गए। परिश्रम के कारण घर में समृद्ध आ गई। पति ने बड़ी लड़की का विवाह धूमधाम से किया। इसके बाद वह दो कन्याओं को छोड़कर चल बसा। इस समय भक्तिन की आयु 29 वर्ष की थी। उसकी संपत्ति देखकर परिवार वालों के मुँह में पानी आ गया। उन्होंने दूसरे विवाह का प्रस्ताव किया तो भक्तिन ने स्पष्ट मना कर दिया। उसने केश कटवा दिए तथा गुरु से मंत्र लेकर कंठी बाँध ली। उसने दोनों लड़कियों की शादी कर दी और पति के चुने दामाद को घर-जमाई बनाकर रखा। जीवन के तीसरे परिच्छेद में दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसकी लड़की भी विधवा हो गई। परिवार वालों की दृष्टि उसकी संपत्ति पर थी। उसका जेठ अपनी विधवा बहन के विवाह के

लिए अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया क्योंकि उसका विवाह हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता।

भक्तिन की लड़की ने उस तीतरबाज वर को नापसंद कर दिया। माँ-बेटी मन लगाकर अपनी संपत्ति की देखभाल करने लगीं। एक दिन भक्तिन की अनुपस्थिति में उस तीतरबाज वर ने बेटी की कोठरी में घुसकर भीतर से दरवाजा बंद कर लिया और उसके समर्थक गाँव वालों को बुलाने लगे। लड़की ने उसकी खूब मरम्मत की तो पंच समस्या में पड़ गए। अंत में पंचायत ने कलियुग को इस समस्या का कारण बताया और अपीलहीन फैसला हुआ कि दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा। अपमानित बालिका व माँ विवश थीं। यह संबंध सुखकर नहीं था। दामाद निश्चित होकर तीतर लड़ाता था , जिसकी वजह से पारिवारिक द्वेष इस कदर बढ़ गया कि लगान अदा करना भी मुश्किल हो गया। लगान न पहुँचने के कारण जमींदार ने भक्तिन को कड़ी धूप में खड़ा कर दिया।

यह अपमान वह सहन न कर सकी और कमाई के विचार से शहर चली आई। जीवन के अंतिम परिच्छेद में, घुटी हुई चाँद, मैली धोती तथा गले में कंठी पहने वह लेखिका के पास नौकरी के लिए पहुँची और उसने रोटी बनाना, दाल बनाना आदि काम जानने का दावा किया। नौकरी मिलने पर उसने अगले दिन स्नान करके लेखिका की धुली धोती भी जल के छींटों से पवित्र करने के बाद पहनी। निकलते सूर्य व पीपल को अर्घ दिया। दो मिनट जप किया और कोयले की मोटी रेखा से चौके की सीमा निर्धारित करके खाना बनाना शुरू किया। भक्तिन छूत-पाक को मानने वाली थी। लेखिका ने समझौता करना उचित समझा। भोजन के समय भक्तिन ने लेखिका को दाल के साथ मोटी काली चित्तीदार चार रोटियाँ परोसीं तो लेखिका ने टोका। उसने अपना तर्क दिया कि अच्छी सेंकने के प्रयास में रोटियाँ अधिक कड़ी हो गई। उसने सब्जी न बनाकर दाल बना दी। इस खाने पर प्रश्नवाचक दृष्टि होने पर वह अमचूरण, लाल मिर्च की चटनी या गाँव से लाए गुड़ का प्रस्ताव रखा।

भक्तिन के लेक्चर के कारण लेखिका रूखी दाल से एक मोटी रोटी खाकर विश्वविद्यालय पहुँची और न्यायसूत्र पढ़ते हुए शहर और देहात के जीवन के अंतर पर विचार करने लगी। गिरते स्वास्थ्य व परिवार वालों की चिंता निवारण के लिए लेखिका ने खाने के लिए अलग व्यवस्था की , किंतु इस देहाती वृद्धा की सरलता से वह इतना प्रभावित हुई कि वह अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी। भक्तिन स्वयं को बदल नहीं सकती थी। वह दूसरों को अपने मन के अनुकूल बनाने की इच्छा रखती थी। लेखिका देहाती बन गई, परंतु भक्तिन को शहर की हवा नहीं लगी। उसने लेखिका को ग्रामीण खाना-खाना सिखा दिया , परंतु स्वयं 'रसगुल्ला' भी नहीं खाया। उसने लेखिका को अपनी भाषा की अनेक दंतकथाएँ कंठस्थ करा दीं , परंतु खुद 'आँय' के स्थान पर 'जी' कहना नहीं सीखा। भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था। वह इधर-उधर पड़े पैसों को किसी मटकी में छिपाकर रख देती थी जिसे वह बुरा नहीं मानती थी। पूछने पर वह कहती कि यह उसका अपना घर ठहरा , पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा , सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! अपनी मालकिन को खुश करने के लिए वह बात को बदल भी देती थी। वह अपनी बातों को शास्त्र-सम्मत मानती थी। वह अपने तर्क देती थी। लेखिका ने उसे सिर घुटाने से रोका तो उसने **'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध'** कहकर अपने कार्य को शास्त्र-सिद्ध बताया। वह स्वयं पढ़ी-लिखी नहीं थी। अब वह हस्ताक्षर करना भी सीखना नहीं चाहती थी। उसका तर्क था कि उसकी मालकिन दिन-रात किताब पढ़ती है। यदि वह भी पढ़ने लगे तो घर के काम कौन करेगा। भक्तिन अपनी मालकिन को असाधारणता का दर्जा देती थी। इसी से वह अपना महत्व साबित कर सकती थी। उत्तर-पुस्तिका के निरीक्षण-कार्य में लेखिका का किसी ने सहयोग नहीं दिया। इसलिए वह कहती फिरती थी कि उसकी मालकिन जैसा कार्य कोई नहीं जानता। वह

स्वयं सहायता करती थी। कभी उत्तर-पुस्तिकाओं को बाँधकर, कभी अधूरे चित्र को कोने में रखकर, कभी रंग की प्याली धोकर और कभी चटाई को आँचल से झाड़कर वह जो सहायता करती थी उससे भक्तिन का अन्य व्यक्तियों से अधिक बुद्धिमान होना प्रमाणित हो जाता है। लेखिका की किसी पुस्तक के प्रकाशन होने पर उसे प्रसन्नता होती थी। उस कृति में वह अपना सहयोग खोजती थी। लेखिका भी उसकी आभारी थी क्योंकि जब वह बार-बार के आग्रह के बाद भी भोजन के लिए न उठकर चित्र बनाती रहती थी , तब भक्तिन कभी दही का शरबत अथवा कभी तुलसी की चाय पिलाकर उसे भूख के कष्ट से बचाती थी।

भक्तिन में गजब का सेवा-भाव था। छात्रावास की रोशनी बुझने पर जब लेखिका के परिवार के सदस्य-हिरनी सोना, कुत्ता बसंत, बिल्ली गोधूलि भी-आराम करने लगते थे, तब भी भक्तिन लेखिका के साथ जागती रहती थी। वह उसे कभी पुस्तक देती , कभी स्याही तो कभी फ़ाइल देती थी। भक्तिन लेखिका के जागने से पहले जागती थी तथा लेखिका के बाद सोती थी। बदरी-केदार के पहाड़ी तंग रास्तों पर वह लेखिका से आगे चलती थी, परंतु गाँव की धूलभरी पगडंडी पर उसके पीछे रहती थी। लेखिका भक्तिन को छाया के समान समझती थी। युद्ध के समय लोग डरे हुए थे , उस समय वह बेटी-दामाद के आग्रह पर लेखिका के साथ रहती थी। युद्ध में भारतीय सेना के पलायन की बात सुनकर वह लेखिका को अपने गाँव ले जाना चाहती थी। वहाँ वह लेखिका के लिए हर तरह के प्रबंध करने का आश्वासन देती थी। वह अपनी पूँजी को भी दाँव पर लगाने के लिए तैयार थी। लेखिका का मानना है कि उनके बीच स्वामी-सेवक का संबंध नहीं था।

इसका कारण यह था कि वह उसे इच्छा होने पर भी हटा नहीं सकती थी और भक्तिन चले जाने का आदेश पाकर भी हँसकर टाल रही थी। वह उसे नौकर भी नहीं मानती थी। भक्तिन लेखिका के जीवन को घेरे हुए थी। भक्तिन छात्रावास की बालिकाओं के लिए चाय बना देती थी। वह उन्हें लेखिका के नाश्ते का स्वाद भी लेने देती थी। वह लेखिका के परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से भी परिचित थी। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा लेखिका करती थी। वह उन्हें आकार -प्रकार, वेश-भूषा या नाम के अपभ्रंश द्वारा जानती थी। कवियों के प्रति उसके मन में विशेष आदर नहीं था, परंतु दूसरे के दुख से वह कातर हो उठती थी। किसी विद्यार्थी के जेल जाने पर वह व्यथित हो उठती थी। वह कारागार से डरती थी , परंतु लेखिका के जेल जाने पर खुद भी उनके साथ चलने का हठ किया। अपनी मालकिन के साथ जेल जाने के हक के लिए वह बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार थी। भक्तिन का अंतिम परिच्छेद चालू है लेकिन लेखिका इसे पूरा नहीं करना चाहती।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था?

(क) लक्ष्मी

(ख) भक्तिन

(ग) लछमिन

(घ) कोकिला

प्र-2 भक्तिन किससे डरती थी?

(क) लेखिका से

(ख) रसोईघर से

(ग) बड़े साहब से

(घ) कारागार से

प्र-3 खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया है?

(क) लेखिका को

(ख) लछमिन को

(ग) सेविका को

(घ) भक्तिन के पति को

प्र-4 लेखिका ने लछमिन का नाम भक्तिन क्या देख कर रखा?

(क) गले में पड़ी कंठी माला देखकर

(ख) उसकी वृद्धावस्था देखकर

(ग) उसका सेवा-भाव देखकर

(घ) धर्म के प्रति उसकी आस्था देखकर

प्र-5 लेखिका भक्तिन की कहानी को अधूरी क्यों छोड़ती है?

(क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए

(ख) भक्तिन के झूठ बोलने को देखकर

(ग) पढ़े-लिखों की गुरु बन जाने के कारण

(घ) लेखिका को हमेशा मदद मिले

प्र-6 पति की मृत्यु के समय भक्तिन की उम्र कितनी थी?

(क) 29 वर्ष

(ख) 25 वर्ष

(ग) 30 वर्ष

(घ) 27 वर्ष

प्र-7 भक्तिन अपने पति को क्या संबोधन कर याद करती थी?

(क) सेवक

(ख) बुढ़ऊ

(ग) जिठैत

(घ) मालिक

प्र-8 इस पाठ में सेवक धर्म में भक्तिन की तुलना किससे की गई है?

(क) लेखिका से

(ख) माता अंजना से

(ग) हनुमान जी से

(घ) नौकर से

प्र-9 लगान न चुका पाने के कारण भक्तिन को क्या सजा मिली?

(क) उसे लेखिका के यहाँ काम करना पड़ा

(ख) उसे बगीचे की रखवाली करनी पड़ी

(ग) उसे खेत में पानी लगाना पड़ा

(घ) उसे दिन भर धूप में खड़ा रहना पड़ा

प्र-10 'सिर घुटाना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

(क) सिर में तेल लगवाना

(ख) सिर के बाल उतरवाना

(ग) सिर के बल खड़ा होना

(घ) शीर्षासन करना

उत्तर-

1-(ग) लछमिन 2-(घ) कारागार से 3-(ख) लछमिन को 4-(क) गले में पड़ी कंठी माला देखकर 5-(क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए 6-(क) 29 वर्ष 7-(ख) बुढ़ऊ 8-(ग) हनुमान जी से 9-(घ) उसे दिन भर धूप में खड़ा रहना पड़ा 10-(ख) सिर के बाल उतरवाना

बाजार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार

प्रतिपादय– 'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। जैनेंद्र जी अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज में तो कहीं किस्सागोई की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में इन्होंने केवल बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

सारांश- लेखक अपने मित्र की कहानी बताता है कि एक बार वे बाजार में मामूली चीज लेने गए , परंतु वापस बंडलों के साथ लौटे। लेखक के पूछने पर उन्होंने पत्नी को दोषी बताया। लेखक के अनुसार, पुराने समय से पति इस विषय पर पत्नी की ओट लेते हैं। इसमें मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी भी विशेष भूमिका अदा करता है। पैसा पावर है , परंतु उसे प्रदर्शित करने के लिए बैंक-बैलेंस , मकान-कोठी आदि इकट्ठा किया जाता है। पैसे की पर्चेजिंग पावर के प्रयोग से पावर का रस मिलता है। लोग संयमी भी होते हैं। वे पैसे को जोड़ते रहते हैं तथा पैसे के जुड़ा होने पर स्वयं को गर्वीला महसूस करते हैं। मित्र ने बताया कि सारा पैसा खर्च हो गया। मित्र की अधिकतर खरीद पर्चेजिंग पावर के अनुपात से आई थी , न कि जरूरत के हिसाब से। लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। यह आकर्षण ऐसा होता है कि बेहया ही हो जो इसमें नहीं फँसता। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण में आग्रह नहीं है। ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष, तृष्णा व ईष्या से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

लेखक का दूसरा मित्र दोपहर से पहले बाजार गया तथा शाम को खाली हाथ वापस आ गया। पूछने पर बताया कि बाजार में सब कुछ लेने योग्य था , परंतु कुछ भी न ले पाया। एक वस्तु लेने का मतलब था, दूसरी छोड़ देना। अगर अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं। सब चीजें खरीदने का मन करता है।

जादू उतरते ही फैंसी चीजें आराम नहीं , खलल ही डालती प्रतीत होती हैं। इससे स्वाभिमान व अभिमान बढ़ता है। जादू से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली न रखो। मन में लक्ष्य हो तो बाजार आनंद देगा। वह आपसे कृतार्थ होगा। बाजार की असली कृतार्थता है-आवश्यकता के समय काम आना। मन खाली रखने का मतलब मन बंद नहीं करना है। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। मनुष्य अपूर्ण है। मनुष्य इच्छाओं का निरोध नहीं कर सकता। यह लोभ को जीतना नहीं है , बल्कि लोभ की जीत है। मन को बलात बंद करना हठयोग है। वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अत: मन की भी सुननी चाहिए क्योंकि वह भी उद्देश्यपूर्ण है। मनमानेपन को छूट नहीं देनी चाहिए।

लेखक के पड़ोस में भगत जी रहते थे। वे लंबे समय से चूरन बेच रहे थे। चूरन उनका सरनाम था। वे प्रतिदिन छह आने पैसे से अधिक नहीं कमाते थे। वे अपना चूरन थोक व्यापारी को नहीं देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। छह आने पूरे होने पर वे बचा चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे। वे सदा स्वस्थ रहते थे।उन पर बाजार का जादू नहीं चल सकता था। वे निरक्षर थे। बड़ी-बड़ी बातें जानते नहीं थे। उनका मन अडिग रहता था। पैसा भीख माँगता है कि मुझे लो। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है, परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

लेखक कहता है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। एक दिन बाजार के चौक में भगत जी व लेखक की राम-राम हुई। उनकी आँखें खुली थीं। वे सबसे मिलकर बात करते हुए जा रहे थे। लेकिन वे भौचक्के नहीं थे और ना ही वे किसी प्रकार से लाचार थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा था किंतु उनको मात्र अपनी जरूरत की चीज से मतलब था। वे रास्ते के फैंसी स्टोरों को छोड़कर पंसारी की दुकान से अपने काम की चीजें लेकर चल पड़ते हैं। अब उन्हें बाजार शून्य लगता है। फिर चाँदनी बिछी रहती हो या बाजार के आकर्षण बुलाते रहें, वे उसका कल्याण ही चाहते हैं।

लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता वह मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार को व्यंग्य दे जाते हैं, वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ये कपट को बढ़ाते हैं जिससे सद्भाव घटता है। सद्भाव नष्ट होने से ग्राहक और बेचक रह जाते हैं। वे एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। ऐसे बाजारों में व्यापार नहीं , शोषण होता है। कपट सफल हो जाता है तथा बाजार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है , वह अर्थशास्त्र सरासर औधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 बाजार के जादू का प्रभाव कब अधिक पड़ता है?

(क) जब ग्राहक का मन भरा होता है

(ख) जब ग्राहक का मन खाली होता है

(ग) जब ग्राहक खुश होता है

(घ) जब ग्राहक दुखी होता है

प्र-2 बाजार के जादू के प्रभाव से बचने का सबसे सरल उपाय क्या है?

(क) जब मन खाली हो तब बाजार जाओ

(ख) जब मन भरा हो तब बाजार न जाओ

(ग) जब मन खाली हो तब बाजार न जाओ

(घ) जब मन दुखी हो तब बाजार मत जाओ

प्र-3 बाजार का आमंत्रण कैसा होता है?

(क) मूक (मौन) और चाह जगाने वाला

(ख) मन को शांत कर देने वाला

(ग) मन में विराग पैदा करने वाला

(घ) दुकानदार को लाभ पहुँचाने वाला

प्र-4 बाजार को सार्थकता कौन देता है?

(क) जो लोग बाजार से कुछ नहीं खरीदते हैं

(ख) जो यह जानते हैं कि उन्हें बाजार से क्या खरीदना है

(ग) जो यह नहीं जानते हैं कि उन्हें क्या खरीदना चाहिए

(घ) जो बाजार जाकर सब कुछ खरीदना चाहते हैं

प्र-5 लेखक ने बाजार के जादू की तुलना किससे की है?

(क) चुंबक के जादू से

(ख) लोहे के जादू से

(ग) हाथ के जादू से

(घ) दूकान के जादू से

प्र-6 लेखक के दूसरे मित्र ने बाजार से क्या खरीदा?

(क) ढेर सारा सामान

(ख) केवल एक सामान

(ग) केवल दो सामान

(घ) कुछ भी नहीं

प्र-7 लोग बाजार से सामान किस हिसाब से खरीदते हैं?

(क) अपनी कमजोरी छिपाने के हिसाब से

(ख) पर्चेजिंग पावर के हिसाब से

(ग) दूसरों को दिखाने के हिसाब से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-8 मन को किस बात की छूट नहीं मिलनी चाहिए?

(क) मनन करने की

(ख) हिसाब लगाने की

(ग) चक्कर खाने की

(घ) मनमानी करने की

प्र-9 छह आने की कमाई होने के बाद भगत जी चूरन का क्या करते थे?

(क) अगले दिन के लिए रख लेते थे

(ख) बच्चों में मुफ़्त बाँट देते थे

(ग) दुकान पर दे देते थे

(घ) कूड़ेदान में फेंक देते थे

प्र-10 बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को लेखक ने क्या नाम दिया है?

(क) दर्शनशास्त्र

(ख) राजनीति शास्त्र

(ग) अनीतिशास्त्र

(घ) ज्योतिष शास्त्र

उत्तर-

1-(ख) जब ग्राहक का मन खाली होता है 2-(ग) जब मन खाली हो तब बाजार न जाओ 3-(क) मूक (मौन) और चाह जगाने वाला 4-(ख) जो यह जानते हैं कि उन्हें बाजार से क्या खरीदना है
5-(क) चुंबक के जादू से 6-(घ) कुछ भी नहीं 7-(ख) पर्चेजिंग पावर के हिसाब से 8-(घ) मनमानी करने की 9-(ख) बच्चों में मुफ़्त बाँट देते थे 10-(ग) अनीतिशास्त्र

1. –काले मेघा पानी दे - धर्मवीर भारती

प्रतिपादय- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किया गया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामर्थ्य। इनकी सार्थकता के विषय में शिक्षित वर्ग असमंजस में है। लेखक ने इसी दुविधा को लेकर पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका है। ऐसे में खेती व अन्य कार्यों के लिए पानी न हो तो जीवन चुनौतियों का घर बन जाता है। यदि विज्ञान इन चुनौतियों का निराकरण नहीं कर पाता तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज किसी-न-किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

सारांश- लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लंगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय ' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती हैं। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं-

काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे, गगरी फूटी बैल पियासा, काले मेधा पानी दे।

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर 'पानी' की पुकार लगाती थी तो घरों में सहेजकर रखे पानी से इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते तथा कीचड़ में लथपथ हो जाते। यह वह समय होता था जब हर जगह लोग गरमी में भुनकर त्राहि-त्राहि करने लगते थे; कुएँ सूखने लगते थे; नलों में बहुत कम पानी आता था, खेतों की मिट्टी में पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती थी। लू के कारण व्यक्ति बेहोश होने लगते थे। पशु पानी की कमी से मरने लगते थे, लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता था। जब पूजा-पाठ आदि विफल हो जाती थी तो इंदर सेना अंतिम उपाय के तौर पर निकलती थी और इंद्र देवता से पानी की माँग करती थी। लेखक को यह समझ में नहीं आता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग घरों में कठिनाई से इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों

फेंकते थे। इस प्रकार के अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है। अगर यह सेना इंद्र की है तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती ? ऐसे पाखंडों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए।

लेखक स्वयं मेढक-मंडली वालों की उमर का था। वह आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था। उसमें समाजसुधार का जोश ज्यादा था। उसे सबसे ज्यादा मुश्किल अपनी जीजी से थी जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों , तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं। जिन अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था। वे ये सब कार्य लेखक को पुण्य मिलने के लिए करवाती थीं। जीजी लेखक से इंदर सेना पर पानी फेंकवाने का काम करवाना चाहती थीं। उसने साफ़ मना कर दिया। जीजी ने काँपते हाथों व डगमगाते पाँवों से इंदर सेना पर पानी फेंका। लेखक जीजी से मुँह फुलाए रहा। शाम को उसने जीजी की दी हुई लड्डू-मठरी भी नहीं खाई। पहले उन्होंने गुस्सा दिखाया, फिर उसे गोद में लेकर समझाया। उन्होंने कहा कि यह अंधविश्वास नहीं है।

यदि हम पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे। यह पानी की बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य है। दान में देने पर ही इच्छित वस्तु मिलती है। ऋषियों ने दान को महान बताया है। बिना त्याग के दान नहीं होता। करोड़पति दो-चार रुपये दान में दे दे तो वह त्याग नहीं होता। त्याग वह है जो अपनी जरूरत की चीज को जनकल्याण के लिए दे। ऐसे ही दान का फल मिलता है। लेखक जीजी के तर्कों के आगे पस्त हो गया। फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। जीजी ने फिर समझाया कि तू बहुत पढ़ गया है। वह अभी भी अनपढ़ है। किसान भी तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ बोता है। इसी तरह हम अपने घर का पानी इन पर फेंककर बुवाई करते हैं। इसी से शहर , कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं।

ऋषि-मुनियों ने भी यह कहा है कि पहले खुद दो , तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे। यह आदमी का आचरण है जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सच नहीं है। गाँधी जी महाराज भी यही कहते हैं। लेखक कहता है कि यह बात पचास साल पुरानी होने के बावजूद आज भी उसके मन पर दर्ज है। अनेक संदर्भों में ये बातें मन को कचोटती हैं कि हम देश के लिए क्या करते हैं ? हर क्षेत्र में माँगें बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। आज स्वार्थ एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, परंतु खुद अपनी जाँच नहीं करते। काले मेघ उमड़ते हैं, पानी बरसता है, परंतु गगरी फूटी की फूटी रह जाती है। बैल प्यासे ही रह जाते हैं। यह स्थिति कब बदलेगी, यह कोई नहीं जानता?

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 लोग बच्चों की टोली को इन्दर सेना या फिर ----------कहते थे?

(क) गायक मंडली

(ख) सेवक मंडली

(ग) मेढ़क मंडली

(घ) वादक मंडली

प्र-2 लेखक बच्चों की टोली में क्यों नहीं शामिल था?

(क) लेखक पानी फेंकने को अन्धविश्वास मानता था

(ख) लेखक को कीचड़ पसंद नहीं था

(ग) इस टोली को लोग गालियाँ देते थे

(घ) जीजी उसे मना करती थीं

प्र-3 लेखक जीजी की हर बात मानता था क्योंकि-

(क) जीजी उसे बहुत मानती थीं और उनके प्राण लेखक में बसते थे

(ख) जीजी अन्धविश्वासी थीं

(ग) जीजी उसे खाने के लिए लड्डू-मठरी देती थीं

(घ) जीजी उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाया करती थीं

प्र-4 जीजी ने अपनी बात कौन-सा उदाहरण देकर सही साबित किया?

(क) किसान और उसकी खेती का

(ख) इंद्र और उसकी सेना का

(ग) बच्चों की टोली का

(घ) पूज-पाठ और धर्म-कर्म का

प्र-5 अंत में लेखक को जीजी की बात कैसी लगी?

(क) फालतू और अतार्किक

(ख) अन्धविश्वास से पूर्ण

(ग) सही और तार्किक

(घ) किसान के पक्ष में

प्र-6 लेखक समाज की किस कुरीति को खत्म करना चाहता था?

(क) अपराध

(ख) भ्रष्टाचार

(ग) अंधविश्वास

(घ) चोरी-डकैती

प्र-7 लेखक बचपन में कुमार-सुधार सभा में किस पद पर था?

(क) सेनापति

(ख) रक्षा मंत्री

(ग) सिपाही

(घ) उपमंत्री

प्र-8 किसान तीस-चालीस मन गेहूँ की फ़सल पाने के लिए क्या करता है?

(क) खेत की रखवाली

(ख) खेतों में पानी देता है

(ग) पशुओं को चारा खिलाता है

(घ) पाँच-छह सेर गेहूँ बोता है

प्र-9 ऋषि-मुनियों ने जीवन में किस आचरण को अधिक महत्व दिया है?

(क) पहले खुद दो तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे

(ख) पहले अपना भला देखना चाहिए

(ग) दूसरों का ध्यान नहीं रखना चाहिए

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-10 लेखक के अनुसार गाँधी जी किस बात को सच नहीं मानते थे?

(क) त्याग और आदर्श

(ख) यथा प्रजा तथा राजा

(ग) यथा राजा तथा प्रजा

(घ) चरित्र और संयम

उत्तर-

1 (ग) मेढ़क मंडली 2 (क) लेखक पानी फेंकने को अन्धविश्वास मानता था 3 (क) जीजी उसे बहुत मानती थीं और उनके प्राण लेखक में बसते थे 4 (क) किसान और उसकी खेती का 5 (ग) सही और तार्किक 6 (ग) अंधविश्वास 7 (घ) उपमंत्री 8 (घ) पाँच-छह सेर गेहूँ बोता है 9 (क) पहले खुद दो तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे 10 (ग) यथा राजा तथा प्रजा

पहलवान की ढोलक - फणीश्वर नाथ रेणु

प्रतिपाद्य- 'पहलवान की ढोलक' फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित एक श्रेष्ठ कहानी है। फणीश्वर एक आंचलिक कथाकार माने जाते हैं। प्रस्तुत कहानी उनकी एक आंचलिक कहानी है , जिसमें उन्होंने भारत पर इंडिया के छा जाने की समस्या को प्रतीकात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है। यह व्यवस्था बदलने के साथ लोक कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। यह कहानी हमारे समक्ष व्यवस्था की पोल खोलती है। साथ ही व्यवस्था के कारण लोक कलाओं के लुप्त होने की ओर संकेत भी करती है तथा हमारे सामने ऐसे । अनेक प्रश्न पैदा करती है कि यह सब क्यों हो रहा है ? प्रस्तुत कहानी की भाषा सरल, सरस व स्वाभाविक बोलचाल की है। इसमें तत्सम , तद्भव, उर्दू, फ़ारसी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से इनकी भाषा में रोचकता उत्पन्न हो गई है।

सारांश- श्यामनगर के समीप का एक गाँव सरदी के मौसम में मलेरिया और हैजे से ग्रस्त था। चारों ओर सन्नाटे से युक्त बाँस-फूस की झोंपड़ियाँ खड़ी थीं। रात्रि में घना अंधेरा छाया हुआ था। चारों ओर करुण सिसकियों और कराहने की आवाजें गूंज रही थीं। सियारों और पेचक की भयानक आवाजें इस सन्नाटे को बीच-बीच में अवश्य थोड़ा-सा तोड़ रही थीं। इस भयंकर सन्नाटे में कुत्ते समूह बाँधकर रो रहे थे। रात्रि भीषणता और सन्नाटे से युक्त थी, लेकिन लुट्टन पहलवान की ढोलक इस भीषणता को तोड़ने का प्रयास कर रही थी। इसी पहलवान की ढोलक की आवाज इस भीषण सन्नाटे से युक्त मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरा करती थी।

लुट्टन सिंह के माता-पिता नौ वर्ष की अवस्था में ही उसे छोड़कर चले गए थे। उसकी बचपन में शादी हो चुकी थी, इसलिए विधवा सास ने ही उसका पालन-पोषण किया। ससुराल में पलते-बढ़ते वह पहलवान बन गया था। एक बार श्यामनगर में एक मेला लगा। मेले के दंगल में लुट्टन सिंह ने एक प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दे डाली , जो शेर के बच्चे के नाम से जाना जाता था। श्यामनगर के राजा ने बहुत कहने के बाद ही लुट्टन सिंह को उस पहलवान के साथ लड़ने की आज्ञा दी, क्योंकि वह एक बहुत प्रसिद्ध पहलवान था।

लुट्टन सिंह ने ढोलक की 'धिना-धिना, धिकधिना', आवाज से प्रेरित होकर चाँद सिंह पहलवान को बड़ी मेहनत के बाद चित कर दिया। चाँद सिंह के हारने के बाद लुट्टन सिंह की जय-जयकार होने लगी और वह लुट्टन सिंह पहलवान के नाम से प्रसिद्ध हो गया। राजा ने उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसे अपने दरबार में रख लिया। अब लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। लुट्टन सिंह पहलवान की पत्नी भी दो पुत्रों को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गई थी।

लट्टन सिंह अपने दोनों बेटों को भी पहलवान बनाना चाहता था ,इसलिए वह बचपन से ही उन्हें कसरत आदि करवाने लग गया। उसने बेटों को दंगल की संस्कृति का पूरा ज्ञान दिया। लेकिन दुर्भाग्य से एक दिन उसके वयोवृद्ध राजा का स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात विलायत से नए महाराज आए। राज्य की गद्दी संभालते ही नए राजा साहब ने अनेक परिवर्तन कर दिए।

दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। बेचारे लुट्टन सिंह पहलवान पर कुठाराघात हुआ। वह हतप्रभ रह गया। राजा के इस रवैये को देखकर लुट्टन सिंह अपनी ढोलक कंधे में लटकाकर बच्चों सहित अपने गाँव वापस लौट आया। वह गाँव के एक किनारे पर झोपड़ी में रहता हुआ नौजवानों और चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। गाँव के किसान व खेतिहर मजदूर भला क्या कुश्ती सीखते।

अचानक गाँव में अनावृष्टि अनाज की कमी, मलेरिया, हैजे आदि भयंकर समस्याओं का वज्रपात हुआ। चारों ओर लोग भूख, हैजे और मलेरिये से मरने लगे। सारे गाँव में तबाही मच गई। लोग इस त्रासदी से इतना डर गए कि सूर्यास्त होते ही अपनी-अपनी झोंपडियों में घुस जाते थे। रात्रि की विभीषिका और सन्नाटे को केवल लट्टन सिंह पहलवान की ढोलक की तान ही ललकारकर चुनौती देती थी। यही तान इस भीषण समय में धैर्य प्रदान करती थी। यही तान शक्तिहीन गाँववालों में संजीवनी शक्ति भरने का कार्य करती थी। पहलवान के दोनों बेटे भी इसी भीषण विभीषिका के शिकार हुए। प्रातः होते ही पहलवान ने अपने दोनों बेटों को निस्तेज पाया। बाद में वह अशांत मन से दोनों को उठाकर नदी में बहा आया। लोग इस बात को सुनकर दंग रह गए। इस असह्य वेदना और त्रासदी से भी पहलवान नहीं टूटा। एक दिन गाँव वालों को लुट्टन पहलवान की ढोलक रात में नहीं सुनाई दी। सुबह उसके कुछ शिष्यों ने जाकर देखा तो पहलवान की लाश चित्त पड़ी हुई थी।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोपड़ियों में किसका साम्राज्य था?

(क) भूतों का

(ख) अंधकार और सन्नाटे का

(ग) रात का

(घ) हवा का

प्र-2 किस जानवर में परिस्थितियों को ताड़ने की विशेष बुद्धि होती है?

(क) बिल्ली

(ख) उल्लू

(ग) कुत्ता

(घ) सियार

प्र-3 मृत गाँव में किसकी आवाज संजीवनी शक्ति भरती रहती थी?

(क) कुत्तों की

(ख) पेचक की

(ग) पहलवान की ढोलक की

(घ) सियारों की

प्र-4 लुट्टन का पालन-पोषण किसने किया?

(क) राजा श्यामानंद ने

(ख) उसकी विधवा सास ने

(ग) गाँव वालों ने

(घ) उसके शिष्यों ने

प्र-5 श्याम नगर के दंगल में लुट्टन ने किसको चुनौती दी?

(क) चाँद सिंह को

(ख) बादल सिंह को

(ग) श्याम सिंह को

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-6 चाँद सिंह के गुरु का क्या नाम था?

(क) काला खां

(ख) पहलवान काका

(ग) श्याम सिंह

(घ) बादल सिंह

प्र-7 लुट्टन पहलवान कितने वर्ष तक राज दरबार का अजेय पहलवान बना रहा?

(क) दस वर्ष तक

(ख) बीस वर्ष तक

(ग) पंद्रह वर्ष तक

(घ) पचीस वर्ष तक

प्र-8 "जीते रहो बहादुर! तुमने मिट्टी की लाज रख ली"- यह कथन किसका है?

(क) चाँद सिंह का

(ख) बादल सिंह का

(ग) लुट्टन सिंह का

(घ) राजा श्यामानंद का

प्र-9 'पहलवान की ढोलक' कहानी किस प्रकार की कहानी है?

(क) राजनीतिक

(ख) आंचलिक

(ग) सामाजिक

(घ) उपदेशात्मक

प्र-10 राजा की मृत्यु के बाद कुश्ती के स्थान पर किस खेल ने जगह ले ली?

(क) घोड़ों की रेस

(ख) कबड्डी

(ग) फुटबाल

(घ) शतरंज

उत्तर- 1-(ख) अंधकार और सन्नाटे का 2-(ग) कुत्ता 3-(ग) पहलवान की ढोलक की 4-(ख) उसकी विधवा सास ने 5-(क) चाँद सिंह को 6-(घ) बादल सिंह 7-(ग) पंद्रह वर्ष तक 8-(घ) राजा श्यामानंद का 9-(ख) आंचलिक 10-(क) घोड़ों की रेस

शिरीष के फूल - हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रतिपादय- 'शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध 'कल्पलता' से उद्धृत है। इसमें लेखक ने आँधी, लू और गरमी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौंदर्य बिखेर रहे शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय ज़िजीविषा और तुमुल कोलाहल कलह के बीच धैर्यपूर्वक , लोक के साथ चिंतारत , कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है। ऐसी भावधारा में बहते हुए उसे देह-बल के ऊपर आत्मबल का महत्व सिद्ध करने वाली इतिहास-विभूति गांधी जी की याद हो आती है तो वह गांधीवादी मूल्यों के अभाव की पीड़ा से भी कसमसा उठता है।

निबंध की शुरुआत में लेखक शिरीष पुष्प की कोमल सुंदरता के जाल बुनता है , फिर उसे भेदकर उसके इतिहास में और फिर उसके जरिये मध्यकाल के सांस्कृतिक इतिहास में पैठता है , फिर तत्कालीन जीवन व सामंती वैभव-विलास को सावधानी से उकेरते हुए उसका खोखलापन भी उजागर करता है। वह अशोक के फूल के भूल जाने की तरह ही शिरीष को नजरअंदाज किए जाने की साहित्यिक घटना से आहत है। इसी में उसे सच्चे कवि का तत्व-दर्शन भी होता है। उसका मानना है कि योगी की अनासक्त शून्यता और प्रेमी की सरस पूर्णता एक साथ उपलब्ध होना सत्कवि होने की एकमात्र शर्त है। ऐसा कवि ही समस्त प्राकृतिक और मानवीय वैभव में रमकर भी चुकता नहीं और निरंतर आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा देता है।

सारांश- लेखक शिरीष के पेड़ों के समूह के बीच बैठकर लेख लिख रहा है। जेठ की गरमी से धरती जल रही है। ऐसे समय में शिरीष ऊपर से नीचे तक फूलों से लदा है। कम ही फूल गरमी में खिलते हैं। अमलतास केवल पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है। कबीरदास को इस तरह दस दिन फूल खिलना पसंद नहीं है। शिरीष में फूल लंबे समय तक रहते हैं। वे वसंत में खिलते हैं तथा भादों माह तक फूलते रहते हैं। भीषण गरमी और लू में यही शिरीष अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का मंत्र पढ़ाता रहता है। शिरीष के वृक्ष बड़े व छायादार होते हैं। पुराने रईस मंगल-जनक वृक्षों में शिरीष को भी लगाया करते थे। वात्स्यायन कहते हैं कि बगीचे के घने छायादार वृक्षों में ही झूला लगाना चाहिए। पुराने कवि बकुल के पेड़ में झूला डालने के लिए कहते हैं, परंतु लेखक शिरीष को भी उपयुक्त मानता है।

शिरीष की डालें कुछ कमजोर होती हैं , परंतु उस पर झूलनेवालियों का वजन भी कम ही होता है। शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कोमल माना जाता है। कालिदास ने लिखा है कि शिरीष के फूल केवल भौंरों के पैरों का दबाव सहन कर सकते हैं, पक्षियों के पैरों का नहीं। इसके आधार पर भी इसके फूलों को कोमल माना जाने लगा , पर इसके फलों की मजबूती नहीं देखते। वे तभी स्थान छोड़ते हैं , जब उन्हें धकिया दिया जाता है। लेखक को उन नेताओं की याद आती है जो समय को नहीं पहचानते तथा धक्का देने पर ही पद को छोड़ते हैं। लेखक सोचता है कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती। वृद्धावस्था व मृत्यु-ये जगत के सत्य हैं। शिरीष के फूलों को भी समझना चाहिए कि झड़ना निश्चित है, परंतु सुनता कोई नहीं। मृत्यु का देवता निरंतर कोड़े चला रहा है। उसमें कमजोर समाप्त हो जाते हैं। प्राणधारा व काल के बीच संघर्ष चल रहा है। हिलने-डुलने वाले कुछ समय के लिए बच सकते हैं। झड़ते ही मृत्यु निश्चित है।

लेखक को शिरीष अवधूत की तरह लगता है। यह हर स्थिति में ठीक रहता है। भयंकर गरमी में भी यह अपने लिए जीवन-रस ढूँढ़ लेता है। एक वनस्पतिशास्त्री ने बताया कि यह वायुमंडल से अपना रस खींचता है तभी तो भयंकर लू में ऐसे सुकुमार केसर उगा सका। अवधूतों के मुँह से भी संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर व कालिदास उसी श्रेणी के हैं। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका , जो फक्कड़ नहीं बन सका, जिससे लेखा-जोखा मिलता है, वह कवि नहीं है। कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिका देवी

ने ब्रहमा, वाल्मीकि व व्यास को ही कवि माना। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है , उसका फक्कड़ होना बहुत जरूरी है। कालिदास अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ , विदग्ध प्रेमी थे। उनका एक-एक श्लोक मुग्ध करने वाला है। शकुंतला का वर्णन कालिदास ने किया।

राजा दुष्यंत ने भी शंकुतला का चित्र बनाया , परंतु उन्हें हर बार उसमें कमी महसूस होती थी। काफी देर बाद उन्हें समझ आया कि शकुंतला के कानों में शिरीष का फूल लगाना भूल गए हैं। कालिदास सौंदर्य के बाहरी आवरण को भेदकर उसके भीतर पहुँचने में समर्थ थे। वे सुख-दुख दोनों में भाव-रस खींच लिया करते थे। ऐसी प्रकृति सुमित्रानंदन पंत ब रवींद्रनाथ में भी थी। शिरीष पक्के अवधूत की तरह लेखक के मन में भावों की तरंगें उठा देता है। वह आग उगलती धूप में भी सरस बना रहता है। आज देश में मारकाट, आगजनी, लूटपाट आदि का बवंडर है। ऐसे में क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। गांधी जी भी रह सके थे। ऐसा तभी संभव हुआ है जब वे वायुमंडल से रस खींचकर कोमल व कठोर बने। लेखक जब शिरीष की ओर देखता है तो हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 भीषण गर्मी और लू के बीच किस वृक्ष के फूल खिले रहते हैं?

(क) अशोक

(ख) अमलतास

(ग) शिरीष

(घ) वट

प्र-2 लेखक ने शिरीष की तुलना किससे की है?

(क) अवधूत से

(ख) गृहस्थ से

(ग) अग्नि से

(घ) सेवक से

प्र-3 संस्कृत साहित्य में शिरीष के फूल को क्या माना गया है?

(क) कठोर

(ख) ठंडा

(ग) स्वच्छ

(घ) कोमल

प्र-4 कालिदास ने शिरीष के फूलों के बारे में क्या लिखा है?

(क) शिरीष के फूल कठोर होते हैं

(ख) केवल भौरों के पैरों का दबाव ही सह सकता है

(ग) हलके और मजबूत होते हैं

(घ) केवल चिड़ियों के पैरों का दबाव ही सह सकता है

प्र-5 लेखक ने जगत के अति प्रामाणिक सत्य किसे माना है?

(क) जरा और मृत्यु को

(ख) धन और दौलत को

(ग) माया और मोह को

(घ) गृहस्थ और संन्यासी को

प्र-6 संसार की सबसे सरस रचनाएँ किनके मुँह से निकली हैं?

(क) गृहस्थों के मुँह से

(ख) राजाओं के मुँह से

(ग) अवधूतों के मुँह से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-7 कर्णाट राज की रानी विज्जिका ने किन्हें सर्वश्रेष्ठ कवि माना है?

(क) ब्रह्मा जी को

(ख) वेद व्यास जी को

(ग) वाल्मीकि जी को

(घ) इनमें से सभी को

प्र-8 राजा दुष्यंत द्वारा शकुंतला के बनाए गए चित्र में क्या कमी रह गई थी?

(क) शकुंतला की भौहें तिरछी थी

(ख) कानों में शिरीष का फूल पहनाना भूल गए

(ग) केश-सज्जा ठीक से नहीं कर पाए

(घ) गले का हार पहनाना भूल गए

प्र-9 लेखक ने सुमित्रानंदन पंत को क्यों महत्व दिया है?

(क) उन्होंने प्रकृति के सूक्ष्म रूप का चित्रण किया है

(ख) लेखक से उनकी मित्रता थी

(ग) दूसरे कवियों की तरह ही उन्होंने रचनाएँ की हैं

(घ) कालिदास और सुमित्रानंदन पंत एक ही भाषा के कवि हैं

प्र-10 कालिदास शकुंतला का वर्णन करने में क्यों सफल रहे ?

(क) क्योंकि उन्हें संस्कृत का ज्ञान था

(ख) क्योंकि वे जंगल में अकेले रहते थे

(ग) क्योंकि उन्हें भगवती काली का वरदान प्राप्त था

(घ) क्योंकि वे विदग्ध, अनासक्त और स्थिर प्रज्ञ प्रेमी थे

उत्तर-

1-(ग) शिरीष 2-(क) अवधूत से 3-(घ) कोमल 4-(ख) केवल भौरों के पैरों का दबाव ही सह सकता है 5-(क) जरा और मृत्यु को 6- (ग) अवधूतों के मुँह से 7-(घ) इनमें से सभी को 8-(ख) कानों में शिरीष का फूल पहनाना भूल गए 9-(क) उन्होंने प्रकृति के सूक्ष्म रूप का चित्रण किया है 10-(घ) क्योंकि वे विदग्ध, अनासक्त और स्थिर प्रज्ञ प्रेमी थे

श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज - डॉ भीमराव आम्बेडकर

श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

प्रतिपादय- यह पाठ आंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ़ कास्ट'(1936) पर आधारित है। इसका अनुवाद ललई सिंह यादव ने 'जाति-भेद का उच्छेद' शीर्षक के अंतर्गत किया। यह भाषण 'जाति-पाँति तोड़क मंडल' (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन (1936) के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया गया था , परंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्ण सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया।

सारांश- लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपत्ति यह है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है , परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

जाति-प्रथा का श्रम-विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रुचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरुचि दिखाते हैं। अत: आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा , रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

मेरी कल्पना का आदर्श समाज

प्रतिपादय- इस पाठ में लेखक ने बताया है कि आदर्श समाज में तीन तत्व अनिवार्यत: होने चाहिए- समानता, स्वतंत्रता व बंधुता। इनसे लोकतंत्र सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया के अर्थ तक पहुँच सकता है।

सारांश- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता , समता व भ्रातृत्त पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलत: सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन , जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती , परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है: 1- शारीरिक वंश परंपरा 2- सामाजिक उत्तराधिकार, 3-मनुष्य के अपने प्रयत्न।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के

मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उत्तम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वश में है, परंतु वंश व सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अत: वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है। एक राजनेता को अनेक लोगों से मिलना होता है। उसके पास हर व्यक्ति के लिए अलग व्यवहार करने का समय नहीं होता। ऐसे में वह व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। वह सबसे व्यवहार इसलिए करता है क्योंकि वर्गीकरण व श्रेणीकरण संभव नहीं है। समता एक काल्पनिक वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञों के लिए यही एकमात्र उपाय व मार्ग है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 जाति-प्रथा के समर्थक किस कारण से जाति-प्रथा का पोषण करते हैं?

(क) यह कार्य-कुशलता के लिए आवश्यक है

(ख) इससे समाज में अव्यवस्था फैलती है

(ग) समाज में लोगों की पहचान बनी रहती है

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-2 जाति-प्रथा स्वस्थ समाज के लिए एक बुराई क्यों है?

(क) यह श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है

(ख) यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती

(ग) यह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने से रोकती है

(घ) इनमें से सभी

प्र-3 लेखक ने भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण किसे बताया है?

(क) श्रम-विभाजन को

(ख) जाति-प्रथा को

(ग) स्वतंत्रता को

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 लेखक के अनुसार जाति-प्रथा कौन-सा पेशा करने की अनुमति देती है?

(क) निजी पेशा

(ख) स्वतंत्र पेशा

(ग) पैतृक पेशा

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-5 स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित समाज को लेखक ने कैसा समाज कहा है?

(क) मिश्रित समाज

(ख) स्वतंत्र समाज

(ग) आदर्श समाज

(घ) बहुल समाज

प्र-6 लेखक ने कितने तरह की दासता का उल्लेख किया है?

(क) दो तरह की

(ख) तीन तरह की

(ग) चार तरह की

(घ) पाँच तरह की

प्र-7 'समता' शब्द का नारा किस क्रांति में लगाया लगाया गया था?

(क) रूसी क्रांति में

(ख) जर्मन क्रांति में

(ग) अमेरिकन क्रांति में

(घ) फ्रांसीसी क्रांति में

प्र-8 'श्रम-विभाजन' किस आधार पर उचित है?

(क) रूचि और क्षमता के आधार पर

(ख) जाति के आधार पर

(ग) व्यवसाय के आधार पर

(घ) जन्म के आधार पर

प्र-9 आधुनिक युग में कब अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ती है?

(क) धन अर्जित करने के कारण

(ख) जाति-प्रथा के कारण

(ग) अधिक शिक्षित हो जाने कारण

(घ) तकनीकी विकास एवं बदलाव के कारण

प्र-10 समाज के सभी लोगों को आरंभ से ही क्या उपलब्ध कराना चाहिए?

(क) अच्छा घर

(ख) असमान अवसर

(ग) समान अवसर

(घ) तकनीकी प्रशिक्षण

उत्तर-

1-(क) यह कार्य-कुशलता के लिए आवश्यक है 2-(घ) इनमें से सभी (3)- (ख) जाति-प्रथा को 4-(ग) पैतृक पेशा 5-(ग) आदर्श समाज 6-(ख) तीन तरह की 7-(घ) फ्रांसीसी क्रांति में 8-(क) रूचि और क्षमता के आधार पर 9-(घ) तकनीकी विकास एवं बदलाव के कारण 10-(ग) समान अवसर

सिल्वर वैडिंग - मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सारांश

यह लंबी कहानी लेखक की अन्य रचनाओं से कुछ अलग दिखाई देती है। आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। **जो हुआ होगा** और **समहाउ इंप्रापर** के दो जुमले इस कहानी के बीज वाक्य हैं। **जो हुआ होगा** में यथास्थितिवाद यानी ज्यों-का-त्यों स्वीकार लेने का भाव है तो **समहाउ इंप्रापर** में एक अनिर्णय की स्थिति भी है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं। वे इन स्थितियों का जिम्मेदार भी किसी व्यक्ति को नहीं ठहराते। वे अनिर्णय की स्थिति में हैं।

दफ़्तर में सेक्शन अफ़सर यशोधर पंत ने जब आखिरी फ़ाइल का काम पूरा किया तो दफ़्तर की घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। वे अपनी घड़ी सुबह-शाम रेडियो समाचारों से मिलाते हैं , इसलिए वे दफ़्तर की घड़ी को सुस्त बताते हैं। इनके कारण अधीनस्थ को भी पाँच बजे के बाद भी रुकना पड़ता है। वापसी के समय वे किशन दा की उस परंपरा का निर्वाह करते हैं जिसमें जूनियरों से हल्का मजाक किया जाता है। दफ़्तर में नए असिस्टेंट चड्ढा की चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पंत जी को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होते हैं। उसने थोड़ी बदतमीजीपूर्ण व्यवहार करते हुए पंत जी की चूनेदानी का हाल पूछा। पंत जी ने उसे जवाब दिया। फिर चड्ढा ने पंत जी की कलाई थाम ली और कहा कि यह पुरानी है। अब तो डिजिटल जापानी घड़ी ले लो। सस्ती मिल जाती है। पंत जी उसे बताते हैं कि यह घड़ी उन्हें शादी में मिली है। यह घड़ी भी उनकी तरह ही पुरानी हो गई है। अभी तक यह सही समय बता रही है।

इस तरह जवाब देने के बाद एक हाथ बढ़ाने की परंपरा पंत जी ने अल्मोड़ा के रेम्जे स्कूल में सीखी थी। ऐसी परंपरा किशन दा के क्वार्टर में भी थी जहाँ यशोधर को शरण मिली थी। किशन दा कुंआरे थे और पहाड़ी लड़कों को आश्रय देते थे। पंत जी जब दिल्ली आए थे तो उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। तब किशन दा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। उन्होंने यशोधर को कपड़े बनवाने व घर पैसा भेजने के लिए पचास रुपये दिए। इस तरह वे स्मृतियों में खो गए। तभी चड्ढा की आवाज से वे जागृत हुए और मेनन द्वारा शादी के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहने लगे'नाव लेट मी सी, आई वॉज़ मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फ़ोर्टी सेवन।'

मेनन ने उन्हें 'सिल्वर वैडिंग की बधाई दी। यशोधर खुश होते हुए झेपे और झंपते हुए खुश हुए। फिर भी वे इन सब बातों को अंग्रेजों के चोंचले बताते हैं , किंतु चड्ढा उनसे चाय-मट्ठी व लड्डू की माँग करता है। यशोधर जी दस रुपये का नोट चाय के लिए देते हैं, परंतु उन्हें यह 'समहाउ इंप्रॉपर फाइंड' लगता है। अत: सारे सेक्शन के आग्रह पर भी वे चाय पार्टी में शरीक नहीं होते है। चडढ़ा के जोर देने पर वे बीस रुपये और दे देते हैं , किंतु आयोजन में सम्मिलित नहीं होते। उनके साथ बैठकर चाय-पानी और गप्प-गप्पाष्टक में वक्त बरबाद करना उनकी परंपरा के विरुद्ध है।

यशोधर बाबू ने इधर रोज बिड़ला मंदिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने या स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नयी रीति अपनाई है। यह बात उनकी पत्नी व बच्चों को अखरती थी। क्योंकि वे बुजुर्ग नहीं थे। बिड़ला मंदिर से उठकर वे पहाड़गंज जाते और घर के लिए साग-सब्जी लाते। इसी समय वे मिलने वालों से मिलते थे। घर पर वे आठ बजे से पहले नहीं पहुँचते थे।

आज यशोधर जब बिड़ला मंदिर जा रहे थे तो उनकी नजर किशन दा के तीन बेडरूम वाले क्वार्टर पर पड़ी। अब वहाँ छह-मंजिला मकान बन रहा है। उन्हें बहुमंजिली इमारतें अच्छी नहीं लग रही थीं। यही कारण है कि उन्हें उनके पद के अनुकूल एंड्रयूज़गंज , लक्ष्मीबाई नगर पर डी-2 टाइप अच्छे क्वार्टर मिलने का ऑफ़र भी स्वीकार्य नहीं है और वे यहीं बसे रहना चाहते हैं। जब उनका क्वार्टर टूटने लगा तब उन्होंने शेष क्वार्टर में से एक अपने नाम अलाट करवा लिया। वे किशन दा की स्मृति के लिए यहीं रहना चाहते थे।

पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी व बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा है। इसी वजह से उन्हें घर जल्दी लौटना अच्छा नहीं लगता था। उनका बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पर लग गया था। यशोधर बाबू को यह भी 'समहाउ' लगता था क्योंकि यह कंपनी शुरू में ही डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह वेतन देती थी। उन्हें कुछ गड़बड़ लगती थी। उनका दूसरा बेटा आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा था। उसका एलाइड सर्विसेज में न जाना भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनका तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया। उनकी एकमात्र बेटी शादी से इनकार करती है। साथ ही वह डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की धमकी भी देती है। वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश हैं, परंतु उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते।

यशोधर की पत्नी संस्कारों से आधुनिक नहीं है , परंतु बच्चों के दबाव से वह मॉडर्न बन गई है। शादी के समय भी उसे संयुक्त परिवार का दबाव झेलना पड़ा था। यशोधर ने उसे आचार-व्यवहार के बंधनों में रखा। अब वह बच्चों का पक्ष लेती है तथा खुद भी अपनी सहूलियत के हिसाब से यशोधर की बातें मानने की बात कहती है। यशोधर उसे 'शालयल बुढ़िया', 'चटाई का लहँगा' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे' कहकर उसके विद्रोह का मजाक उड़ाते हैं , परंतु वे खुद ही तमाशा बनकर रह गए। किशन दा के क्वार्टर के सामने खड़े होकर वे सोचते हैं कि वे शादी न करके पूरा जीवन समाज को समर्पित कर देते तो अच्छा होता।

यशोधर ने सोचा कि किशन दा का बुढ़ापा कभी सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने मकान ले लिए। रिटायरमेंट के बाद किसी ने भी उन्हें अपने पास रहने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर भी यह पेशकश नहीं कर पाए क्योंकि वे शादीशुदा थे। किशन दा कुछ समय किराये के मकान में रहे और फिर अपने गाँव लौट गए। सालभर बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें कोई बीमारी भी नहीं हुई थी। यशोधर को इसका कारण भी पता नहीं। वे किशन दा की यह बात याद रखते थे कि जिम्मेदारी पड़ने पर हर व्यक्ति समझदार हो जाता है।

वे मन-ही-मन यह स्वीकार करते थे कि दुनियादारी में उनके बीवी-बच्चे अधिक सुलझे हुए हैं, परंतु वे अपने सिद्धांत नहीं छोड़ सकते। वे मकान भी नहीं लेंगे। किशन दा कहते थे कि मूरख लोग मकान बनाते हैं , सयाने उनमें रहते हैं। रिटायरमेंट होने पर गाँव के पुश्तैनी घर चले जाओ। वे इस बात को आज भी सही मानते हैं। उन्हें पता है कि गाँव का पुश्तैनी घर टूट-फूट चुका है तथा उस पर अनेक लोगों का हक है। उन्हें लगता है कि रिटायरमेंट से पहले कोई लड़का सरकारी नौकरी में आ जाएगा और क्वार्टर उनके पास रहेगा। ऐसा न होने पर क्या होगा, इसका जवाब उनके पास नहीं होता।

बिड़ला मंदिर के प्रवचनों में उनका मन नहीं लगा। उम्र ढलने के साथ किशन दा की तरह रोज मंदिर जाने, संध्या-पूजा करने और गीता-प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे। मन के विरोध को भी वे अपने तर्कों से खत्म कर देते हैं। गीता के पाठ में 'जनार्दन' शब्द सुनने से उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद आई। उनकी चिट्ठी से पता चला कि वे बीमार है। यशोधर बाबू अहमदाबाद जाना

चाहते हैं, परंतु पत्नी व बच्चे उनका विरोध करते हैं। यशोधर खुशी-गम के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं तथा बच्चों को भी वैसा बनाने की इच्छा रखते हैं। किंतु उस दिन हद हो गई जिस दिन कमाऊ बेटे ने यह कह दिया कि "आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा।"

यशोधर की पत्नी का कहना है कि उन्होंने बचपन में कुछ नहीं देखा। माँ के मरने के बाद विधवा बुआ ने यशोधर का पालन-पोषण किया। मैट्रिक पास करके दिल्ली में किशन दा के पास रहे। वे भी कुंवारे थे तथा उन्हें भी कुछ नहीं पता था। अत: वे नए परिवर्तनों से वाकिफ़ नहीं थे। उन्हें धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी पारिवारिक चिंतन में डूबा रहना अच्छा नहीं लगा। ध्यान लगाने का कार्य रिटायरमेंट के बाद ठीक रहता है। इस तरह की तमाम बातें यशोधर बाबू पैदाइशी बुजुर्गवार है, क्यों में औरउ के हीलबे में कहा कते हैं तथा कहाक्रउ की ही तह ही सी लगनतीस हँसी हँस देते हैं।

जब तक किशन दा दिल्ली में रहे, तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। उनके जाने के बाद घर में होली गवाना , रामलीला के लिए क्वार्टर का एक कमरा देना, 'जन्यो पुन्यू' के दिन सब कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए घर बुलाना आदि कार्य वे पत्नी व बच्चों के विरोध के बावजूद करते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि बच्चे उनसे सलाह लें , परंतु बच्चे उन्हें सदैव उपेक्षित करते हैं। प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मंडी गए। वे चाहते थे कि उनके लड़के घर का सामान खुद लाएँ, परंतु उनकी आपस की लड़ाई से उन्होंने इस विषय को उठाना ही बंद कर दिया। बच्चे चाहते थे कि वे इन कामों के लिए नौकर रख लें। यशोधर को यही 'समहाउ इंप्रॉपर' मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उन्हें दे। क्या वह ज्वाइंट एकाउंट नहीं खोल सकता था ? उनके ऊपर, वह हर काम अपने पैसे से करने की धौंस देता है। घर में वह तमाम परिवर्तन अपने पैसों से कर रहा है। वह हर चीज पर अपना हक समझता है। सब्जी लेकर वे अपने क्वार्टर पहुँचे। वहाँ एक तख्ती पर लिखा था-वाई०डी० पंत। उन्हें पहले गलत जगह आने का धोखा हुआ। घर के बाहर एक कार थी। कुछ स्कूटर , मोटर-साइकिलें थीं तथा लोग विदा ले-दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागजों की झालरें व गुब्बारे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को कार में बैठे किसी साहब से हाथ मिलाते देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने अपनी पत्नी व बेटी को बरामदे में खड़ा देखा जो कुछ मेमसाबों को विदा कर रही थीं। लड़की जींस व बगैर बाँह का टॉप पहने हुए थी। पत्नी ने होंठों पर लाली व बालों में खिजाब लगाया हुआ था। यशोधर को यह सब 'समहाउ इंप्रापर' लगता था।

यशोधर चुपचाप घर पहुँचे तो बड़े बेटे ने देर से आने का उलाहना दिया। यशोधर ने शर्मीली-सी हँसी हँसते हुए पूछा कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है ? यशोधर के दूर के भांजे ने कहा, "जबसे तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार महीने कमाने लगा है , तब से।" यशोधर को अपनी सिल्वर बैडिंग की यह पार्टी भी अच्छी नहीं लगी। उन्हें यह मलाल था कि सुबह ऑफ़िस जाते समय तक किसी ने उनसे इस आयोजन की चर्चा नहीं की थी। उनके पुत्र भूषण ने जब अपने मित्रों-सहयोगियों से यशोधर बाबू का परिचय करवाया तो उस समय उन्होंने प्रयास किया कि भले ही वे संस्कारी कुमाऊँनी हैं तथापि विलायती रीति-रिवाज भी अच्छी तरह परिचित होने का एहसास कराएँ। बच्चों के आग्रह पर यशोधर बाबू अपनी शादी की सालगिरह पर केक काटने के स्थान पर जाकर खड़े हो गए। फिर बेटी के कहने पर उन्होंने केक भी काटा, जबकि उन्होंने कहा-'समहाउ आई डोंट लाइक आल दिस। " परंतु उन्होंने केक नहीं खाया क्योंकि इसमें अंडा होता है। अधिक आग्रह पर उन्होंने संध्या न करने का बहाना किया तथा पूजा में चले गए। आज उन्होंने पूजा में देर लगाई ताकि अधिकतर मेहमान चले जाएँ। यहाँ भी उन्हें किशन दा दिखाई दिए। उन्होंने पूछा कि 'जो हुआ होगा' से आप कैसे मर गए? किशन दा कह रहे थे कि भाऊ सभी जन इसी 'जो

हुआ होगा' से मरते हैं चाहे वह गृहस्थ हो या ब्रहमचारी , अमीर हो या गरीब। शुरू और आखिर में सब अकेले ही होते हैं।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशन दा आज भी उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं और यह बताने में भी कि मेरे बीवी-बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं , उनके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए ? किशन दा अकेलेपन का राग अलाप रहे थे। उनका मानना था कि यह सब माया है। जो भूषण आज इतना उछल रहा है, वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असहाय अनुभव करेगा, जितना कि आज तू कर रहा है। इस बीच यशोधर की पत्नी ने वहाँ आकर झिड़कते हुए पूछा कि आज पूजा में ही बैठे रहोगे। मेहमानों के जाने की बात सुनकर वे लाल गमछे में ही बैठक में चले गए। बच्चे इस परंपरा के सख्त खिलाफ़ थे। उनकी बेटी इस बात पर बहुत झल्लाई। टेबल पर रखे प्रेजेंट खोलने की बात कही। भूषण उनको खोलता है कि यह ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। सुबह दूध लाने के समय आप फटा हुआ पुलोवर पहनकर चले जाते हैं , वह बुरा लगता है। बेटी पिता का पाजामा-कुर्ता उठा लाई कि इसे पहनकर गाउन पहनें। बच्चों के आग्रह पर वे गाउन पहन लेते हैं। उनकी आँखों की कोर में जरा-सी नमी चमक गई। यह कहना कठिन है कि उनको भूषण की यह बात चुभ गई कि आप इसे पहनकर दूध लेने जाया करें। वह स्वयं दूध लाने की बात नहीं कर रहा।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 सिल्वर वैडिंग पाठ के लेखक हैं-

(क) कुँवर नारायण
(ख) जैनेन्द्र कुमार
(ग) मनोहर श्याम जोशी
(घ) आनंद यादव

प्र-2 सिल्वर वैडिंग पाठ में यशोधर पंत के आदर्श पुरुष हैं-

(क) किशन दा
(ख) चन्द्रदत्त तिवारी
(ग) भूषण
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-3 यशोधर बाबू घर से ऑफिस किस साधन से आया-जाया करते थे?

(क) साइकिल से
(ख) कार से
(ग) स्कूटर से
(घ) पैदल ही

प्र-4 यशोधर बाबू की शादी किस वर्ष हुई थी?

(क) 1947 ई. में
(ख) 1974 ई. में
(ग) 1946 ई. में
(घ) 1973 ई. में

प्र-5 'सिल्वर वैडिंग' पाठ में आये 'गधा पच्चीसी' का क्या मतलब है?

(क) बचपन

(ख) बुढ़ापा

(ग) जवानी

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-6 यशोधर बाबू की पत्नी किसका पक्ष लेती है?

(क) वाई डी पंत का

(ख) किशन दा का

(ग) अपने बच्चों का

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-7 किशन दा की मौत किस कारण से हुई?

(क) बुढ़ापे के कारण

(ख) जो हुआ होगा से

(ग) अजनबीपन से

(घ) बेगानेपन से

प्र-8 सिल्वर वैडिंग पाठ में चूनेदानी किसे कहा गया है?

(क) ऑफिस की घड़ी को

(ख) गैस चूल्हे को

(ग) कलाई घड़ी को

(घ) किनारीदार साड़ी को

प्र-9 संध्या की पूजा में बैठे यशोधर बाबू को कौन दिखाई दे रहा था?

(क) किशन दा

(ख) बड़ा बेटा भूषण

(ग) उनकी बुआ

(घ) उनकी पत्नी

प्र-10 यशोधर बाबू को भूषण ने गिफ्ट में क्या दिया था?

(क) ऊनी स्वेटर

(ख) रेशमी टोपी

(ग) सूती तौलिया

(घ) ऊनी गाउन

उत्तर-

1-(ग) मनोहर श्याम जोशी 2-(क) किशन दा 3-(घ) पैदल ही 4-(क) 1947 ई. में

5-(ग) जवानी 6- (ग) अपने बच्चों का 7-(ख) जो हुआ होगा से 8-(ग) कलाई घड़ी को

9-(क) किशन दा 10-(घ) ऊनी गाउन

जूझ - आनंद यादव

पाठ का सारांश

यह पाठ लेखक के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास अंश का है। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की मजेदार और विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में निम्न मध्य वर्गीय मराठी कृषक जीवन की अनूठी झाँकी प्रस्तुत हुई है। इस अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य , संगीत और अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है। लेखक के पिता ने उसे पाठशाला जाने से रोक दिया तथा खेती के काम में लगा दिया। उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था , परंतु वह पिता से कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। उसे पिटाई का डर था। उसे विश्वास था कि खेती से कुछ नहीं मिलने वाला क्योंकि क्रमश: इससे मिलनेवाला लाभ घट रहा है। पढ़ने के बाद नौकरी लगने पर उसके पास कुछ पैसे आ जाएँगे। दीवाली के बाद ईख पेरने के लिए कोल्हू चलाया जाता था क्योंकि उसके पिता को सबसे पहले गुड़ बेचना होता था ताकि अधिक कीमत मिल सके। हालाँकि पहले ईख काटने से उसमें रस कम निकलता था। इस वर्ष भी लेखक के पिता ने जल्दी कार्य शुरू किया। अत: ईख पेरने का काम सबसे पहले संपन्न हो गया। एक दिन लेखक धूप में कंडे थाप रही थी और वह बाल्टी में पानी भर-भरकर उसे दे रहा था। अच्छा मौका देखकर लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की माँ ने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा कि तेरी पढ़ाई-लिखाई की बात करने पर वह बरहेला सुअर की तरह गुर्राता है। लेखक ने सुझाव दिया कि वह दत्ता जी राव सरकार से उसकी पढ़ाई के बारे में बात करे। माँ तैयार हो गई। वह बच्चे की तड़पन समझती थी।

अत: रात को लेखक की पढ़ाई के संबंध में बात करने के लिए दत्ता जी राव देसाई के पास गई और उनसे सारी बात बताई। उसने यह भी बताया कि दादा सारे दिन बाजार में रखमाबाई के पास गुजार देता है। वह खेती का काम नहीं करता। उसने बच्चे की पढ़ाई इसलिए बंद कर दी ताकि वह सारे गाँव भर में आजादी के साथ घूमता रहे। यह बात सुनकर देसाई चिढ़ गए। चलते-चलते लेखक ने यह भी कहा कि यदि वह अब भी कक्षा में पढ़ने लगे तो दो महीने में पाँचवीं पास कर लेगा और इस तरह उसका साल बच जाएगा। पहले ही उसका एक साल खराब हो चुका था। राव ने लेखक से कहा कि घर आने पर दादा को मेरे पास भेज देना और घड़ी भर बाद तुम भी आ जाना। माँ-बेटा ने राव को सचेत किया कि हमारे आने की बात उसे मत बताना। राव ने उन्हें निर्भय होकर जाने को कहा। रात को दादा घर पर मालिक दिखाई नहीं दिया। खेत से आ जाने पर इधर भेजना।

यह सुनकर दादा सम्मान की बात समझकर तुरंत चला गया। आधा घंटे बाद लेखक उन्हें खाने के लिए बुलाने चला गया। राव ने लेखक से पूछा कि कौन-सी कक्षा में पढ़ता है रे तू ? लेखक ने बताया कि वह पाँचवीं में था , पर अब स्कूल नहीं जाता क्योंकि दादा ने मना कर दिया। उन्हें खेतों में पानी लगाने वाला चाहिए था। राव ने दादा से पूछा तो उसने लेखक के कथन को स्वीकार कर लिया। देसाई ने दादा को खूब फटकार लगाई और कहा कि तुम्हारा ध्यान खेती में नहीं है। बीवी-बच्चों को खेत में जोतकर खुले साँड़ की तरह घूमता है तथा अपनी मस्ती के लिए लड़के के जीवन की बलि चढ़ा रहा है। उसने लेखक को कहा कि तू सवेरे पाठशाला जा तथा मन लगाकर पढ़। यदि यह मना करे तो मेरे पास आना। मैं तुझे पढ़ाऊँगा। लेखक के पिता ने उस पर गलत आदतों का आरोप लगाया-कंडे बेचना, चारा बेचना, सिनेमा देखना या जुआ खेलना, खेती व घर के काम पर ध्यान न देना आदि। लेखक ने अपने उत्तर से उन्हें संतुष्ट कर दिया।

देसाई ने पूछा कि कभी नापास तो नहीं हुआ। लेखक के मना करने पर उसे पाठशाला जाने का आदेश देकर घर भेज दिया। बाद में उसने रतनाप्पा को समझाया। दादा ने भी पाठशाला भेजने की हामी भर दी। घर आकर दादा ने लेखक से यह वचन ले लिया कि दिन निकलते ही खेत पर जाना और वहीं से पाठशाला पहुँचना। । पाठशाला से छुट्टी होते ही घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना और खेतों में ज्यादा काम होने पर पाठशाला से गैर-हाजिर रहना होगा। लेखक ने सभी शतें स्वीकार कर लीं। लेखक पाँचवीं कक्षा में जाकर बैठने लगा। कक्षा के दो लड़कों को छोड़कर सभी नए बच्चे थे। वह बाहरी-अपरिचित जैसा एक बेंच के एक सिरे पर कोने में जा बैठा। वह पुरानी किताबों को ही थैले में भर लाया। कक्षा के शरारती लड़के ने उसका मजाक उड़ाया और उसका गमछा छीनकर मास्टर की मेज पर रख दिया। फिर उसे सिर पर लपेटकर मास्टर की नकल उतारनी शुरू की। तभी मास्टर जी आ गए। लेखक ने उसे सब कुछ बता दिया। बीच की छुट्टी में लड़कों ने उसकी धोती खोलने की कोशिश की , परंतु असफल रहे। वे उसे तरह-तरह से परेशान करते रहे। उसका मन उदास हो गया। उसने माँ से नयी टोपी व दो नाड़ी वाली चड्ढी मैलखाऊ रंग की मैंगवा ली। धीरे-धीरे लड़कों से परिचय बढ़ गया। मंत्री नामक मास्टर आए। वे छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। वे लड़के की पीठ पर घूसा लगाते थे। शरारती लड़के उनसे बहुत डरते थे। वे गणित पढ़ाते थे।

इस कक्षा में वसंत पाटील नाम का कमजोर शरीर वाला व होशियार लड़का था। वह शांत स्वभाव का था तथा हमेशा पढ़ने में लगा रहता था। मास्टर ने उसे कक्षा मॉनीटर बना दिया था। लेखक भी उसकी तरह पढ़ने में लगा रहा। वह अपनी कापी-किताबों को व्यवस्थित रखने लगा। शीघ्र ही वह गणित में होशियार हो गया। दोनों में दोस्ती हो गई। मास्टर लेखक को 'आनंदा' कहने लगे। अब उसका मन पाठशाला में लगने लगा। न०वा० सौंदलगेकर मास्टर मराठी पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। सुरीले कंठ, छद व रसिकता के कारण वे कविता बहुत अच्छी पढ़ाते थे। उन्हें मराठी व अंग्रेजी की अनेक कविताएँ याद थीं। वे कविता के साथ ऐसे जुड़े थे कि अभिनय करके भावबोध कराते थे। वे स्वयं भी कविता रचते थे। लेखक उनसे बहुत प्रभावित था। खेत पर पानी लगाते समय या ढोर चराते समय वह मास्टर के अनुसार ही कविताएँ गाता था। वह उन्हीं की तरह अभिनय करता। उसी समय उसे अनुभव हुआ कि अन्य कविताएँ भी इसी तरह पढ़ी जा सकती हैं। लेखक को महसूस हुआ कि पहले जिस काम को करते हुए उसे अकेलापन खटकता था, अब वह समाप्त हो गया। उसे एकांत अच्छा लगने लगा। एकांत के कारण वह ऊँचे स्वर में कविता गा सकता था , नृत्य कर सकता था। उसने कविता गाने की अपनी पद्धति विकसित की। वह अभिनय के साथ गाने लगा तथा अब उसके चेहरे पर कविता के भाव आने लगे। मास्टर को लेखक का गायन अच्छा लगा और उससे छठी-सातवीं कक्षा के बालकों के सामने गवाया। पाठशाला के एक समारोह में भी उससे गवाया। मास्टर स्वयं कविता रचते थे। उनके पास मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे। वे उन कवियों के संस्मरण भी सुनाते थे। इस कारण अब वे कवि उसे 'आदमी' लगने लगे थे।

सौंदलगेकर स्वयं कवि थे। इस कारण लेखक को यह विश्वास हुआ कि कवि भी उसकी तरह ही हाड़-मांस का व क्रोध-लोभ का मनुष्य होता है। लेखक को लगा कि वह स्वयं भी कविता कर सकता है। मास्टर ने अपने दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर एक कविता लिखी। लेखक ने मालती लता व कविता दोनों ही देखी थी। इससे उसे लगा कि वह अपने आस-पास, अपने गाँव, खेतों आदि पर कविता बना सकता है।

भैंस चराते-चराते वह फसलों व जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। वह उन्हें जोर से गुनगुनाता तथा मास्टर को दिखाता। कविता लिखने के लिए वह कागज व पेंसिल रखने लगा। उनके न होने पर वह

लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर रेखा खींचकर लिखता या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिख लेता। कंठस्थ हो जाने पर उसे पोंछ देता। वह अपनी कविता मास्टर को दिखाता था। कभी-कभी वह रात को ही मास्टर के घर जाकर कविता दिखाता। वे उसे कविता के शास्त्र के बारे में समझाते। वे उसे छद , अलंकार, शुद्ध लेखन, लय का ज्ञान कराते। वे उसे पुस्तकें व कविता-संग्रह भी देते थे। उन्होंने उसे कविता रचने के अनेक ढर्रे सिखाए। शब्दों का महत्व एवं उसका उचित प्रयोग जल्दी ही उसकी समझ में आने लगा। इस प्रकार लेखक को मास्टर की निकटता मिलती गई और उसकी मराठी भाषा में सुधार आने लगा।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'जूझ' शब्द का अर्थ है-

(ङ) यातना

(च) संघर्ष

(छ) विराम

(ज) मेहनत

प्र-2 'जूझ' पाठ में लेखक अपनी पढ़ाई के विषय में किससे कहता है?

(क) अपने पिता से

(ख) दत्ताजी राव से

(ग) अपनी माँ से

(घ) सौन्दलगेकर से

प्र-3 'जूझ' पाठ में लेखक को कक्षा में किसका साथ मिलता है?

(क) बसंत पाटिल का

(ख) रतनाप्पा का

(ग) मास्टर रणनवरे का

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 न. व. सौन्दलगेकर किस विषय के शिक्षक थे?

(क) अंग्रेजी

(ख) हिन्दी

(ग) संस्कृत

(घ) मराठी

प्र-5 बच्चे को शिक्षा देने के विषय में दत्ताजी राव का नजरिया कैसा है?

(क) अनुचित है

(ख) उचित है

(ग) पक्षपातपूर्ण है

(घ) विरोध में है

प्र-6 जूझ कहानी किस शैली में लिखी गई है?

(क) वर्णनात्मक शैली में

(ख) भावात्मक शैली

(ग) उपदेशात्मक शैली में

(घ) आत्मकथात्मक शैली

प्र-7 लेखक की माँ उसे किस कक्षा तक पढ़ाना चाहती थी?

(क) सातवीं

(ख) आठवीं

(ग) पाँचवीं

(घ) आठवीं

प्र-8 लेखक की कक्षा में गणित पढ़ने वाले मास्टर का क्या नाम था?

(क) आनंद

(ख) सौन्दलगेकर

(ग) मंत्री

(घ) दत्ताजी राव

प्र-9 लेखक पहले दिन कक्षा में दीवार से पीठ सटाकर क्यों बैठ गया था?

(क) क्योंकि उसे पढ़ना अच्छा नहीं लगा

(ख) क्योंकि शरारती बच्चे उसकी धोती खोल देते थे

(ग) क्योंकि उसके कपड़े गंदे थे

(घ) क्योंकि उसकी पहचान का कोई बच्चा साथ नहीं था

प्र-10 लेखक को कब लगा कि कवि भी हांड-मांस का बना होता है?

(क) मास्टर स्वयं एक कवि थे

(ख) वे कवियों के संस्मरण सुनाया करते थे

(ग) उनके पास मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे

(घ) इनमें से सभी

उत्तर- 1-(ख) संघर्ष 2-(ग) अपनी माँ से 3-(क) बसंत पाटिल का 4-(घ) मराठी 5-(ख) उचित है 6-(घ) आत्मकथात्मक शैली 7-(क) सातवीं 8-(ग) मंत्री 9-(ख) क्योंकि शरारती बच्चे उसकी धोती खोल देते थे 10-(घ) इनमें से सभी

अतीत में दबे पाँव - ओम थानवी

पाठ का सारांश -'अतीत में दबे पाँव ' साहित्यकार ओम थानवी ' द्वारा विरचित एक यात्रा-वृतांत है। वे पाकिस्तान स्थित सिंधु घाटी सभ्यता के दो महानगरों। मोहनजोदड़ो (मुअनजोदड़ो) और हड़प्पा के अवशेषों को देखकर अतीत के सभ्यता और संस्कृति की कल्पना करते हैं। अभी तक जितने भी पुरातात्विक प्रमाण मिले उनको देखकर साहित्यकार अपनी कल्पना को साकार करने की चेष्टा करते हैं।

लेखक का मानना है कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के दो सबसे पुराने और योजनाबद्ध तरीके से बसे शहर माने जाते हैं। वे मोहनजोदड़ो को ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर मानते हैं। लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का केंद्र है और शायद अपने जमाने की राजधानी जैसा। आज भी इस आदिम शहर की सड़कों और गलियों में सैर की जा सकती है। यह शहर अब भी वहीं है , जहाँ कभी था। आज भी वहाँ के टूटे घरों की रसोइयों में गंध महसूस की जा सकती है।

आज भी शहर के किसी सुनसान रास्ते पर खड़े होकर बैलगाड़ी की रुन-झुन की आवाजें सुनी जा सकती हैं। खंडहर बने घरों की टूटी सीढ़ियाँ अब चाहे कहीं न ले जाती हों , चाहे वे आकाश की ओर अधूरी

रह गई हों, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर यह अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर चढ़ गए हैं। वहाँ चढ़कर आप इतिहास को नहीं बल्कि उससे कहीं आगे देख रहे हैं।

मोहनजोदड़ो में सबसे ऊंचा चबूतरा बौद्ध स्तूप है। अब यह केवल मात्र एक टीला बनकर रह गया है। इस चबूतरे पर बौद्ध भिक्षुओं के कमर भी हैं। लेखक इसे नागर भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप मानते हैं। इसे देखकर रोमांचित होना स्वाभाविक है। यह स्तूपवाला चबूतरा शहर के एक खास हिस्से में स्थित है। इस हिस्से को पुरातत्व के विद्वान 'गढ़' कहते हैं। ये 'गढ़' कभी-न-कभी राजसत्ता या धर्मसत्ता के केंद्र रहे होंगे ऐसा भी माना जा सकता है। इन शहरों की खुदाई से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाकी बड़ी इमारतें, सभा-भवन, ज्ञानशाला सभी अतीत की चीजें कही जा सकती है परंतु यह 'गढ़ उस द्वितीय वास्तुकला कौशल के बाकी बचे नमूने हैं।

मोहनजोदड़ो शहर की संरचना नगर नियोजन का अनूठा प्रमाण है , उदाहरण है। यहाँ की सड़कें अधिकतर सीधी हैं या फिर आडी हैं। आज के वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। आज के नगरों के सेक्टर कुछ इसी नियोजन से मेल खाते हैं। आधुनिक परिवेश के इन सेक्टरवादी नागरिकों में रहन-सहन को लेकर नीरसता आ गई है। प्रत्येक व्यक्ति अपने-आप में खोया हुआ है।

मोहनजोदड़ो शहर में जो स्तूप मिला है उसके चबूतरे के गढ़ के पीछे 'उच्च' वर्ग की बस्ती है। इस बस्ती के पीछे पाँच किलोमीटर दूर सिंध नदी बहती है। अगर इन उच्च वर्गीय बस्ती से दक्षिण की तरफ़ नजर दौड़ाएँ तो दूर तक खंडहर , टूटे-फूटे घर दिखाई पड़ते हैं। ये टूटे-फूटे घर शायद कारीगरों के रहे होंगे। चूकि निम्न वर्ग के घर इतनी मजबूत सामग्री के नहीं बने होंगे शायद इसीलिए उनके अवशेष भी उनकी गवाही नहीं देते अर्थात इस पूरे शहर में गरीब बस्ती कहाँ है उसके अवशेष भी नहीं मिलते। टीले की दाई तरफ़ एक लॉबी दिखती है। इसके आगे एक महाकुंड है। इस गली को इस धरोहर के प्रबंधकों ने 'देव मार्ग' कहा है।

यह महाकुंड चालीस फुट लंबा और पच्चीस फुट चौड़ा है। यह उस सभ्यता में सामूहिक स्नान के किसी अनुष्ठान का प्रतीक माना जा सकता है। इसकी गहराई रगत फुट है तथा उत्तर और दक्षिण में सीढ़ियाँ उतरती हैं। इस महाकुंड के तीन तरफ़ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं उत्तर में एक पंक्ति में आठ स्नानघर हैं। यह वास्तुकला का एक नमूना ही कहा जाएगा क्योंकि इन सभी स्नानघरों के मुँह एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड के तल में पक्की ईंटों का जमाव है ताकि कुंड का पानी रिस न सके और अशुद्ध पानी कुंड में न आ सके। कुंड में पानी भरने के लिए पास ही एक कुआँ है। कुंड से पानी बाहर निकालने के लिए नालियाँ बनी हुई हैं। ये नालियाँ पक्की ईंटों से बनी हैं तथा ईंटों से ढकी हुई भी हैं। पुरातात्विक वैज्ञानिकों का मानना है कि पानी निकासी का ऐसा सुव्यवस्थित बंदोबस्त इससे पहले इतिहास में दूसरा नहीं है।

महाकुंड के उत्तर-पूर्व में एक बहुत लंबी इमारत के खंडहर बिखरे पड़े हैं। इस इमारत के बीचोंबीच एक खुला आँगन है। इसके तीन तरफ बरामदे हैं। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इसके साथ कभी छोटे-छोटे कमरे भी होंगे। ये कमरे और बरामदे धार्मिक अनुष्ठानों में ज्ञानशालाओं का काम देते थे। इस दृष्टि से देखें तो इस इमारत को एक 'धार्मिक महाविद्यालय' कहा जा सकता है। गढ़ से थोड़ा आगे । कुछ छोटे टीलों पर बस्तियाँ हैं। इन बस्तियों को 'नीचा नगर' कहकर पुकारा जाता है। पूर्व में बसी बस्ती 'अमीरों की बस्ती' है। आधुनिक युग में अमीरों की बस्ती पश्चिम में मानी जाती है। यानि कि बड़े-बड़े घर , चौड़ी सड़कें, ज्यादा कुएँ। मोहनजोदड़ो में यह उलटा था। शहर के बीचोंबीच एक तैंतीस फुट चौड़ी लंबी सड़क है। मोहनजोदड़ो में बैलगाड़ी होने के प्रमाण मिले हैं शायद इस सड़क पर दो बैलगाड़ियाँ एक साथ आसानी से

आ-जा सकती हैं। यह सड़क बाजार तक जाती है। इस सड़क के दोनों ओर घर बसे हुए हैं। परंतु इन घरों की पीठ सड़कों से सटी हुई हैं। कोई भी घर सड़क पर नहीं खुलता। लेखक के अनुसार , दिलचस्प संयोग है कि चंडीगढ़ में ठीक यही शैली पचास साल पहने लू काबूजिए ने इस्तेमाल की।" चंडीगढ़ का कोई घर सड़क की तरफ़ नहीं खुलता। मुख्य सड़क पहले सेक्टर में जाती है फिर आप किसी के घर जा सकते हैं। शायद चंडीगढ़ के वास्तुकार का —जिए ने यह सीख मोहनजोदड़ो से ही ली हों ? ऐसा भी अनुमान लगाया जा सकता है। शहर के बीचोंबीच लंबी सड़कें और दोनों तरफ़ समांतर ढकी हुई नालियाँ हैं। बस्ती में ये नालियाँ इसी रूप में हैं। प्रत्येक घर में एक स्नानघर भी है। घर के अंदर से मैले पानी की नालियाँ बाहर हौदी तक आती हैं और फिर बड़ी नालियों में आकर मिल जाती हैं।

कहीं-कहीं वे खुली हो सकती हैं परंतु अधिकतर वे ऊपर से ढकी हुई हैं। इस प्रकार सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मोहनजोदड़ो के नागरिक स्वास्थ्य के प्रति कितने सचेत थे। शहर के कुएँ भी दूर से ही अपनी ओर प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान खींचते हैं। ये कुएँ पक्की-पक्की ईंटों के बने हुए हैं। पुरातत्व विद्वानों के अनुसार केवल मोहनजोदड़ो में ही सात सौ के लगभग कुएँ हैं। इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि सिंधु घाटी की सभ्यता संसार में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची। लेखक यह भी प्रश्न उठाते हैं कि नदी , कुएँ, : कुंड स्नानघर और बेजोड़ पानी निकासी को क्या हम सिंधु घाटी की सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं।

मोहनजोदड़ो की बड़ी बस्ती में घरों की दीवारें ऊँची और मोटी हैं। मोटी दीवार से यह अर्थ लगाया जा सकता है कि यह दो मंजिला घर होगा। इन घरों की एक खास बात यह है कि सामने की दीवार में केवल प्रवेश द्वार है कोई खिड़की नहीं है। ऊपर की मंजिल में खिड़कियाँ हैं। कुछ बहुत बड़े घर भी हैं शायद इनमें कुछ लघु उद्योगों के कारखाने होंगे। ये सभी छोटे-बड़े घर एक लाइन में हैं। अधिकतर घर लगभग तीस गुणा तीस फुट के हैं। सभी घरों की वास्तुकला लगभग एक जैसी है। एक बहुत बड़ा घर है जिसमें दो आँगन और बीस कमरे हैं। इस घर को 'मुखिया' का घर कहा जा सकता है। घरों की खुदाई से एक दाढ़ीवाले याजक-नरेश' और एक प्रसिद्ध 'नर्तकी' की मूर्तियाँ भी मिली हैं।

'नर्तकी' की मूर्ति अब दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है। यहीं पर एक बड़ा घर भी है जिसे 'उपासना केंद्र' भी समझा जा सकता है। इसमें आमने-सामने की दो चौड़ी सीढ़ियाँ ऊपर की मंजिल की ओर जाती हैं। ऊपर की मंजिल अब बिलकुल ध्वस्त हो चुकी है। नगर के पश्चिम में एक 'रंगरेज का कारखाना' भी मिला है जिसे अब सैलानी बड़े चाव से देखते हैं। घरों के बाहर कुछ कुएँ सामूहिक प्रयोग के लिए हैं। शायद ये कुएँ कर्मचारियों और कारीगरों के लिए घर रहे होंगे। बड़े घरों में कुछ छोटे कमरे हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि शहर की आबादी काफ़ी रही होगी। एक विचार यह भी हो सकता है कि ऊपर की मंजिल में मालिक और नीचे के घरों में नौकर-चाकर रहते होंगे। कुछ घरों में सीढ़ियाँ नहीं हैं शायद इन घरों में लकड़ी की सीढ़ी रही है जो बाद में नष्ट हो गई होगी। छोटे घरों की बस्ती में संकरी सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों के पायदान भी ऊँचे हैं। शायद ऐसा जगह की कमी के कारण होता होगा।

लेखक ने अपनी यात्रा के समय जब यह ध्यान दिया कि खिड़कियों और दरवाजों पर छज्जों के निशान नहीं हैं। गरम इलाकों में ऐसा होना आम बात होती है। शायद उस समय इस इलाके में इतनी कड़ी धूप न पड़ती हो। यह तथ्य भी पूरी तरह से स्थापित हो चुका है कि उस समय अच्छी खेती होती थी। यहाँ लोग खेतों की सिंचाई कुओं से करते थे। नहर के प्रमाण यहाँ नहीं मिलते शायद लोग वर्षा के पानी पर अधिक निर्भर रहते होंगे। बाद में वर्षा कम होने लगी हो और लोगों ने कुओं से अधिक पानी निकाला होगा। इस प्रकार भू-जल का स्तर काफ़ी नीचे चला गया हो। यह भी हो सकता है कि पानी के अभाव में

सिंधु घाटी के वासी यहाँ से उजड़कर कहीं चले गए हों और सिंधु घाटी की समृद्ध सभ्यता इस प्रकार नष्ट हो गई हो। लेखक के इस अनुमान से इनकार नहीं किया जा सकता।
मोहनजोदड़ो के घरों और गलियों को देखकर तो अपने राजस्थान का भी खयाल हो आया। राजस्थान और सिंध-गुजरात की दृश्यावली एक-सी है।

मोहनजोदड़ो के घरों में टहलते हुए जैसलमेर के मुहाने पर बसे पीले पत्थरों के खूबसूरत गाँव की याद लेखक के जहन में ताजा हो आई। इस खूबसूरत गाँव में हरदम गरमी का माहौल व्याप्त है। गाँव में घर तो है परंतु घरों में लोग नहीं हैं। कहा जाता है कि कोई डेढ़ सौ साल पहले राजा के साथ तकरार को लेकर इस गाँव के स्वाभिमानी नागरिक रातोंरात अपना घर-बार छोड़कर चले गए थे। बाद में इन घरों के दरवाजे, खिड़कियाँ लोग उठाकर ले गए थे। अब ये घर खंडहर में परिवर्तित हो गए हैं।
परंतु ये घर ढहे नहीं। इन घरों की खिड़कियों, दरवाजों और दीवारों को देखकर ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। लोग चले गए लेकिन वक्त वहीं रह गया। खंडहरों ने उसे वहाँ रोक लिया हो। जैसे सुबह गए लोग शाम को शायद वापस लौट आएँ।। मोहनजोदड़ो में मिली ठोस पहियोंवाली बैलगाड़ी को देखकर लेखक को अपने गाँव की बैलगाड़ी की याद आ गई जिसमें पहले दुल्हन बैठकर ससुराल आया करती थी। बाद में इन गाड़ियों में आरेवाले पहिए और अब हवाई जहाज से उतरे हुए पहियों का प्रयोग होने लगा।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 मुअनजो-दड़ो का अर्थ क्या है?

(क) मिट्टी का टीला
(ख) पत्थर और ईंटों का टीला
(ग) मृतकों या मुर्दों का टीला
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-2 बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है?

(क) 40 फुट
(ख) 25 फुट
(ग) 30 फुट
(घ) 50 फुट

प्र-3 मुअनजो-दड़ो की खुदाई किसके निर्देश पर शुरू हुई थी?

(क) जान मार्शल
(ख) काशी नाथ दीक्षित
(ग) माधो स्वरूप वत्स
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 मुअनजो-दड़ो नगर कितने हेक्टेयर में फैला हुआ था?

(क) 100 हेक्टेयर में
(ख) 200 हेक्टेयर में
(ग) 300 हेक्टेयर में
(घ) 400 हेक्टेयर में

प्र-5 मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊंचे चबूतरे में क्या विद्यमान है?

(क) याजक नरेश की मूर्ति

(ख) कोठार

(ग) बौद्ध स्तूप

(घ) महाकुंड

प्र-6 महाकुंड कितने फुट गहरा है?

(क) 7 फुट

(ख) 10 फुट

(ग) 12 फुट

(घ) 8 फुट

प्र-7 महाकुंड में पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था थी?

(क) नहर

(ख) नदी

(ग) तालाब

(घ) कुआँ

प्र-8 मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद हो आई?

(क) चंडीगढ़

(ख) कुलधरा

(ग) सिंध

(घ) इस्लामाबाद

प्र-9 मुअनजो-दड़ो में अनाज की ढुलाई के लिए किस वाहन का प्रयोग किया जाता रहा होगा?

(क) रेलगाड़ी

(ख) मोटरगाड़ी

(ग) बैलगाड़ी

(घ) ऊँटगाड़ी

प्र-10 मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना भारत के किस नगर के साथ की गई है?

(क) अमृतसर

(ख) चंडीगढ़

(ग) मेरठ

(घ) जोधपुर

उत्तर-

1-(ग) मृतकों या मुर्दों का टीला 2-(ख) 25 फुट 3- (क) जान मार्शल 4-(ख) 200 हेक्टेयर में

5-(ग) बौद्ध स्तूप 6-(क) 7 फुट 7-(घ) कुआँ 8-(ख) कुलधरा 9-(ग) बैलगाड़ी 10-(ख) चंडीगढ़

रचनात्मक-लेखन

- किसी एक भाव, विचार या कथन को विस्तार देने के लिए 150-200 शब्दों में लिखे गए सुसंगत लेख को रचनात्मक लेखन कहते हैं।
- इसमें किसी महत्त्वपूर्ण घटना, दृश्य, समस्या अथवा विषय को शामिल किया जा सकता है। इसे संक्षिप्त (कम शब्दों में) किन्तु सारगर्भित (अर्थपूर्ण) ढंग से लिखा जाता है।
- अनुच्छेद एक तरह से 'निबंध' का ही संक्षिप्त रूप होता है। इसमें दिए गए विषय के किसी एक पक्ष पर अपना विचार प्रस्तुत करना होता है।
- अनुच्छेद अपने-आप में स्वतन्त्र और पूर्ण हो ता है। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव प्राय: या तो आरम्भ में या फिर अन्त में होता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) अनुच्छेद या निबंध या लेख लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि बनानी चाहिए। कभी-कभी प्रश्नपत्रों में पहले से ही रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि दिए होते हैं। आपको उन्हीं रूपरेखा, संकेत-बिंदु इत्यादि को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद लिखना होता है।

(2) अनुच्छेद या लेख में दिए गए विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करना चाहिए। क्योंकि यह सदैव सीमित शब्दों में लिखा जाता है।

(3) अनुच्छेद की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली होनी चाहिए। ताकि पाठक अनुच्छेद पढ़कर आपकी बात को सही से समझ सके।

(4) एक ही बात को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए। इससे आप अपनी बात को कम शब्दों में पूरा नहीं कर पाएँगे।

(5) आपको ये भी ध्यान रखना है कि आप अपने विषय से न भटक जाएँ।

(6) दिए गए निर्देश के अनुसार तय शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें।

(7) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता बनाए रखनी चाहिए।

(8) विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ–

(1) अनुच्छेद में किसी एक भाव, विचार या तथ्य एक बार ही व्यक्त होता है। इसमें अन्य विचारों का कोई महत्त्व नहीं होता है।

(2) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक-दूसरे से गठित और सुसंबद्ध होते है। वाक्य छोटे तथा एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

(3) अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

(4) अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।

मेरे जीवन का लक्ष्य

जीवन एक यात्रा के समान है। जिस प्रकार यात्रा प्रारंभ करने से पहले व्यक्ति अपना गंतव्य स्थान निश्चित करता है, वैसे ही हमें भी अपनी जीवन-यात्रा प्रारंभ करने से पहले अपना कार्य-क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए। हर विद्यार्थी को अपने जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य निश्चित कर लेना चाहिए। लक्ष्यहीन जीव स्वच्छंद रूप से सागर में छोड़ी हुई नाव के समान होता है। ऐसी नौका या तो भँवर में डूब जाती है या चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाती है। मैंने भी अपने जीवन में अध्यापक बनने का निश्चय किया है। मैं उस कर्म को श्रेष्ठ समझता हूँ, जिससे व्यक्ति अपना व अपने परिवार का तो कल्याण कर ही सके, साथ ही समाज को भी दिशा-निर्देश दे सके।

अध्यापक का कार्य भी कुछ इसी प्रकार का है। वह सरस्वती के मंदिर का एक ऐसा पुजारी है जो मनुष्य को सच्चा मानव बनाता है। बिना विद्या के मनुष्य बिना सींग और पूँछ के चलता-फिरता पशु है। महादेवी जी का कहना है-'विकसते मुरझाने को फूल, उदय होता छिपने को चंद" अर्थात फूल मुरझाने के लिए विकसित होता है और चाँद छिपने के लिए, किंतु फूल मुरझाने से पहले अपनी सुगंध का प्रसार करता है और चाँद भी छिपने से पहले अपनी शीतल चाँदनी से संसार को आनंदित करता है। इस तरह में व्यक्ति की योग्यता को तब तक सार्थक नहीं समझता जब तक वह समाज के लिए लाभदायक न हो।

अध्यापक यह कार्य करने की सर्वाधिक क्षमता रखता है। मेरा विश्वास है कि शिक्षा के समुचित विकास के बिना कोई भी नागरिक न अपने अधिकारों को सुरक्षित रख सकता है और न कभी दूसरों के अधिकारों का सम्मान कर सकता है। मैं एक शिक्षक बनकर शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने का प्रयत्न करूंगा। प्रचलित शिक्षा-पद्धति में अनेक कमियाँ हैं। अंग्रेजों का उद्देश्य भारत में सस्ते क्लर्क पैदा करना था।

अत: उन्होंने गुलाम मानसिकता प्रदान करने वाली शिक्षा-व्यवस्था बनाई जो चंद परिवर्तनों को छोड़कर आज भी ज्यों-की-त्यों लागू है। मैं इस क्षेत्र में कुछ परिवर्तन करना चाहूँगा। विद्यालय परिसर के बाहर भी विद्यार्थियों के साथ अत्यंत निकट का संपर्क स्थापित करूंगा और हर विद्यार्थी की योग्यता व रुचि को समझने का प्रयत्न करूंगा।

पढ़ाई के साथ-साथ कला, शिल्प आदि सिखाने का भी भरसक प्रयास करूंगा, जिससे विद्यार्थी केवल नौकरी पर आश्रित न रहे , अपितु वह अन्य क्षेत्रों में भी रोजगारपरक कार्य कर सके। साथ-साथ मैं सदैव शिक्षा, सद्व्यवहार और सहानुभूति द्वारा विद्यार्थियों में श्रेष्ठ भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न करूंगा। इस प्रकार अध्यापक ही बच्चों को मानवता और विश्व-बंधुत्व का पाठ पढ़ाता है। इसीलिए कबीर ने गुरु को गोविंद से भी उच्च आसन पर आसीन किया है-**"गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"** अत: मैं भी सफल और श्रेष्ठ अध्यापक बनकर विद्यार्थियों के मनमंदिर का देवता बनने का सौभाग्य प्राप्त करूंगा।

विज्ञापन का महत्व

जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको 'विज्ञापन" कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है , खाली मकान को किराये पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी , जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता से प्रचलित होने के बावजूद अधिक दिनों तक टिक नहीं पाएँगी , परंतु लोगों की यह सोच गलत है , क्योंकि आज के युग में उत्पादों की संख्या दिनपर-दिन बढ़ती जा रही है, ऐसे में विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है।

किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो उत्पादक और 'उपभोक्ता' दोनों को जोड़ने का कार्य करता है। वह उत्पाद को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था, जैसे-काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि।

उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेजी का है। संचार क्रांति ने जिंदगी को 'स्पीड' दे दी है और मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। लोग जिस वस्तु की खोज में रहते हैं, विज्ञापन द्वारा ही उसे कम खर्च में सुविधा के साथ प्राप्त कर लेते हैं, यही विज्ञापन की पूर्ण सार्थकता है। विज्ञापन से व्यक्ति अपने व्यापार व

व्यवसाय को फैला सकता है। अत: आधुनिक संसार विज्ञापन का संसार है। यदि हम किसी समाचार-पत्र या पत्रिका के पन्ने उलटते हैं तो विभिन्न प्रकार के विज्ञापन हमारा स्वागत करते हुए दिखाई देते हैं।

विभिन्न मुद्राओं के चित्र, भावपूर्ण शैली, लालसा व कौतूहल पैदा करने वाले विज्ञापनों के ढंग हमारा मन मोह लेते हैं। घर से निकलते ही सड़कों पर होर्डिंग्स आपको रुकने पर विवश कर देते हैं तो घर के अंदर टी०वी० हर समय आपको कोई-न-कोई उत्पाद दिखाता रहता है। यह विज्ञापन का संसार इतना आकर्षण पैदा करता है कि संयमी व चतुर भी इससे बच नहीं पाता। आज विज्ञापन एक व्यापार बन गया है। विज्ञापन द्वारा व्यापार बढ़ता है। किसी वस्तु की माँग बढ़ती है। विज्ञापन के सिर्फ़ लाभ ही हों, ऐसा नहीं है। इसके नुकसान भी हैं।

विज्ञापन व्यवसाय के विश्वास को डगमगा देता है। धूर्तता के कारण वस्तु या सेवा के हानिकारक पक्षों को नहीं दिखाया जाता। कंपनियाँ बिक्री बढ़ाने के चक्कर में अश्लीलता की तमाम हदें पार कर जाती हैं। सरकार को चाहिए कि ऐसे विज्ञापनों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए तथा दोषियों को सजा दे। भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ़ भी सख्त कार्यवाही होनी चाहिए।

युवा असंतोष

आज चारों तरफ असंतोष का माहौल है। बच्चे-बूढ़े , युवक-प्रौढ़, स्त्री-पुरुष, नेता-जनता सभी असंतुष्ट हैं। युवा वर्ग विशेष रूप से असंतुष्ट दिखता है। घर-बाहर सभी जगह उसे किसी-न-किसी को कोसते हुए देखा-सुना जा सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? इसका एक ही कारण नजर आता है नेताओं के खोखले आश्वासन। युवा वर्ग को शिक्षा ग्रहण करते समय बड़े-बड़े सब्ज़बाग दिखाए जाते हैं। वह मेहनत से डिग्रियाँ हासिल करता है , परंतु जब वह व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करता है तो खुद को पराजित पाता है। उसे अपनी डिग्रियों की निरर्थकता का अहसास हो जाता है। इनके बल पर रोजगार नहीं मिलता। इसके अलावा, हर क्षेत्र में शिक्षितों की भीड़ दिखाई देती है। वह यह भी देखता है कि जो सिफ़ारिशी है, वह योग्यता न होने पर भी मौज कर रहा है वह सब कुछ प्राप्त कर रहा है जिसका वह वास्तविक अधिकारी नहीं है।

वस्तुत: उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की इच्छाएँ भड़का दी जाती हैं। राजनीति से संबंधित लोग तरह-तरह के प्रलोभन देकर उन्हें भड़का देते हैं। राजनीतिज्ञ युवाओं का इस्तेमाल करते हैं। वे उन्हें चुनाव लड़वाते हैं। कुछ वास्तविक और नकली माँगों , सुविधाओं के नाम पर हड़तालें करवाई जाती हैं। इन सबका परिणाम शून्य निकलता है। युवा लक्ष्य से भटक जाते हैं। बेकारों की अथाह भीड़ को निराशा और असंतोष के सिवाय क्या मिल सकता है! जबकि समाज युवाओं को 'कल का भविष्य' कहता है। इन्हें उन्नति का मूल कारण मानता है, परंतु सरकारी व गैर-सरकारी क्षेत्र में उन्हें मात्र बरगलाया जाता है।

उनकी वास्तविक जरूरतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। उन्हें महज सपने दिखाए जाते हैं। पढ़ाई-लिखाई, शिक्षा, सभ्यता-संस्कृति, राजनीति और सामाजिकता हर क्षेत्र में उन्हें बड़े-बड़े सपने दिखाए जाते हैं , परंतु ये सपने हकीकत से बेहद दूर होते हैं। जब सपने पूरे न हों तो असंतोष का जन्म होना स्वाभाविक है। भ्रष्टाचार के द्वारा जिन युवाओं के सपने पूरे किए जाते हैं, ऐसे लोग आगे भी अनैतिक कार्यों में लिप्त पाए जाते हैं।

इनकी शान-शौकत भरी बनावटी जिंदगी आम युवा में हीनता का भाव जगाकर उन्हें असंतुष्ट बना देती है। ऐसे में जब असंतोष, अतृप्ति, लूट-खसोट, आपाधापी आज के व्यावहारिक जीवन का स्थायी अंग बन चुके हैं तो युवा से संतुष्टि की उम्मीद कैसे की जा सकती है ? समाज के मूल्य भरभराकर गिर रहे हैं , अनैतिकता सम्मान पा रही है, तो युवा मूल्यों पर आधारित जीवन जीकर आगे नहीं बढ़ सकते।

बेरोजगारी की समस्या

आजकल जो समस्याएँ दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ी हैं , इनमें जनसंख्या-वृद्धि, महँगाई, बेरोजगारी आदि मुख्य हैं। इनमें से बेरोजगारी की समस्या ऐसी है जो देश के विकास में बाधक होने के साथ ही अनेक समस्याओं की जड़ बन गई है। किसी व्यक्ति के साथ बेरोजगारी की स्थिति तब उत्पन्न होती है , जब उसे उसकीयोग्यता, क्षमता और कार्य-कुशलता के अनुरूप काम नहीं मिलता , जबकि वह काम करने के लिए तैयार रहता है।

बेरोजगारी की समस्या शहर और गाँव दोनों ही जगहों पर पाई जाती है। नवीनतम आँकड़ों से पता चला है कि इस समय हमारे देश में ढाई करोड़ बेरोजगार हैं। यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है। यद्यपि सरकार और उद्यमियों दुवारा इसे कम करने का प्रयास किया जाता है , पर यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरा साबित होता है। हमारे देश में विविध रूपों में बेरोज़गारी पाई जाती है। पहले वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो पढ़-लिखकर शिक्षित और उच्च शिक्षित हैं। यह वर्ग मज़दूरी नहीं करना चाहता , क्योंकि ऐसा करने में उसकी शिक्षा आडे आती है।

दूसरे वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो अनपड़ और अप्रशिक्षित हैं। तीसरे वर्ग में व बेरोज़गार आत्ते हैं जो काम तो कर रहे है , पर उन्हें अपनी योग्यता और अनुभव के अनुपात में बहुत कम वेतन मिलता है। चौथे और अंतिम वर्ग में उन बेरोजगारों को रख सकते है, जिन्हें साल मैं कुछ ही महीने कम मिल माता है। खेती में काम करने वाले मज़दूरों और किसानों को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। बेरोज़गारी के कारणों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इसका मुख्य कारण ओद्दयोगीकरण और नवीनतम साधनों की खोज एवं विकास है। जो काम हजारों मज़दूरों द्वारा महीनों में पूरे किए जाते थे , आज मशीनों की मदद से कुछ ही मज़दूरों की सहायता से कुछ ही दिनों में पूरे कर लिए जाते हैं।

उदाहरणस्वरूप जिन बैंकों में पहले सौ-सौ क्लर्क काम करते थे , उनका काम अब चार-पाँच कंप्यूटरों दुवारा किया जा रहा है। बेरोजगारी का दूसरा सबसे बड़ा कारण है जनसंख्या-वृदूधि। आजादी मिलने के बाद सरकार ने रोज़गार के नए-नए अवसरों का सृजन करने के लिए नए पदों का सृजन किया और कल-कारखानों को स्थापना की। इससे लोगों को रोजगार तो मिला , पर बढती जनसंख्या के कारण ये प्रयास नाकाफी सिद्ध हो रहै हैं। बेरोज़गारी का अन्य करण है-गलत शिक्षा – नीति, जिसका रोजगार से कुछ भी लेना – देना नहीं है।

फलता बेरोजगारी दिन-पर दिन बढती जा रही है। बेरोजगारी एक और जहाँ परिवार , समाज और राष्ट्र के प्रति बाधक है, वहीँ यह खाली दिमाग शैतान का घर होने की स्थिति उत्पन्न करती है। ऐसै बेरोजगार युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग ममाज एवं राष्ट्र विरोधी कार्यों में करते हैं। पलतः सामाजिक शांति भंग होती है तथा अपराध का ग्राफ बढ़ता है। बेरोज़गारी की समस्या से छुटकारा पाने के लिए शिक्षा को रोजगार से जोड़ने को आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा को त्रिदूयालयों में लागू करने के अलावा अनिवार्य बनाना चाहिए।

स्कूली पाट्यक्रमों में श्रम की महिमा संबधी पाठ शामिल किया जाना चाहिए ताकि युवावर्ग श्रम के प्रति अच्छी सोच पैदा कर सके। इसके अलावा एक बार गुन: लघु एवं कुटीर उदूयोग की स्थापना एवं उनके विकास के लिए उचित वातावरण बनाने को आवश्यकता है। किसानों को खाली समय में दुग्ध उत्पादन , मधुमक्खी पालन, जैसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस काम में सरकार के अलावा धनी लोगों को भी आगे आना चाहिए ताकि भारत बेरोजगार मुक्त बन सके और प्रगति के पथ पर चलते हुए विकास की नई ऊँचाइयाँ छू सके।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता

विद्यार्थी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल है। इस काल में सीखी गई बातों पर ही पूरा जीवन निर्भर है। और असुंदर बनाने में इस काल का सर्वाधिक महत्व है। जिस प्रकार किसी प्रासाद की मजबूती और उसकी नींव या आधारशिला की मजबूती पर निर्भर करती है , उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन की सुख-शांति , विचार और व्यवहार उसके विद्यार्थी-जीवन पर निर्भर करता है।

विद्यार्थी-जीवन में बालक का मस्तिष्क गीली मिट्टी की तरह होता है, जिसे मनचाहा आकार प्रदान करके भाँति-भाँति के खिलौने और मूर्तियाँ बनाई जा हैं। उसी मिट्टी के सूख जाने और पका लिए जाने पर उसे और कोई नया आकार नहीं दिया जा सकता। अत: इस काल में विद्यार्थी अनुशासन , सच्चरित्रता, त्याग सदाचारिता आदि का भरपूर पालन करना चाहिए ताकि वह समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान दे सके। हालाँकि आज विद्यार्थियों में बढ़ती के लिए चिंता का विषय है।

अनुशासनहीनता के मूल कारणों पर यदि विचार करें तो ज्ञात होता है कि इसका पिता के संस्कार तथा उसकी शरारतों को अनदेखा किया जाना है। बच्चे की अनुशासनहीनता की करे या विद्यालय प्रशासन माता-पिता अपने बच्चे के पक्ष में खड़े हो जाते हैं तथा उसे निर्दोष बताने हैं। अनुशासनहीन विद्यार्थियों का मनोबल और भी बढ़ जाता है। अनुशासनहीनता बढ़ाने में वर्तमान शिक्षाप्रणाली भी कम उत्तरदायी नहीं है।

विद्यार्थियों को रट्टू तोता बनाने वाली शिक्षा से व्यावहारिक ज्ञान नहीं हो पाता। इसके अलावा , पाठ्यक्रम में नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया गया है। विद्यालयों में सुर्विधाओं की कमी, कुप्रबंधन, अध्यापकों की कमी, उनकी अरुचिकर शिक्षण-विधि, खेल-कूद की सुविधाओं का घोर अभाव , पाठ्यक्रम की अनुपयोगिता, शिक्षा का रोजगारपरक न होना , उच्च शिक्षा पाकर भी रोजगार और नौकरी की अनिश्चयभरी स्थिति विद्यार्थियों के मन में शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न करती है।

विद्यार्थियों की मनोदशा का अनुचित फ़ायदा राजनैतिक तत्व उठाते हैं। वे विद्यार्थियों को भड़काकर स्कूल-कॉलेज बंद करवाने तथा उनका बहिष्कार करने के लिए प्रेरित करते हैं। इससे विद्यार्थियों बढ़ती है। विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना उत्पन्न करने के लिए माता-पिता , विद्यालय-प्रशासन और सरकारी तंत्र तीनों को ही अपनी-अपनी भूमिका का उचित निर्वहन करना होगा। इसके अलावा पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा और चारित्रिक शिक्षा को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।

प्रतिदिन प्रार्थना-सभा में नैतिक शिक्षा देने के अलावा इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाना चाहिए। विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए इतनी सुविधाएँ बढ़ानी चाहिए कि विद्यालय और वर्गकक्ष में उनका मन लगे। निष्कर्षत: आज शिक्षा-प्रणाली और शिक्षा-व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव लाने की आवश्यकता है। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाकर तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए नैतिक सीख देकर अनुशासनहीनता की बढ़ती समस्या पर अंकुश लगाया जा सकता है।

विधाओं पर आधारित प्रश्न हेतु

कहानी - कहानी गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक , भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। साहित्य की सभी विधाओ में कहानी सबसे पुरानी विधा है। जनजीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। प्राचीन काल में कहानियों को कथा, आख्यायिका, गल्प आदि कहा जाता था। वर्तमान दौर में भी कहानी सबसे अधिक प्रचलित है। साहित्य में यह अब अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। पुराने समय मे कहानी का मतलब था उपदेश देना या मनोरंजन करना। आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओ को व्यक्त करना है। यही कारण है कि प्राचीन काल की कहानी से आज की कहानी बिल्कुल भिन्न हो गयी है। आधुनिक काल में इसकी आत्मा और शैली दोनों बदल गई है।

कहानी के स्वरूप का बोध कराने वाली कुछ परिभाषाएँ -

प्रसिद्ध अमरीकी लेखक एडगर एलन पो के अनुसार "कहानी वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने के लिये लिखी गई हो, जिसमें उस प्रभाव को उत्पन्न करने में सहायक तत्वों के अतिरिक्ति और कुछ न हो और जो अपने आप में पूर्ण हो'।

प्रसिद्ध समीक्षक विलियम हेनरी के अनुसार, "लघुकथा में केवल एक ही मूलभाव होना चाहिए। उस मूलभाव का विकास केवल एक ही उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए सरल ढंग से तर्कपूर्ण निष्कर्षों के साथ करना चाहिए."

जान फास्टर ने कहानी की परिभाषा इस प्रकार दी है, "असाधारण घटनाओ की वह श्रृंखला जो परस्पर सम्बद्ध होकर एक चरम परिणाम पर पहुँचाने वाली हो।"

मुंशी प्रेमचंद्र ने कहानी के बारे में लिखा है- "कहानी का उद्देश्य सम्पूर्ण मनुष्य को चित्रित करना नहीं, अपितु उसके चरित्र का एक अंग दिखलाना है।"

इस प्रकार कहानी "हिन्दी गद्य की वह विधा है जिसमें लेखक किसी घटना , पात्र अथवा समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा देता है , जिसे पढ़कर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न होता है , उसे कहानी कहते हैं "। प्राचीनकाल में वीरों तथा राजाओं के शौर्य , प्रेम, न्याय, ज्ञान, वैराग्य, साहस, समुद्री यात्रा, अगम्य पर्वतीय प्रदेशों में प्राणियों का अस्तित्व आदि की कथाएँ ही कहानी के रूप होती थीं।

कहानी के तत्व - कहानी के कुछ विशेष तत्व होते हैं जो कहानी को पूर्णता प्रदान करते हैं। कहानी के निम्नलिखित छह तत्व होते हैं- 1-कथावस्तु 2-चरित्र-चित्रण 3-कथोपकथन 4-देशकाल 5-भाषा-शैली 6-उद्देश्य

कथावस्तु - कहानी के ढाँचे को कथानक अथवा कथावस्तु कहा जाता है। इसे कहानी का केंद्र माना जाता है। इसके अभाव में कहानी की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसके भी चार अंग होते हैं- आरम्भ, आरोह, चरम स्थिति तथा अवरोह। यह कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। इसके लिए वस्तु, विषयवस्तु, कथा तथा कथानक आदि समानार्थी शब्द हैं। अंग्रेजी के ' प्लाट ' तथा ' थीम ' शब्द इसी के पर्याय हैं। इस तत्व में कहानीकार अपने जीवन के अनुभवों को प्रस्तुत करता है ।

चरित्र चित्रण- कहानी का संचालन उसके पात्रों के द्वारा ही होता है तथा पात्रों के गुण-दोष को 'चरित्र चित्रण' कहा जाता है। कहानी में लेखक की दृष्टि प्रमुख पात्र के चरित्र पर अधिक रहती है। इसलिए अन्य पात्रों के चरित्र का विकास मुख्य पात्र के सहारे ही होता है। एक अच्छी कहानी में पात्रों की संख्या अधिक नही होती है।

कथावस्तु के बाद कहानियों में पात्र और उनके चरित्र-चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। एक अच्छा कहानीकार अपनी कथावस्तु में घटनाओं और दृश्यों के अनुकूल ही पात्रों की रचना करता है तथा उनके चरित्र का विकास करता है । बाबू गुलाबराय ने कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है-

"आजकल कथानक को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना कि चरित्र-चित्रण और अभिव्यक्ति को।" चरित्र -चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से है। कहानी में पात्रों की संख्या कम से कम होती है । कहानी में पात्रों के चरित्र का पूर्ण विकास क्रम नहीं दिखाया जाता, वरन् प्रायः बने बनाए चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे। कहानी में पात्र और कथावस्तु का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है । दोनों मिलकर कहानी के केन्द्रीय भाव को व्यक्त करते हैं। कहानी में कुछ पात्र सामान्य होते हैं और कुछ प्रतीकात्मक। कहानी का कलेवर छोटा होता है, इसलिए उसमें केवल नायक के चरित्र को ही उभारा जाता है। किसी विशेष परिस्थिति में रखकर कहानीकार नायक के चरित्र का उद्घाटन करना अपना उद्देश्य समझता है। चरित्र- चित्रण की सफलता के लिए पात्रों का गतिशील होना आवश्यक होता है। स्थिर पात्रों का चरित्रांकन निर्जीव-सा प्रतीत होता है।

कथोपकथन या संवाद- कहानी में संवाद का भी विशेष महत्त्व है। इनके द्वारा पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द एवं अन्य मनोभावों को प्रकट किया जाता है। पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप को कथोपकथन कहते हैं। कथोपकथन के दो कार्य होते हैं- पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करना और कथा की गति को विकसित करना। संक्षिप्त एवं संयत कथोपकथन कहानी में आकर्षण उत्पन्न करने के साथ-साथ पाठकों की जिज्ञासा को शान्त करते हैं। कथोपकथन का प्रत्येक शब्द सार्थक और सोद्देश्य होना चाहिए ताकि वह पाठकों पर अपना प्रभाव उत्पन्न कर सके। बाबू गुलाबराय के शब्दों में "कथोपकथन या वार्तालाप द्वारा ही हम पात्रों के हृदयगत भावों को जान सकते हैं। यदि वार्तालाप पात्रों के चरित्र के अनुकूल न हो, तो हम उनके चरित्र का मूल्यांकन करने में भूल कर जाएंगे।" कहानी की रोचकता में वृद्धि करने के लिए कथोपकथन अनिवार्य होते हैं। बौद्धिक और शब्दाडम्बरों से जकड़े हुए कथोपकथन कहानी की स्वाभाविक गति में बाधा उत्पन्न करते हैं।

देशकाल या वातावरण- किसी कहानी को असरदार बनाने के लिए ज़रूरी है कि देश काल का पूरा ध्यान रखा जाये, यह कहानी में वास्तविकता लाता है। कहानी को सजीव एवं स्वाभाविक बनाने में देशकाल या वातावरण का सर्वाधिक महत्व है। प्रत्येक कहानी में किसी स्थान, समय और परिस्थिति का चित्रण होता है, इसी चित्रण को वातावरण की संज्ञा प्रदान की जाती है। सफल वातावरण पाठक के मन पर संवेदनात्मक प्रभाव डालता है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने इस सम्बन्ध में लिखा है "वास्तविक जीवन देश, काल और जीवन की विभिन्न सत्-असत् परिस्थितियों से निर्मित होता है। अतएव इन तत्वों का एक स्थान पर संचयन और चित्रण करना कहानी में वातावरण उपस्थित करता है। कहानी की कथावस्तु और उसके संचालक पात्रों का सम्बन्ध उक्त स्थितियों से होता है। " कहानी में देशकाल और वातावरण का चित्रण सरल, संक्षिप्त और पात्रों की मानसिक परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। वातावरण का अत्यधिक विस्तार कहानी में शिथिलता उत्पन्न कर देता है। एक श्रेष्ठ कहानी में तीनों प्रकार के वातावरण का समन्वय होना आवश्यक होता है । इस प्रकार कहानी में देशकाल और वातावरण वह तत्व होता है जो कहानी के सौन्दर्य में ही वृद्धि नहीं करता वरन् पाठक को निरन्तर आकर्षित और प्रेरित करता है। देशकाल का सर्वाधिक उपयोग आंचलिक कहानियों में कहानीकार करता है। ऐतिहासिक कहानियों में भी देशकाल या वातावरण की महती भूमिका होती है। एक सफल कहानीकार वही है जो देशकाल का सूक्ष्म, सटीक एवं उपयुक्त चित्रण कर पाठक को उस वातावरण का मानसिक प्रत्यक्षीकरण करा देता है।

भाषा-शैली- कहानी के प्रस्तुतीकरण में कलात्मकता लाने के लिए देशकाल के अनुसार अलग-अलग भाषा व शैली से सजाया जाता है। भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन होती है। कहानी जनसामान्य की विधा है, इसलिए कहानी की भाषा ऐसी होनी चाहिए, जो सरल, सजीव और प्रवाहपूर्ण हो। सफल भाषा वही होती है जो कहानी की कथावस्तु, पात्र-योजना, शैली और वातावरण के अनुकूल हो। निरर्थक शब्द योजना और कठिन वाक्य संरचना कहानी के सौन्दर्य तथा स्वाभाविक गति को नष्ट कर देती है। इसलिए कहानी की

भाषा में प्रवाह, भावानुभूति, आलंकारिकता और बिम्बानुभूति आदि गुणों का होना अनिवार्य होता है। उसमें आवश्यकतानुरूप लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग भी होना चाहिए।

कहानी कला के समस्त तत्वों का उपयोग करने की रीति शैली कहलाती है। बाबू गुलाबराय ने शैली का विवेचन करते हुए लिखा है "शैली का सम्बन्ध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् सब तत्वों से है और उसकी अच्छाई और बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता

है। कहानी की प्रेषणीयता अर्थात् दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति शैली पर ही निर्भर करती है।" किसी बात के कहने या लिखने के विशेष ढंग या प्रकार को शैली कहते हैं। शैली का सम्बन्ध केवल शब्दों से ही नहीं अपितु विचारों और भावों से भी होता है। शैली की कलात्मकता ही कहानी के प्रति पाठक की रोचकता में वृद्धि करती है।

उद्देश्य- हर कहानी का अपना एक अलग उद्देश्य होता है , यह केवल मनोरंजन हेतु ही नहीं होता , इससे लोगों को प्रेरणा भी जाती है। धर्म प्रचारक अपने उद्देश्य को लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का ही सहारा लेते हैं। प्रत्येक कहानी की रचना का एक उद्देश्य होता है। मनोरंजन से लेकर गम्भीर समस्या-निरूपण तक कहानी का उद्देश्य हो सकता है। कहानी की रचना के पीछे एक ऐसा उद्देश्य छिपा रहता है जिससे पाठक अभिभूत होकर कुछ सोचने के लिए विवश हो जाता है। किसी विशेष प्रवृत्ति को जाग्रत करके हृदय संवेद्य बनाना, किसी विचारभाव या सिद्धान्त का प्रतिपादन करना अथवा सुन्दर मानवीय भावों का चित्रण करना कहानी का उद्देश्य हो सकता है। आज कहानी में अनेक प्रकार की बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निदर्शन भी किया जाने लगा है। मानव-मूल्यों की व्याख्या करना तथा मानव के शाश्वत भावों, अनुभूतियों और समस्याओं पर प्रकाश डालना ही कहानी का उद्देश्य है। कहानीकार के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा आधुनिक कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है। बाबू गुलाबराय ने कहानी के उद्देश्य के सम्बन्ध में लिखा है "प्रत्येक कहानी में कोई उद्देश्य या लक्ष्य अवश्य रहता है। कहानी का ध्येय केवल मनोरंजन या लम्बी रातों को काट कर छोटा करना नहीं है, वरन् जीवन सम्बन्धी कुछ तथ्य देना या मानव मन का निकट परिचय कराना है।

कहानी के लक्षण:

1. कहानी मानवीय संवेदनाओ की अभिव्यक्ति है।
2. कहानी में कथावस्तु का आकार लघु होता है।
3. कहानी का एक निश्चित उद्देश्य होता है।
4. मनोरंजन के साथ-साथ जीवन की समस्याओं का चित्रण करना भी कहानी का लक्ष्य होता है।
5. कहानी को एक बैठक में सरलता से पढ़ा जा सकता है।
6. कहानी में एक ही केंद्रीय संवेदना होती है तथा उसके सभी तत्व इसी संवेदना को उभारने में सहायता देते हैं।
7. कहानी मूलतः मानव जीवन से सम्बद्ध होती है। उसमें केवल कल्पनिकता न होकर यथार्थ का भी पुट रहता है।

कहानी में शीर्षक का महत्व है

कहानी में शीर्षक का भी विशिष्ट महत्व है। यह संक्षिप्त, आकर्षक एवं कथावस्तु से सम्बद्ध होना चाहिए। शीर्षक ऐसा हो जिससे पाठक कहानी पढ़ने के लिए उत्सुक हो जाय तभी उसे सफल शीर्षक कहा जा सकता है।

कहानी में कथोपकथन का महत्व है

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने इस सम्बन्ध में लिखा है “कथोपकथन का तारतम्य ऐसा हो जैसे नदी में लहरों की गति और उस पर वायु का सह संगीत, जिसके सहारे पाठक के हृदय में उत्तरोत्तर कहानी पढ़ने की

आकांक्षा और जिज्ञासा दोनों बनी रहें। कथोपकथन का प्रत्येक शब्द सार्थक और सोद्देश्य होना चाहिए। एक श्रेष्ठ कहानी वही है जिसके संवाद छोटे-छोटे, पात्रानुकूल एवं चरित्र अभिव्यंजक हों।

कहानी में वातावरण का महत्व

1- पाठक की इन्द्रियों को प्रभावित करने वाला
2- सौन्दर्य वृत्ति को तृप्त करने वाला
3- पाठक में सच्ची सहानुभूति जाग्रत करने वाला।

कहानी में उद्देश्य का महत्व-

कहानी का मूल उद्देश्य मानवता के शाश्वत मूल्यों की व्याख्या करना तथा जीवन और जगत के मन पर पड़े प्रभाव को अभिव्यक्त करना है। कहानी का उद्देश्य मनोरंजन, उपदेशात्मकता, कौतूहल सृष्टि, आदर्शवाद, समस्या, सुधार, प्रभावात्मकता, मनोवैज्ञानिकता आदि कुछ भी हो सकता है।

कहानी में कथावस्तु का महत्व

कथावस्तु को घटनाओं का आलेख भी कहा जाता है क्योंकि कहानी की सफलता उसमें निहित घटनाओं की कलात्मकता पर आधारित होती है। मौलिकता, संक्षिप्तता, रोचकता, क्रमबद्धता, उत्सुकता, शिल्पगत नवीनता, और विश्वसनीयता आदि कथावस्तु के प्रमुख गुण होते हैं। कथावस्तु के सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक आदि अनेक विषय हो सकते हैं। कहानी की सरसता कथानक के विकास पर निर्भर करती है विकास की पाँच स्थितियाँ होती हैं- 1.आरम्भ 2. आरोह 3. अवरोह 4. चरमसीमा 5. अन्त

नाटक- नाटक नट शब्द से बना है जिसका आशय है - सात्विक भावों का अभिनय। नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है। इसका प्रदर्शन रंगमंच पर होता है। भारतेंदु हरिशचन्द्र ने नाटक के लक्षण देते हुए लिखा है- नाटक शब्द का अर्थ नट लोगों की क्रिया है। दृश्य-काव्य की संज्ञा-रूपक है। रूपकों में नाटक ही सबसे मुख्य है इससे रूपक मात्र को नाटक कहते है। हिन्दी मे नाटक लिखने का प्रारंभ पद्म के द्वारा हुआ। लेकिन आज के नाटकों मे गद्य की प्रमुखता है। नाटक गद्य का वह कथात्मक रूप है , जिसे अभिनय संगीत, नृत्य, संवाद आदि के माध्यम से रंगमंच पर अभिनीत किया जा सकता है।

नाटक काव्य का ही एक रूप है। जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक या दृश्य-काव्य कहते हैं। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है। दृश्य काव्य होने के कारण यह लोक चेतना से अपेक्षा कृत अधिक घनिष्ठ रूप से संबद्धहै।

नाटक की परिभाषा- बाबू गुलाबराय के अनुसार "नाटक में जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में संकुचित करके उसको सजीव पात्रों द्वारा एक चलते-फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है। " नाटक में फैले हुए जीवन व्यापार को ऐसी व्यवस्था के साथ रखते हैं कि अधिक से अधिक प्रभाव उत्पन्न हो सके। नाटक का प्रमुख उपादान है उसकी रंगमंचीयता। हिन्दी साहित्य मे नाटकों का विकास वास्तव मे आधुनिक काल मे भारतेंदु युग में हुआ।

नाटक के तत्व- पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार नाटक के प्रमुख तत्व हैं:

1. कथावस्तु 2. पात्र चरित्र-चित्रण 3. संवाद या कथोपकथन 4. देशकाल और वातावरण (संकलनत्रय) 5. भाषा-शैली 6. उद्देश्य

भारतीय विद्वानों के अनुसार नाटक के तत्व इस प्रकार है:

1. कथावस्तु 2. नेता (नायक) 3. अभिनय 4. रस 5. वृत्ति

[1] कथावस्तु- इससे तात्पर्य कथावस्तु से है। कथावस्तु नाटक का प्रधान तत्व है। भारतीय आचार्यो ने वस्तु के स्रोत संगठन की दृष्टि से नाट्य वस्तु का विस्तृत विवेचन किया है। नाटयवस्तु का समुचित विकास हो इसलिए भारतीय नाटयशास्त्र में वस्तु के भेद आदि का विस्तार से विवेचन किया गया है। साथ

ही नाटयवस्तु जिन संवादों के माध्यम से प्रकट होती है, उस पर भी ध्यान दिया है।

[2] नेता- भारतीय नाटयशास्त्र के अनुसार दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है- नेता। इसके अंतर्गत नाटक का नायक तथा उसके सहयोगी चरित्र योजना का विश्लेषण किया जाता है। भारतीय नाटयशास्त्र में नेता या नायक सभी दृष्टियों से विशेष माना जाता है। उसके कार्य व्यापार की कल्पना उदात्त, उदार दृष्टियों से की गई है।

भारतीय आचार्यों ने चार प्रकार के नायक या नेता माने हैं-

1- धीरोदात्त 2- धीरललित 3- धीरप्रशांत 4- धीरोद्धत।

भारतीय आचार्यों ने नायिका के निम्न गुण माने है-

1- रूपवती 2- गुणवंती 3- शीलवती 4- यौवना 5- माधुर्य आदि

[3] रस- भारतीय नाटयशास्त्र में रस की सिद्धि ही नाटक का उद्देश्य मानी गई है। भरतमुनि के अनुसार रस के अभाव में नाटक में कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। नाटक में श्रृंगार रस, वीर, शांत में से कोई एक रस प्रमुख होना चाहिए और शेष रसों की निष्पति अंगी रस के अश्रित रूप में होनी चाहिए। भारतीय नाट्य शास्त्र में रस प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन किया गया है।

[4] अभिनय- नाट्य के समुचित विषय का या वस्तु विधान का प्रेक्षागृहों में बने रंगमंच पर अभिनेताओं द्वारा प्रस्तुतीकरण अभिनय कहलाता है। भारतीय नाट्य शास्त्र में अभिनय के भेद तथा रंगमंच का विस्तार से विवेचन किया गया है। अभिनय मुख्यत: चार प्रकार का होता है - आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक।

[5] वृत्ति- नायक (पात्र) के कार्य-व्यापार को नाटक में वृत्ति कहा जाता है। वृत्तियाँ चार प्रकार की होती हैं - कौशिकी, सात्विती , आरभटी और भारती

पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के अनुसार नाटक के तत्व- पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के अनुसार नाटक के निम्न तत्व होते हैं-

[1]- कथावस्तु या कथानक

यह नाटक का प्राणतत्व है। कथावस्तु ऐतिहासिक, पौराणिक, कल्पित, मिश्रित किसी भी प्रकार की हो सकती है। आजकल ऐतिहासिक, पौराणिक कथा प्रसंगों का प्रतीकात्मक तथा मिथकीय प्रयोग कथावस्तु के रूप में किया जा रहा है। कथावस्तु दो प्रकार की होती है - आधिकारिक कथा और प्रासंगिक कथा। पाश्चात्य धारणा के अनुसार कथा विकास में संघर्ष तत्व प्रधान होता है तथा नाटक का अंत प्रायः दुखांत होता है।

[2]- चरित्र चित्रण

पात्र योजना तथा चरित्र चित्रण के प्रति पाश्चात्य दृष्टि स्वाभविक और यथार्थ रही है। अतः भारतीय आचार्यों के समान नायक तथा अन्य चरित्रों के प्रति आदर्शवादी दृष्टि पाश्चात्य विद्वानों की नहीं है। अरस्तु के अनुसार चरित्र चित्रण में नाटककार को चार बातों की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए। अच्छा चरित्र, चरित्र का औचित्य, जीवन के अनुरूप और चरित्र में सुसंगति। चरित्र चित्रण से तात्पर्य उसके आंतरिक व्यक्तित्व और बाहय व्यक्तित्व के प्रकटन से है। यह प्रकटन नाट्य व्यापार तथा संवादों के माध्यम से हो सकता है। पात्रों को व्यक्ति पात्र तथा प्रतिनिधि पात्र दो भागों में विभाजित किया जा सकताहै।

[3]- कथोपकथन या संवाद-

नाटक संवादों के द्वारा लिखा जाता है। पात्र के चरित्र चित्रण का विकास, रोचकता, वातावरण सृजन संवादों के माध्यम से होता है। इस तत्व के अभाव में नाटक की कल्पना ही साकार नहीं हो सकती। संवाद जितने सार्थक, संक्षिप्त, वक्र, शक्ति संपन्न होते हैं, नाटक उतना ही सफल होता है। अतः संवादों की भाषा, सरल, सुबोध और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।

[4]- देशकाल वातावरण-

नाटक में जिस देशकाल का दृश्य उपस्थित किया जाता है, उसे साकार करने के लिए नेपथ्य, वेषभूषा, रंगभूषा, भाषा, सांस्कृतिक संकेत आदि पर ध्यान देना अनिवार्य है। पाश्चात्य नाट्य- विदों ने

देशकाल का निर्वाह करते समय संकलन त्रय का प्रतिपादन किया है। संकलन त्रय अर्थात् स्थल, समय, काल की एकता। नाटक में कथा के युग के अनुसार हो और उसमें समाज और राजनीति की परिस्थितियों का अंकन किया गया हो। ऐतिहासिक नाटकों में तो इन तत्वों का निर्वाह अत्यंत अपरिहार्य है। सफल नाटककार दृश्य विधान, मंच-व्यवस्था वेषभूषा, अभिनय आदि के द्वारा सजीव वातावरण की सृष्टि कर लेता है।

[5]- भाषा-शैली

संवादों को सरस एवं प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा शैली का आश्रय लेना अनिवार्य है। नाटक की भाषा सहज, सरल, सजीव, अभिनयानुकूल होनी चाहिए। गंभीर तथा हास्य-व्यंग्य प्रधान शैली तो सर्वमान्य है। यह माना जाता है कि सफल शैली के लिए सरलता अनिवार्य शर्त है। साथ ही वह कलात्मक एवं प्रभावशाली भी होनी चाहिए। भाषा के अलंकृत , लाक्षणिक, वक्र और प्रभावपूर्ण होने पर नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है।

[6]- उद्देश्य

पाश्चात्य परंपरा के अनुसार जीवन यथार्थ, जीवन संघर्ष को सामने लाना नाटक का उद्देश्य है। नाटक मात्र मनोरंजन के साधन नहीं है। यथार्थ से जूझते हुए अपने समाज की सार्थक प्रस्तुति नाटक का लक्ष्य रहा है।

नाटकीय शिक्षण का महत्त्व- नाटक किसी घटना को हमारी कल्पना से निकाल कर मंच पर साकार करती है। जिसके विभिन्न आयाम एवं महत्व इस प्रकार हैं-

1- कविता के चरमोत्कर्ष की भाषा 2- अनेकानेक रुचियों की संतुष्टि का माध्यम 3- यथार्थ की पृष्ठभूमि पर मानव- मन की साकार प्रस्तुति 4- नाटक गद्य, पद्य का मिश्रित रूप है

5- सर्वजन हिताय तथा सर्वजन बहुताय से परिपूर्ण 6- सामान्य जन की भाषिक अभिव्यक्ति

7- शिक्षण का प्रभावकारी माध्यम

[1]- कविता के चरमोत्कर्ष की भाषा- नाटक की प्रस्तुति में कविता की भाषा अपने पूरे उत्कर्ष को प्राप्त करती है।है। काव्य में वर्णित दृश्य या मानसिक अवस्था को कल्पना में रुपाकार किया जाता है।

[2]- अनेकानेक रुचियों की संतुष्टि का माध्यम- नाटक एक ऐसा साहित्यिक साधन है जिसके द्वारा मानव की विभिन्न रुचियों की संतुष्टि होती है। भरत से लेकर वर्तमान काव्य शास्त्रीयों तक सभी ने इसकी पुष्टि की है। जिसका तात्पर्य है "ऐसा कोई ज्ञान, योग, विद्या, कला अथवा शिल्प नहीं है, जिसे नाटक के माध्यम से प्रस्तुत न किया जा सके।

[3]- यथार्थ की पृष्ठभूमि पर मानव- मन की साकार प्रस्तुति- नाटक में कल्पना के स्थान पर वास्तविकता अधिक होता है। यही कारण है कि नाटक जीवन के अधिक निकट होता है। सच तो यह है जीवन को रूपायित करने का सबसे सटीक माध्यम है

[4]- नाटक गद्य, पद्य का मिश्रित रूप है- नाटक की रचना गद्य, पद्य के मिश्रित रूप में ही सम्भव है। भरत नें 'नान्दी पाठ' से जिस परम्परा की नींव डाली वो आज भी भारतीय नाटय में किसी न किसी रूप में मौजूद है।

[5]- सर्वजन हिताय तथा सर्वजन बहुताय से परिपूर्ण- नाटक में लोकरंजन के साथ ही समाज के लोकहित की भावना प्रमुख होती है। इससे दर्शकों तथा पाठकों का स्वस्थ मनोरंजन का उददेश्य तो होता ही है, उससे शिक्षा तथा प्रेरणा भी मिलती है।

[6]- सामान्यजन की भाषिक अभिव्यक्ति- नाटक जन सामान्य की भावनाओं को प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है। रंगमंच पर प्रस्तुत किए जाने पर ही नाटक जीवंत व सप्राण हो पाता है।

[7]- शिक्षण का प्रभावकारी माध्यम- मनौवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि श्रव्य-दृश्य माध्यम के शिक्षण को सर्वोत्तम रूप से प्रभावकारी बनाया जा सकता है। नाटक एक जीवंत श्रव्य-दृश्य उपादान है। इस महत्व को आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है।

नाटक अभिनय के आयाम- नाटक अभिनय के 04 आयाम होते हैं -

[1]- आंगिक आयाम [2]- वाचिक आयाम [3]- आहार्य आयाम [4]- सात्विक आयाम

[1] आंगिक आयाम- आंगिक अभिनय का अर्थ है शरीर , मुख और चेष्टाओं से कोई भाव या अर्थ प्रकट करना। सिर , हाथ, कटि, वक्ष, पार्श्व और चरण द्वारा किया जानेवाला अभिनय या आंगिक अभिनय कहलाताहै।

[2] वाचिक आयाम- अभिनेता रंगमंच पर बोलकर जो कुछ व्यक्त करता है वह सब वाचिक अभिनय कहलाता है।

[3] आहार्य आयाम- आहार्य अभिनय वास्तव में अभिनय का अंग न होकर नेपथ्य कर्म का अंग है और उसका संबंध अभिनेता से उतना नहीं है जितना नेपथ्य सज्जा करने वाले से है।आज के सभी प्रमुख अभिनेता और नाट्य प्रयोक्ता यह मानने लगे हैं कि प्रत्येक अभिनेता को अपनी मुखसज्जा और रूपसज्जा स्वयं करनी चाहिए।

[4] सात्विक आयाम- सात्विक अभिनय तो उन भावों का वास्तविक और हार्दिक अभिनय है जिन्हें रस सिद्धांत वाले सात्विक भाव कहते हैं और जिसके अंतर्गत , स्वेद, स्तंभ, कंप, अश्रु, वैवर्ण्य, रोमांच, स्वरभंग और प्रलय की गणना होती है। इनमें से स्वेद और रोमांच को छोड़ शेष सबका सात्विक अभिनय किया जा सकता है। अश्रु के लिए तो विशेष साधना आवश्यक है , क्योंकि भाव मग्न होने पर ही उसकी सिद्धि हो सकती है।

हिंदी के प्रसिद्ध नाटकों के नाम- अंधेर नगरी- भारतेंदु हरिश्चंद, ध्रुवस्वामिनी- जयशंकर प्रसाद, अंधा युग- धर्मवीर भारती, आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, बकरी- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना , एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, कबीरा खड़ा बाज़ार में- भीष्म साहनी, महाभोज- मन्नू भंडारी

रेडियो रूपक/नाटक - रेडियो श्रव्य माध्यम है। नाटक की जिस विधा को रेडियो पर सुनने से उसका काल्पनिक चित्र उत्पन्न होता है और उससे आनंदानुभूति होती है उसे रेडियो रूपक या नाटक कहा जाता है । रेडियो नाटक को अँधेरे का नाटक भी कहा जाता है क्योंकि इसका मंचन अदृश्य होता है अर्थात इसे देखा नहीं जाता बल्कि सिर्फ सुना जाता है। नाटक लेखकों द्वारा रेडियो पर प्रसारण के लिए जो नाटक लिखे जाते हैं उन्हें रेडियो नाटक कहते हैं। भाषा, संवाद, ध्वनि एवं संगीत रेडियो नाटक के उपकरण होते हैं।

वर्तमान समय में रेडियो नाटक विधा स्वतंत्र रूप से प्रतिष्ठित हो गई है। रेडियो नाटक ध्वनि और शब्दों का नाटकीय सामंजस्य है। रेडियो नाटकों में श्रोता का सहज संबंध पात्रों के अन्तर्मन से जुड़ जाता है। रेडियो श्रव्य माध्यम है। अत: रेडियो नाटक भी श्रव्य होते हैं। इसमें ध्वनि की प्रधानता होती है। डॉ. राम कुमार वर्मा ने रेडियो नाटक को ध्वनि नाटक भी कहा है। इसे अंधे का सिनेमा भी कहा जाता है क्योंकि इसे मात्र सुनकर ही आनंद की अनुभूति होती है। रेडियो नाटक ध्वनि और संगीत का समन्वित रूप है। पात्रों का कार्य व्यापार, ध्वनियों का प्रभाव , संवादों की गति और संगीत को कथा सूत्र में पिरोकर रेडियो पर जिसका प्रस्तुतीकरण किया जाता है, वही रेडियो रूपक है।

कहानी का नाट्य रूपांतर करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिये-

कहानी एक ही जगह पर स्थित होनी चाहिये। कहानी का संवाद नाटक के संवाद से भिन्न होता है। नाटक संवाद के आधार पर आगे बढता है। इसलिये संवाद का समावेश करना जरूरी होता है। कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है। नाटक में हर एक पात्र का विकास कहानी की ही तरह होता है। इसलिये कहानी का नाट्य रूपांतर करते वक्त पात्र का विवरण करना बहुत जरूरी होता है। कहानी कागजी होती है। एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है पर जब नाट्य रूपांतरण की बात आती है, तब एक समूह या टीम की जरूरत होती है। कहानी का नाट्य रूपांतर ण करने में निर्देशक का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण काम होता है।

अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित प्रश्न हेतु

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम- प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। असल में आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण यानी छपाई के आविष्कार से हुई। हालाँकि मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई, लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, उसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है। छापाखाना यानी प्रेस के आविष्कार ने दुनिया की तसवीर बदल दी। यूरोप में पुनर्जागरण 'रेनेसाँ' की शुरुआत में छापेखाने की अह म भूमिका थी। भारत में पहला छापाखाना सन 1556 में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्म-प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। तब से अब तक मुद्रण तकनीक में काफ़ी बदलाव आया है और मुद्रित माध्यमों का व्यापक विस्तार हुआ है।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यमों की विशेषताएँ- प्रिंट माध्यमों के वर्ग में अखबारों, पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि को शामिल किया जाता है। हमारे दैनिक जीवन में इनका विशेष महत्व है। प्रिंट माध्यमों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं- 1- प्रिंट माध्यमों के छपे शब्दों में स्थायित्व होता है। 2- हम उन्हें अपनी रुचि और इच्छा के अनुसार धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं। 3- पढ़ते-पढ़ते कहीं भी रुककर सोच-विचार कर सकते हैं। 4- इन्हें बार-बार पढ़ा जा सकता है। 5- इसे पढ़ने की शुरुआत किसी भी पृष्ठ से की जा सकती है। 6- इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखकर संदर्भ की भाँति प्रयुक्त किया जा सकता है।

यह लिखित भाषा का विस्तार है, जिसमें लिखित भाषा की सभी विशेषताएँ निहित हैं। लिखित और मौखिक भाषा में सबसे बड़ा अंतर यह है कि लिखित भाषा अनुशासन की माँग करती है। बोलने में एक स्वत:स्फूर्तता होती है लेकिन लिखने में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शब्दों के उपयुक्त इस्तेमाल का ध्यान रखना पड़ता है। इसके अलावा उसे एक प्रचलित भाषा में लिखना पड़ता है ताकि उसे अधिक-से-अधिक लोग समझ पाएँ।

मुद्रित माध्यमों की अन्य विशेषता यह है कि यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। इस माध्यम से आप गंभीर और गूढ़ बातें लिख सकते हैं क्योंकि पाठक के पास न सिर्फ़ उसे पढ़ने , समझने और सोचने का समय होता है बल्कि उसकी योग्यता भी होती है। असल में, मुद्रित माध्यमों का पाठक वही हो सकता है जो साक्षर हो और जिसने औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के जरिये एक विशेष स्तर की योग्यता भी हासिल की हो।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यमों की सीमाएँ या कमियाँ- मुद्रित माध्यमों की कमियाँ निम्नलिखित हैं-

1- निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं हैं। 2- मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। 3-पाठकों की रुचियों और जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है। 4- ये रेडियो, टी०वी० या इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। ये एक निश्चित अवधि पर प्रकाशित होते हैं। 5- जैसे अखबार 24 घंटे में एक बार या साप्ताहिक पत्रिका सप्ताह में एक बार प्रकाशित होती है। 6- अखबार या पत्रिका में समाचारों या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है इसलिए मुद्रित माध्यमों के लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की समय-सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें- मुद्रित माध्यमों में लेखक को जगह (स्पेस) का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। जैसे किसी अखबार या पत्रिका के संपादक ने अगर 250 शब्दों में रिपोर्ट या फ़ीचर लिखने को कहा है तो उस शब्द-सीमा का ध्यान रखना पड़ेगा। इसकी वजह यह है कि अखबार या पत्रिका में असीमित जगह नहीं होती। मुद्रित माध्यम के लेखक या पत्रकार को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि छपने से पहले आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर कर दिया जाए क्योंकि एक बार प्रकाशन के बाद वह गलती या अशुद्ध वहीं चिपक जाएगी। उसे सुधारने के लिए अखबार या पत्रिका के अगले अंक का इंतजार करना पड़ेगा। भाषा सरल, सहज तथा बोधगम्य होनी चाहिए। शैली रोचक होनी चाहिए। विचारों में प्रवाहमयता एवं तारतम्यता होनी चाहिए।

रेडियो- रेडियो श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है। इन सब वजहों से रेडियो को श्रोताओं से संचालित माध्यम माना जाता है। रेडियो पत्रकारों को अपने श्रोताओं का पूरा ध्यान रखना चाहिए। इसकी वजह यह है कि अखबार के पाठकों को यह सुविधा उपलब्ध रहती है कि वे अपनी पसंद और इच्छा से कभी भी और कहीं से भी पढ़ सकते हैं। अगर किसी समाचार/लेख या फ़ीचर को पढ़ते हुए कोई बात समझ में नहीं आई तो पाठक उसे फिर से पढ़ सकता है या शब्दकोश में उसका अर्थ देख सकता है या किसी से पूछ सकता है, लेकिन रेडियो के श्रोता को यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती।

वह अखबार की तरह रेडियो समाचार बुलेटिन को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुन सकता। उसे बुलेटिन के प्रसारण समय का इंतजार करना होगा और फिर शुरू से लेकर अंत तक बारी-बारी से एक के बाद दूसरा समाचार सुनना होगा। इस बीच, वह इधर-उधर नहीं आ-जा सकता और न ही उसके पास किसी गूढ़ शब्द या वाक्यांश के आने पर शब्दकोश का सहारा लेने का समय होता है। अगर वह शब्दकोश में अर्थ ढूँढ़ने लगेगा तो बुलेटिन आगे निकल जाएगा।

1-रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है। 2-अगर रेडियो बुलेटिन में कुछ भी भ्रामक या अरुचिकर है, तो संभव है कि श्रोता तुरंत स्टेशन बंद कर दे। 3-रेडियो मूलत: एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है और रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढाँचा और शैली इस आधार पर ही तय होती है। 4-रेडियो की तरह टेलीविजन भी एकरेखीय माध्यम है, लेकिन वहाँ शब्दों और ध्वनियों की तुलना में दृश्यों का महत्व सर्वाधिक होता है। 5-टेलीविजन में शब्द दृश्यों के अनुसार और उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं। लेकिन रेडियो में शब्द और आवाज ही सब कुछ हैं।

रेडियो समाचार की संरचना- रेडियो के लिए समाचार-लेखन अखबारों से कई मामलों में भिन्न है। चूँकि दोनों माध्यमों की प्रकृति अलग-अलग है, इसलिए समाचार-लेखन करते हुए उसका ध्यान जरूर रखा जाना चाहिए। रेडियो समाचार की संरचना अखबारों या टेलीविजन की तरह उलटा पिरामिड (इंवर्टेड पिरामिड) शैली पर आधारित होती है। चाहे आप किसी भी माध्यम के लिए समाचार लिख रहे हों , समाचार-लेखन की सबसे प्रचलित, प्रभावी और लोकप्रिय शैली उलटा पिरामिड़ शैली ही है। सभी तरह के जनसंचार माध्यमों में सबसे अधिक यानी 90 प्रतिशत खबरें या स्टोरीज़ इसी शैली में लिखी जाती हैं।

उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/विचार/समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम की बजाय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है। तात्पर्य यह है कि इस शैली में कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं, बल्कि खबर के बिलकुल शुरू में आ जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता।

इस शैली में समाचार को तीन भागों में बाँट दिया जाता है- 1-इंट्रो-समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में 'मुखड़ा' भी कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अह हिस्सा होता है। 2-बॉडी-इस भाग में समाचार के विस्तृत ब्यौरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है। 3-समापन-इस शैली में अलग से समापन जैसी कोई चीज नहीं होती। इसमें प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जा सकती हैं। अकड़ने समाया औ जहक कमा क देतेहुएआखी कुठलों या पैमाफक हवाक समाचरसमाप्त कर दिया जाता है।

रेडियो के लिए समाचार-लेखन संबंधी बुनियादी बातें - रेडियो के लिए समाचार-कॉपी तैयार करते हुए कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

साफ़-सुथरी और टाइप्ड कॉपी - रेडियो समाचार कानों के लिए यानी सुनने के लिए होते हैं , इसलिए उनके लेखन में इसका ध्यान रखना जरूरी हो जाता है। लेकिन एक महत्वपूर्ण तथ्य नहीं भूलना चाहिए कि सुने जाने से पहले समाचार-वाचक या वाचिका उसे पढ़ते हैं और तब वह श्रोताओं तक पहुँचता है। इसलिए

समाचार-कॉपी ऐसे तैयार की जानी चाहिए कि उसे पढ़ने में वाचक/वाचिका को कोई दिक्कत न हो। अगर समाचार-कॉपी टाइप्ड और साफ़-सुथरी नहीं है तो उसे पढ़ने के दौरान वाचक/वाचिका के अटकने या गलत पढ़ने का खतरा रहता है और इससे श्रोताओं का ध्यान बँटता है या वे भ्रमित हो जाते हैं। इससे बचने के लिए-

1. प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार-कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए।
2. कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।
3. एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।
4. पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए।
5. पृष्ठ के आखिर में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।
6. समाचार-कॉपी में ऐसे जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द , संक्षिप्ताक्षर (एब्रीवियेशन्स), अंक आदि नहीं लिखने चाहिए, जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ाने लगे।

रेडियो समाचार लेखन में अंकों को लिखने के मामले में खास सावधानी रखनी चाहिए-

जैसे- एक से दस तक के अंकों को शब्दों में और 11 से 999 तक अंकों में लिखा जाना चाहिए। 2837550 लिखने की बजाय 'अट्ठाइस लाख सैंतीस हजार पाँच सौ पचास ' लिखा जाना चाहिए अन्यथा वाचक/वाचिका को पढ़ने में बहुत मुश्किल होगी। अखबारों में % और $ जैसे संकेत-चिहनों से काम चल जाता है , लेकिन रेडियो में यह पूरी तरह वर्जित है। अत: इन्हें 'प्रतिशत' और 'डॉलर' लिखा जाना चाहिए। जहाँ भी संभव और उपयुक्त हो, दशमलव को उसके नजदीकी पूर्णांक में लिखना बेहतर होता है। इसी तरह 2837550 रुपये को रेडियो में, लगभग अट्ठाइस लाख रुपये , लिखना श्रोताओं को समझाने के लिहाज से बेहतर है। वित्तीय संख्याओं को उनके नजदीकी पूर्णांक में लिखना चाहिए। खेलों के स्कोर को उसी तरह लिखना चाहिए। सचिन तेंदुलकर ने अगर 98 रन बनाए हैं तो उसे 'लगभग सौ रन " नहीं लिख सकते। मुद्रा-स्फीति के आँकड़े नजदीकी पूर्णांक में नहीं , बल्कि दशमलव में ही लिखे जाने चाहिए। वैसे रेडियो समाचार में आँकड़ों और संख्याओं का अत्यधिक इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रोताओं के लिए उन्हें समझ पाना काफ़ी कठिन होता है। रेडियो समाचार कभी भी संख्या से नहीं शुरू होना चाहिए। इसी तरह तिथियों को उसी तरह लिखना चाहिए जैसे हम बोलचाल में इस्तेमाल करते हैं-' 15 अगस्त उन्नीस सौ पचासी' न कि 'अगस्त 15, 1985'।

डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग - रेडियो में अखबारों की तरह डेडलाइन अलग से नहीं , बल्कि समाचार से ही गुंथी होती है। अखबार दिन में एक बार और वह भी सुबह (और कहीं शाम) छपकर आता है जबकि रेडियो पर चौबीसो घंटे समाचार चलते रहते हैं। श्रोता के लिए समय का फ्रेम हमेशा 'आज' होता है। इसलिए समाचार में आज, आज सुबह, आज दोपहर, आज शाम, आज तड़के आदि का इस्तेमाल किया जाता है।

इसी तरह '.बैठक कल होगी' या '.कल हुई बैठक में..' का प्रयोग किया जाता है। इसी सप्ताह, अगले सप्ताह, पिछले सप्ताह, इस महीने, अगले महीने, पिछले महीने, इस साल, अगले साल, अगले बुधवार या पिछले शुक्रवार का इस्तेमाल करना चाहिए।

संक्षिप्ताक्षरों के इस्तेमाल में काफ़ी सावधानी बरतनी चाहिए। बेहतर तो यही होगा कि उनके प्रयोग से बचा जाए और अगर जरूरी हो तो समाचार के शुरू में पहले उसे पूरा दिया जाए , फिर संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग किया जाए।

टेलीविजन में दृश्यों की महत्ता सबसे ज्यादा है। यह कहने की जरूरत नहीं कि टेलीविजन देखने और सुनने का माध्यम है और इसके लिए समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय इस बात पर खास ध्यान रखने की जरूरत पड़ती है- 1- शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों। 2- टेलीविजन लेखन प्रिंट और

रेडियो दोनों ही माध्यमों से काफ़ी अलग है। इसमें कम-से-कम शब्दों में ज्यादा-से-ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल होता है। 3- टी०वी० के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। दृश्य यानी कैमरे से लिए गए शॉट्स, जिनके आधार पर खबर बुनी जाती है। अगर शॉट्स आसमान के हैं तो हम आसमान की ही बात लिखेंगे, समंदर की नहीं। अगर कहीं आग लगी हुई है तो हम उसी का जिक्र करेंगे, पानी का नहीं।

लेकिन टी०वी० में इस खबर की शुरुआत कुछ अलग होगी। दरअसल टेलीविज़न पर खबर दो तरह से पेश की जाती है। इसका शुरुआती हिस्सा, जिसमें मुख्य खबर होती है, बगैर दृश्य के न्यूज़ रीडर या एंकर पढ़ता है। दूसरा हिस्सा वह होता है , जहाँ से परदे पर एंकर की जगह खबर से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं। इसलिए टेलीविजन पर खबर दो हिस्सों में बँटी होती है। अगर खबरों के प्रस्तुतिकरण के तरीकों पर बात करें तो इसके भी कई तकनीकी पहलू हैं।

दिल्ली में आग की खबर को टी०वी० में पेश करने के लिए प्रारंभिक सूचना के बाद हम इसे इस तरह लिख सकते हैं-आग की ये लपटें सबसे पहले शाम चार बजे दिखीं, फिर तेजी से फैल गई.....।

टी०वी० खबरों के विभिन्न चरण

किसी भी टी०वी० चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है, यानी सबसे पहले सूचना देना। टी०वी० में भी ये सूचनाएँ कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं। ये चरण हैं-

1-फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज 2-ड्राई एंकर 3-फ़ोन-इन 4-एंकर-विजुअल 5-एंकर-बाइट 6-लाइव 7-एंकर-पैकेज

1. **फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज**- सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। इसमें कम-से-कम शब्दों में महज सूचना दी जाती है।
2. **ड्राई एंकर**- इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ , क्या, कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते तब तक एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है।
3. **फोन-इन**- इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहाँ से उसे जितनी ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ मिलती हैं, वह दर्शकों को बताता है।
4. **एंकर-विजुअल**- जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं , तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।
5. **एंकर-बाइट**- बाइट यानी कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफ़ी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।
6. **लाइव**- लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी०वी० चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जा सकें। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ०बी० वैन के जरिये घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।
7. **एंकर-पैकेज**- एंकर-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, उससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफ़िक के जरिये जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं। टेलीविजन लेखन इन तमाम रूपों को ध्यान में रखकर किया जाता है। जहाँ जैसी जरूरत होती है, वहाँ

वैसे वाक्यों का इस्तेमाल होता है। शब्द का काम दृश्य को आगे ले जाना है ताकि वह दूसरे दृश्यों से जुड़ सके, उसमें निहित अर्थ को सामने लाए, ताकि खबर के सारे आशय खुल सकें।

रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा तथा शैली

रेडियो और टी०वी० आम आदमी के माध्यम हैं। भारत जैसे विकासशील देश में उसके श्रोताओं और दर्शकों में पढ़े-लिखे लोगों से निरक्षर तक और मध्यम वर्ग से लेकर किसान-मजदूर तक सभी होते हैं। इन सभी लोगों की सूचना की जरूरतें पूरी करना ही रेडियो और टी०वी० का उद्देश्य है। जाहिर है कि लोगों तक पहुँचने का माध्यम भाषा है और इसलिए भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी की समझ में आसानी से आ सके, लेकिन साथ ही भाषा के स्तर और उसकी गरिमा के साथ कोई समझौता भी न करना पड़े।

रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए-

1- वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट लिखे जाएँ। 2- जब भी कोई खबर लिखनी हो तो पहले उसकी प्रमुख बातों को ठीक से समझ लेना चाहिए। 3- हम कितनी सरल, संप्रेषणीय और प्रभावी भाषा लिख रहे हैं, यह जाँचने का एक बेहतर तरीका यह है कि हम समाचार लिखने के बाद उसे बोल-बोलकर पढ़ लें। 4- भाषा प्रवाहमयी होनी चाहिए।

सावधानियाँ

रेडियो और टी०वी० समाचार में भाषा और शैली के स्तर पर काफ़ी सावधानी बरतनी पड़ती है-

1. ऐसे कई शब्द हैं , जिनका अखबारों में धडल्ले से इस्तेमाल होता है लेकिन रेडियो और टी०वी० में उनके प्रयोग से बचा जाता है। जैसे-निम्नलिखित , उपयुक्त, अधोहस्ताक्षरित और क्रमाक आदि शब्दों का प्रयोग इन माध्यमों में बिलकुल मना है। इसी तरह ' द्वारा 'शब्द के इस्तेमाल से भी बचने की कोशिश की जाती है क्योंकि इसका प्रयोग कई बार बहुत भ्रामक अर्थ देने लगता है; जैसे-'पुलिस दवारा चोरी करते हुए दो व्यक्तियों को पकड़ लिया गया। ' इसकी बजाय 'पुलिस ने दो व्यक्तियों को चोरी करते हुए पकड़ लिया।' ज्यादा स्पष्ट है।
2. तथा, एव, अथवा, व, किंतु, परतु, यथा आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए और उनकी जगह और , या, लेकिन आदि शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए।
3. साफ़-सुथरी और सरल भाषा लिखने के लिए गैरजरूरी विशेषणों , सामासिक और तत्सम शब्दों , अतिरंजित उपमाओं आदि से बचना चाहिए। इनसे भाषा कई बार बोझिल होने लगती है।
4. मुहावरों के इस्तेमाल से भाषा आकर्षक और प्रभावी बनती है , इसलिए उनका प्रयोग होना चाहिए। लेकिन मुहावरों का इस्तेमाल स्वाभाविक रूप से और जहाँ जरूरी हो , वहीं होना चाहिए अन्यथा वे भाषा के स्वाभाविक प्रवाह को बाधित करते हैं।
5. वाक्य छोटे-छोटे हों। एक वाक्य में एक ही बात कहनी चाहिए।
6. वाक्यों में तारतम्य ऐसा हो कि कुछ टूटता या छूटता हुआ न लगे।
7. शब्द प्रचलित हों और उनका उच्चारण सहजता से किया जा सके। क्रय-विक्रय की जगह खरीदारी-बिक्री, स्थानांतरण की जगह तबादला और पंक्ति की जगह कतार टी०वी० में सहज माने जाते हैं।

इंटरनेट- इंटरनेट को इंटरनेट पत्रकारिता , ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। नई पीढ़ी के लिए अब यह एक आदत-सी बनती जा रही है। जो लोग इंटरनेट के अभ्यस्त हैं या जिन्हें चौबीसो घंटे इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है , उन्हें अब कागज पर छपे हुए अखबार उतने ताजे और मनभावन नहीं लगते। उन्हें हर घंटे-दो घंटे में खुद को अपडेट करने की लत लगती जा रही है।

भारत में कंप्यूटर साक्षरता की दर बहुत तेजी से बढ़ रही है। पर्सनल कंप्यूटर इस्तेमाल करने वालों की संख्या में भी लगातार इजाफ़ा हो रहा है। हर साल करीब 50-55 फ़ीसदी की रफ़्तार से इंटरनेट कनेक्शनों की

संख्या बढ़ रही है। इसकी वजह यह है कि इटरनेट पर आप एक ही झटके में झुमरीतलैया से लेकर होनोलूलू तक की खबरें पढ़ सकते हैं। दुनियाभर की चर्चाओं-परिचर्चाओं में शरीक हो सकते हैं और अखबारों की पुरानी फ़ाइलें खंगाल सकते हैं।

इंटरनेट एक टूल ही नहीं और भी बहुत कुछ है-

इंटरनेट सिर्फ़ एक टूल यानी औजार है, जिसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतरीन औजार है, वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी जरिया है। इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं।

पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम या औजार के तौर पर इस्तेमाल, यानी खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग। दूसरा, रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक ईमेल के जरिये भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन तथा पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है। रिसर्च या शोध का काम तो इंटरनेट ने बेहद आसान कर दिया है।

टेलीविजन या अन्य समाचार माध्यमों में खबरों के बैकग्राउंडर तैयार करने या किसी खबर की पृष्ठभूमि तत्काल जानने के लिए जहाँ पहले ढेर सारी अखबारी कतरनों की फ़ाइलों को ढूँढ़ना पड़ता था, वहीं आज चंद मिनटों में इंटरनेट विश्वव्यापी संजाल के भीतर से कोई भी बैकग्राउंडर या पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है। एक जमाना था जब टेलीप्रिंटर पर एक मिनट में 80 शब्द एक जगह से दूसरी जगह भेजे जा सकते थे, आज स्थिति यह है कि एक सेकेंड में 56 किलोबाइट यानी लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

इंटरनेट पत्रकारिता

इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, बहसों, फ़ीचर, झलकियों, डायरियों के जरिये अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है। आज तमाम प्रमुख अखबार पूरे-के-पूरे इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। कई प्रकाशन-समूहों ने और कई निजी कंपनियों ने खुद को इंटरनेट पत्रकारिता से जोड़ लिया है। चूँकि यह एक अलग माध्यम है, इसलिए इस पर पत्रकारिता का तरीका भी थोड़ा-सा अलग है।

इंटरनेट पत्रकारिता का इतिहास

विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता के स्वरूप और विकास का पहला दौर था 1982 से 1992 तक, जबकि चला 1993 से 2001 तक। तीसरे दौर की इंटरनेट पत्रकारिता 2002 से अब तक की है। पहले चरण में इंटरनेट खुद प्रयोग के धरातल पर था, इसलिए बड़े प्रकाशन-समूह यह देख रहे थे कि कैसे अखबारों की सुपर इन्फॉर्मेशन-हाईवे पर दर्ज हो। तब एओएल यानी अमेरिका ऑनलाइन जैसी कुछ चर्चित कंपनियाँ सामने आई। लेकिन कुल मिलाकर प्रयोगों का दौर था।

सच्चे अर्थों में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत 1983 से 2002 के बीच हुई। इस दौर में तकनीक स्तर पर भी इंटरनेट का जबरदस्त विकास हुआ। नई वेब भाषा एचटीएमएल (हाइपर टेक्स्ट मार्क्डअप लैंग्वेज) आई , इंटरनेट ईमेल आया , इंटरनेट एक्सप्लोरर और नेटस्केप नाम के ब्राउजर (वह औजार जिसके जरिये विश्वव्यापी जाल में गोते लगाए जा सकते हैं) आए। इन्होंने इंटरनेट को और भी सुविधासंपन्न और तेज-रफ़्तार वाला बना दिया। इस दौर में लगभग सभी बड़े अखबार और टेलीविजन समूह विश्वजाल में आए। 'न्यूयॉर्क टाइम्स', 'वाशिंगटन पोस्ट', 'सीएनएन', 'बीबीसी' सहित तमाम बड़े घरानों ने अपने प्रकाशनों, प्रसारणों के इंटरनेट संस्करण निकाले। दुनियाभर में इस बीच इंटरनेट का काफ़ी विस्तार हुआ। न्यू मीडिया के नाम पर डॉटकॉम कंपनियों का उफ़ान आया, पर उतनी ही तेजी के साथ इसका बुलबुला फूटा भी। सन 1996 से

2002 के बीच अकेले अमेरिका में ही पाँच लाख लोगों को डॉटकॉम की नौकरियों से हाथ धोना पड़ा। विषय सामग्री और पर्याप्त आर्थिक आधार के अभाव में ज्यादातर डॉटकॉम कंपनियाँ बंद हो गई।

लेकिन यह भी सही है कि बड़े प्रकाशन-समूहों ने इस दौर में भी खुद को किसी तरह जमाए रखा। चूँकि जनसंचार के क्षेत्र में सक्रिय लोग यह जानते थे कि और चाहे जो हो , सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम के तौर पर इंटरनेट का कोई जवाब नहीं। इसलिए इसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी। इसलिए कहा जा रहा है कि इंटरनेट पत्रकारिता का 2002 से शुरू हुआ तीसरा दौर सच्चे अर्थों में टिकाऊ हो सकता हैं।

भारत में इंटरनेट पत्रकारिता

भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है। भारत के लिए पहला दौर 1993 से शुरू माना जा सकता है, जबकि दूसरा दौर सन 2003 से शुरू हुआ है। पहले दौर में हमारे यहाँ भी प्रयोग हुए। डॉटकॉम का तूफान आया और बुलबुले की तरह फूट गया। अंतत: वही टिके रह पाए जो मीडिया उद्योग में पहले से ही टिके हुए थे। आज पत्रकारिता की दृष्टि से 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', 'ट्रिब्यून', 'स्टेट्समैन', 'पॉयनियर', 'एनडी टी०वी०', 'आईबीएन', 'जी न्यूज़', 'आजतक' और 'आउटलुक ' की साइटें ही बेहतर हैं। 'इंडिया टुडे" जैसी कुछ साइटें भुगतान के बाद ही देखी जा सकती हैं।

जो साइटें नियमित अपडेट होती हैं , उनमें 'हिंदू', 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'आउटलुक', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'एनडी टी०वी० ', 'आजतक' और 'जी न्यूज़' प्रमुख हैं। लेकिन भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ़ डॉटकॉम', 'इंडियाइंफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ़ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।

हिंदी नेट संसार

हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के 'नई दुनिया समूह' से शुरू हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। इसके साथ ही हिंदी के अखबारों ने भी विश्वजाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू की। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नई दुनिया', 'हिंदुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण शुरू हुए। 'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ़ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की है। यही एक साइट है , जो इंटरनेट के मानदंडों के हिसाब से चल रही है। वेब दुनिया ने शुरू में काफी आशाएँ जगाई थीं , लेकिन धीरे-धीरे स्टाफ़ और साइट की अपडेटिंग में कटौती की जाने लगी , जिससे पत्रकारिता की वह ताजगी जाती रही जो शुरू में नजर आती थी।

हिंदी वेबजगत का एक अच्छा पहलू यह भी है कि इसमें कई साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही हैं। अनुभूति , अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि अच्छा काम कर रहे हैं। कुल मिलाकर हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है। सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फ़ौंट की है। अभी भी हमारे पास कोई एक 'की-बोर्ड' नहीं है। डायनमिक फ़ौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं। इसके लिए 'की-बोर्ड' का मानकीकरण करना चाहिए।

पत्रकारीय लेखन-

अखबार पाठकों को सूचना देने , उन्हें जागरूक और शिक्षित बनाने तथा उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। लोकतांत्रिक समाजों में वे एक पहरेदार , शिक्षक और जनमत निर्माता के तौर पर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अपने पाठकों के लिए वे बाहरी दुनिया में खुलने वाली ऐसी खिड़की हैं , जिनके जरिये असंख्य पाठक हर रोज सुबह देश-दुनिया और अपने पास-पड़ोस की घटनाओं , समस्याओं, मुद्दों तथा विचारों से अवगत होते हैं।

अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों , दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं-

1. पूर्णकालिक

2. अंशकालिक

3. फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र।

1. **पूर्णकालिक पत्रकार** - इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित कर्मचारी होते हैं। इन्हें वेतन, भत्ते एवं अन्य सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।
2. **अंशकालिक पत्रकार**- इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समयावधि के लिए कार्य करते हैं।
3. **फ्रीलांसर पत्रकार**- इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार-पत्र से नहीं होता , बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार-पत्रों के लिए लिखते हैं।

साहित्यिक और पत्रकारीय लेखन में अंतर

1. पत्रकारीय लेखन का संबंध तथा दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं , समस्याओं तथा मुद्दों से होता है। यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन-कविता , कहानी, उपन्यास आदि-इस मायने में अलग है कि इसका रिश्ता तथ्यों से होता है, न कि कल्पना से।
2. पत्रकारीय लेखन साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से इस मायने में भी अलग है कि यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है, जबकि साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

पत्रकारीय लेखन के स्मरणीय तथ्य - पत्रकारीय लेखन करने वाले विशाल जन-समुदाय के लिए लिखते हैं , जिसमें पाठकों का दायरा और ज्ञान का स्तर विस्तृत होता है। इसके पाठक मजदूर से विद्वान तक होते हैं , अत: उसकी लेखन-शैली और भाषा-

1. सरल, सहज और रोचक होनी चाहिए।
2. अलंकारिक और संस्कृतनिष्ठ होने की बजाय आम बोलचाल वाली होनी चाहिए।
3. शब्द सरल और आसानी से समझ में आने वाले होने चाहिए।
4. वाक्य छोटे और सहज होने चाहिए।

समाचार-लेखन की शैली - अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। इन समाचारों में किसी भी घटना , समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य , सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ़ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ़ में उससे कम महत्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

उलटा पिरामिड शैली

समाचार-लेखन की एक विशेष शैली है, जिसे उलटा पिरामिड शैली (इन्वर्टेड पिरामिड टी या स्टाइल) के नाम से जाना जाता है। यह समाचार-लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह शैली कहानी या कथा-लेखन की शैली के ठीक उलटी है , जिसमें क्लाइमेक्स बिलकुल आखिर में आता है। इसे 'उलटा पिरामिड शैली' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना यानी 'क्लाइमेक्स' पिरामिड के सबसे निचले उलटा पिरामिड में हिस्से में नहीं होती, बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है।

हालाँकि इस शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से ही शुरू हो गया था लेकिन इसका विकास अमेरिका

में दौरान हुआ। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ़ संदेशों के ज् यूँ महँगी , अनियमित और दुर्लभ थीं। कई बार तकनीकी कारणों से सेवा ठप्प हो किसी घटना की खबर कहानी की तरह विस्तार से लिखने की बजाय संक्षेप में पिरामिड शैली का विकास हुआ और धीरे-धीरे लेखन और संपादन की सुविधा के की मानक (स्टैंडर्ड) शैली बन गई।

समाचार लेखन और छह ककार

किसी समाचार को लिखते हुए जिन छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है , वे हैं-1-क्या हुआ? 2-किसके साथ हुआ? 3-कब हुआ? 4-कहाँ हुआ? 5-कैसे हुआ? 6-क्यों हुआ?

ये क्या , किसके (या कौन) , कब, कहाँ, कैसे और क्यों को ही छह ककार हैं । समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ़ या शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं-क्या , कौन, कब और कहाँ? इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों-कैसे ' और क्यों-का जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है। इनमें से पहले चार ककार-क्या, कौन, कब और कहाँ-सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारों-कैसे और क्यों-में विवरणात्मक , व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

फीचर- समकालीन घटना या किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फ़ीचर कहा जाता है। इसमें तथ्यों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसके संवादों में गहराई होती है। यह सुव्यवस्थित , सृजनात्मक व अद्धि न है जिक उद्देश्य पाठकों को स्चना ने तथा उह शतकने के साथ मुष्यरूप सेउक मोजना करना होता है। फ़ीचर में विस्तार की अपेक्षा होती है। इसकी अपनी एक अलग शैली होती है। एक विषय पर लिखा गया फ़ीचर प्रस्तुति विविधता के कारण अलग अंदाज प्रस्तुत करता है। इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य का समावेश हो सकता है। इसमें तथ्य , कथन व कल्पना का उपयोग किया जा सकता है। फ़ीचर में आँकड़े, फोटो, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का उपयोग उसे रोचक बना देता है।

फीचर व समाचार में अंतर-

1. फ़ीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है। जबकि समाचार-लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।
2. फ़ीचर-लेखन में उलटा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता। इसकी शैली कथात्मक होती है।
3. फ़ीचर-लेखन की भाषा सरल , रूपात्मक व आकर्षक होती है , परंतु समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है।
4. फ़ीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 200 शब्दों से लेकर 250 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।
5. फ़ीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

फ़ीचर के प्रकार-

फ़ीचर के प्रकार निम्नलिखित हैं : 1- समाचार फीचर 2- घटनापरक फीचर 3- व्यक्तिपरक फीचर 4- लोकाभिरुचि फ़ीचर 5- सांस्कृतिक फ़ीचर 6-साहित्यिक फीचर 7-विश्लेषण फीचर 8- विज्ञान फ़ीचर।

फीचर-लेखन संबंधी मुख्य बातें-

1. फ़ीचर को सजीव बनाने के लिए उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी होती है।
2. फ़ीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बताना चाहिए।
3. अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करें कि वे घटनाओं को खुद देख और सुन रहे हैं।
4. फ़ीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।
5. फ़ीचर शोध रिपोर्ट नहीं है।

6. इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।
7. फ़ीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।
8. फ़ीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।
9. फ़ीचर-लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फ़ॉर्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात प्रारंभ , मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।
10. फ़ीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।
11. पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

रिपोर्ट- रिपोर्ट समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविजन की एक विशेष विधा है। इसके माध्यम से किसी घटना , समारोह या आँखों-देखे किसी अन्य कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है। चूँकि दूरदर्शन दृश्य एवं श्रव्य दोनों ही उद्देश्य पूरा करने वाला माध्यम है, अत: इसके लिए आँखों-देखी घटना की रिपोर्ट तैयार की जाती है जबकि रेडियो के लिए केवल सुनने योग्य रिपोर्ट तैयार करने से काम चल जाता है। कभी संचालक द्वारा दी जा रही कार्यवाही का विवरण देखकर ही उसे रिपोर्ट का आधार बनाकर रिपोर्ट तैयार कर ली जाती है।

रिपोर्ट की विशेषताएँ- रिपोर्ट की पहली मुख्य विशेषता उसकी संक्षिप्तता है। संक्षिप्त रिपोर्ट को ही लोग पढ़ पाते हैं। ज्यादा विस्तृत रिपोर्ट पढ़ी नहीं जाती , अत: उसे तैयार करना उद्देश्यहीन हो जाता है।रिपोर्ट की दूसरी मुख्य विशेषता उसकी निष्पक्षता है। रिपोर्ट को प्रभावशाली बनाने के लिए निष्पक्ष रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। रिपोर्ट की तीसरी प्रमुख विशेषता उसकी सत्यता है। इस तथ्य से रहित रिपोर्ट अप्रासंगिक और निरुद्देश्य हो जाती है। असत्य रिपोर्ट पर न कोई विश्वास करता है और न कोई पढ़ना पसंद करता है। रिपोर्ट की अगली विशेषता उसकी पूर्णता है। आधी-अधूरी रिपोर्ट से रिपोर्टर का न उद्देश्य पूरा होता है और न वह पाठकों की समझ में आती है। रिपोर्ट की अगली विशेषता है-उसका संतुलित होना। अर्थात इसे सभी पक्षों को समान महत्व देते हुए तैयार करना चाहिए।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार- विशेष रिपोर्ट कई प्रकार की होती है- 1- खोजी रिपोर्ट (इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट) 2- इन-डेप्थ रिपोर्ट 3- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट 4- विवरणात्मक रिपोर्ट।

खोजी रिपोर्ट (इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट)- इस प्रकार की रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिये ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है जो सार्वजानिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थीं। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

इन-डेप्थ रिपोर्ट- इस प्रकार की रिपोर्ट में सार्वजानिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों , सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट- इस तरह की रिपोर्ट में पत्रकार किसी विशेष विषय पर विशेषज्ञता हासिल करता है और आंकड़ों को एकत्रित करके लोगों को उन घटनाओं की पहचान कराता है जो स्पष्ट नहीं होती हैं।

विवरणात्मक रिपोर्ट- इस तरह की रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। विभिन्न प्रकार की विशेष रिपोर्टों को समाचार-लेखन की उलटा पिरामिड-शैली में ही लिखा जाता है लेकिन कई बार ऐसी रिपोर्टों को फ़ीचर शैली में भी लिखा जाता है। चूँकि ऐसी रिपोर्ट सामान्य समाचारों की तुलना में बड़ी और विस्तृत होती हैं, इसलिए पाठकों की रुचि बनाए रखने के लिए कई बार उलटा पिरामिड और फ़ीचर दोनों ही शैलियों को मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है। रिपोर्ट बहुत विस्तृत और बड़ी हो तो उसे श्रृंखलाबद्ध करके कई दिनों तक किस्तों में छापा जाता है। विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

रिपोर्ट-लेखन की विशेषताएँ- रिपोर्ट-लेखन की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए। उसमें संक्षिप्तता का गुण भी होना चाहिए।

आलेख- किसी एक विषय पर विचार प्रधान एवं गद्य प्रधान अभिव्यक्ति को 'आलेख' कहा जाता है। आलेख वस्तुत: एक प्रकार के लेख होते हैं जो अधिकतर संपादकीय पृष्ठ पर ही प्रकाशित होते हैं। इनका संपादकीय से कोई संबंध नहीं होता। ये लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं , जैसे-खेल, समाज, राजनीति, अर्थ, फिल्म आदि। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य है।

आलेख के मुख्य अंग - आलेख के मुख्य अंग हैं-भूमिका , विषय का प्रतिपादन , तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष। सर्वप्रथम, शीर्षक के अनुकूल भूमिका लिखी जाती है। यह बहुत लंबी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। विषय के प्रतिपादन में विषय का वर्गीकरण , आकार, रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। विषय में तारतम्यता व क्रमबद्धता अवश्य होनी चाहिए। तुलनात्मक चर्चा में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है और अंत में, विषय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

आलेख रचना के संबंध में प्रमुख बातें-

1. लेख लिखने से पूर्व विषय का चिंतन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए।
2. विषयवस्तु से संबंधित आँकड़ों व उदाहरणों का उपयुक्त संग्रह करना चाहिए।
3. लेख में श्रृंखलाबद्धता होना जरूरी है।
4. लेख की भाषा सरल, बोधगम्य व रोचक होनी चाहिए। वाक्य बहुत बड़े नहीं होने चाहिए। एक परिच्छेद में एक ही भाव व्यक्त करना चाहिए।
5. लेख की प्रस्तावना व समापन में रोचकता होनी जरूरी है।
6. विरोधाभास, दोहरापन, असंतुलन, तथ्यों की असंदिग्धता आदि से बचना चाहिए।

विचारपरक लेखन- अखबारों में समाचार और फ़ीचर के अलावा विचारपरक सामग्री का भी प्रकाशन होता है। कई अखबारों की पहचान उनके वैचारिक रुझान से होती है। एक तरह से अखबारों में प्रकाशित होने वाले विचारपूर्ण लेखन से उस अखबार की छवि बनती है। अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियाँ इसी विचारपरक पत्रकारीय लेखन की श्रेणी में आते हैं। इसके अलावा, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों या वरिष्ठ पत्रकारों के स्तंभ (कॉलम) भी विचारपरक लेखन के तहत आते हैं। कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ठ के सामने ऑप-एड पृष्ठ पर भी विचारपरक लेख , टिप्पणियाँ और स्तंभ प्रकाशित होते हैं।

संपादकीय लेखन- संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना , समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं। संपादकीय किसी व्यक्ति-विशेष का विचार नहीं होता, इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों पर होता है। आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक ही संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या

स्तंभ लेखन- स्तंभ-लेखन भी विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन-शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं। यही कारण है कि स्तंभ अपने लेखकों के नाम पर जाने और पसंद किए जाते हैं। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि अखबार उनके कारण भी पहचाने जाते हैं।

साक्षात्कार (इंटरव्यू)- समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्व है। पत्रकार एक तरह से साक्षात्कार के जरिये ही समाचार , फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल

इकट्ठा करते हैं। पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बातचीत में यह फ़र्क होता है कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से तथ्य, उसकी राय और भावनाएँ जानने के लिए सवाल पूछता है। साक्षात्कार का एक स्पष्ट मकसद और ढाँचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए आपके पास न सिर्फ़ ज्ञान होना चाहिए बल्कि आपमें संवदेनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए।

सफल और अच्छा साक्षात्कार कैसे लिखें- एक अच्छे और सफल साक्षात्कार के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं-

1. जिस विषय पर और जिस व्यक्ति के साथ साक्षात्कार करने आप जा रहे हैं, उसके बारे में आपके पास पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।
2. आप साक्षात्कार से क्या निष्कर्ष निकालना चाहते हैं, इसके बारे में स्पष्ट रहना बहुत जरूरी है।
3. आपको वे सवाल पूछने चाहिए जो किसी अखबार के एक आम पाठक के मन में हो सकते हैं।
4. साक्षात्कार को अगर रिकॉर्ड करना संभव हो तो बेहतर है , लेकिन अगर ऐसा संभव न हो तो साक्षात्कार के दौरान आप नोट्स लेते रहें।
5. साक्षात्कार को लिखते समय आप दो में से कोई भी एक तरीका अपना सकते हैं। एक आप साक्षात्कार को सवाल और फिर जवाब के रूप में लिख सकते हैं या फिर उसे एक आलेख की तरह से भी लिख सकते हैं।

संपादकीय का समाचार-पत्र के लिए महत्व - संपादकीय को किसी समाचार-पत्र की आवाज माना जाता है। यह एक निश्चित पृष्ठ पर छपता है। यह अंश समाचारपत्र को पठनीय तथा अविस्मरणीय बनाता है। संपादकीय से ही समाचार-पत्र की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ (गुणवत्ता) का निर्धारण किया जाता है। समाचार-पत्र के लिए इसकी महत्ता सर्वोपरि है।

विशेष लेखन से एक ओर समाचार-पत्र में विविधता आती है तो दूसरी ओर उनका कलेवर व्यापक होता है। वास्तव में पाठक अपनी व्यापक रुचियों के कारण साहित्य , विज्ञान, खेल, सिनेमा आदि विविध क्षेत्रों से जुड़ी खबरें पढ़ना चाहता है , इसलिए समाचार-पत्रों में विशेष लेखन के माध्यम से निरंतर और विशेष जानकारी देना आवश्यक हो जाता है।

विशेष लेखन- विशेष लेखन का अर्थ है-किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अधिकांश समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी०वी० और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है। जैसे समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों में बिजनेस यानी कारोबार और व्यापार का अलग डेस्क होता है , इसी तरह खेल की खबरों और फ़ीचर के लिए खेल डेस्क अलग होता है। इन डेस्कों पर काम करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।

खबरें भी कई तरह की होती हैं-राजनीतिक , आर्थिक, अपराध, खेल, फ़िल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी होता है।

विशेष लेखन के लिए किसी व्यक्ति (संवाददाता) को उसी क्षेत्र-विशेष से संबंधित लेखन-कार्य सौंपा जाता है , जिसमें उसकी रुचि होती है। इसके अलावा उसे विषय-संबंधी गहरी जानकारी होती है। जैसे-खेल जगत की जानकारी एवं रुचि रखने वाले को खेल बीट मिल जाती है। विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग न होकर उससे

भी आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है , जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा-शैली पर भी पूर्ण अधिकार होना चाहिए।

बीट रिपोर्टिंग के लिए तैयारी - बीट रिपोर्टिंग के लिए भी एक पत्रकार को काफ़ी तैयारी करनी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर जो पत्रकार राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं या किसी खास राजनीतिक पार्टी को कवर करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि उस पार्टी का इतिहास क्या है, उसमें समय-समय पर क्या हुआ है, आज क्या चल रहा है, पार्टी के सिद्धांत या नीतियाँ क्या हैं, उसके पदाधिकारी कौन-कौन हैं और उनकी पृष्ठभूमि क्या है, बाकी पार्टियों से उस पार्टी के रिश्ते कैसे हैं और उनमें आपस में क्या फ़र्क है , उसके अधिवेशनों में क्या-क्या होता रहा है, उस पार्टी की कमियाँ और खूबियाँ क्या हैं, आदि-आदि।

पत्रकार को उस पार्टी के भीतर गहराई तक अपने संपर्क बनाने चाहिए और खबर हासिल करने के नए-नए स्रोत विकसित करने चाहिए। किसी भी स्रोत या सूत्र पर आँख मूँदकर भरोसा नहीं करना चाहिए और जानकारी की पुष्टि कई अन्य स्रोतों के जरिये भी करनी चाहिए। तभी वह उस बारे में विशेषज्ञता हासिल कर सकता है और उसकी रिपोर्ट या खबर विश्वसनीय मानी जा सकती है।

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। इसके अलावा एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करें और पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करें। विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर , टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ-लेखन भी आता है। इस तरह का विशेष लेखन समाचार-पत्र या पत्रिका में काम करने वाले पत्रकार से लेकर फ्री-लांस (स्वतंत्र) पत्रकार या लेखक तक सभी कर सकते हैं। शर्त यह है कि विशेष लेखन के इच्छुक पत्रकार या स्वतंत्र लेखक को उस विषय में निपुण होना चाहिए।

मतलब यह कि किसी भी क्षेत्र पर विशेष लेखन करने के लिए जरूरी है कि उस क्षेत्र के बारे में आपको ज्यादा-से-ज्यादा पता हो, उसकी ताजी-से-ताजी सूचना आपके पास हो, आप उसके बारे में लगातार पढ़ते हों, जानकारियाँ और तथ्य इकट्ठे करते हों और उस क्षेत्र से जुड़े लोगों से लगातार मिलते रहते हों।

इस तरह अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में किसी खास विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले कई बार पेशेवर पत्रकार न होकर उस विषय के जानकार या विशेषज्ञ होते हैं। जैसे रक्षा, विज्ञान, विदेश-नीति, कृषि या ऐसे ही किसी क्षेत्र में कई वर्षों से काम कर रहा कोई प्रोफ़ेशनल इसके बारे में बेहतर तरीके से लिख सकता है क्योंकि उसके पास इस क्षेत्र का वर्षों का अनुभव होता है , वह इसकी बारीकियाँ समझता है और उसके पास विश्लेषण करने की क्षमता होती है।

हो सकता है उसके लिखने की शैली सामान्य पत्रकारों की तरह न हो लेकिन जानकारी और अंतर्दृष्टि के मामले में उसका लेखन पाठकों के लिए लाभदायक होता है। उदाहरण के तौर पर हम खेलों में हर्ष भोगले , जसदेव सिंह या नरोत्तम पुरी का नाम ले सकते हैं। वे पिछले चालीस सालों से हॉकी से लेकर क्रिकेट तक और ओलंपिक से लेकर एशियाई खेलों तक की कमेंट्री करते रहे हैं।

विशेष लेखन की भाषा और शैली - विशेष लेखन का संबंध जिन विषयों और क्षेत्रों से है , उनमें से अधिकांश क्षेत्र तकनीकी रूप से जटिल हैं और उनसे जुड़ी घटनाओं तथा मुद्दों को समझना आम पाठकों के लिए कठिन होता है। इसलिए इन क्षेत्रों में विशेष लेखन की जरूरत पड़ती है , जिससे पाठकों को समझने में मुश्किल न हो। विशेष लेखन की भाषा और शैली कई मामलों में सामान्य लेखन से अलग होती है। उनके

बीच सबसे बुनियादी फ़र्क यह होता है कि हर क्षेत्र-विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है।

जैसे कारोबार पर विशेष लेखन करते हुए आपको उसमें इस्तेमाल होने वाली शब्दावली से परिचित होना चाहिए। दूसरे, अगर आप उस शब्दावली से परिचित हैं तो आपके सामने चुनौती यह होती है कि आप अपने पाठक को भी उस शब्दावली से इस तरह परिचित कराना चाहिए ताकि उसे आपकी रिपोर्ट को समझने में कोई दिक्कत न हो।

उदाहरणार्थ-'सोने में भारी उछाल', 'चाँदी लुढ़की' या 'आवक बढ़ने से लाल मिर्च की कड़वाहट घटी ' या 'शेयर बाजार ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़े, सेंसेक्स आसमान पर' आदि के अलावा खेलों में भी 'भारत ने पाकिस्तान को चार विकेट से पीटा ', 'चैंपियंस कप में मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके ' आदि शीर्षक सहज ही ध्यान खींचते हैं।

विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। लेकिन अगर हम अपने बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहे हैं तो उसकी शैली उलटा पिरामिड शैली ही होगी। लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है। इसी तरह अगर आप लेख या टिप्पणी लिख रहे हों तो इसकी शुरुआत भी फ़ीचर की तरह हो सकती है। जैसे हम किसी केस स्टडी से उसकी शुरुआत कर सकते हैं, उसे किसी खबर से जोड़कर यानी न्यूजपेग के जरिये भी शुरू किया जा सकता है। इसमें पुराने संदर्भों को आज के संदर्भ से जोड़कर पेश करने की भी संभावना होती है।

मीडिया की भाषा में बीट का अर्थ- समाचार कई प्रकार के होते हैं ; जैसे-राजनीति, अपराध, खेल, आर्थिक, फ़िल्म तथा कृषि संबंधी समाचार आदि। संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा उनके ज्ञान एवं रुचि के आधार पर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे ही बीट कहते हैं। बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा उसकी पुष्टि करके विशेषज्ञता हासिल करना चाहिए। तब उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

विशेष लेखन- अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इस प्रकार के लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा-शैली से अलग होती है।

विशेष लेखन की भाषा-शैली- विशेष लेखन किसी विशेष विषय पर या जटिल एवं तकनीकी क्षेत्र से जुड़े विषयों पर किया जाता है, जिसकी अपनी विशेष शब्दावली होती है। इस शब्दावली से संवाददाता को अवश्य परिचित होना चाहिए। उसे इस तरह लेखन करना चाहिए कि रिपोर्ट को समझने में परेशानी न हो।

उलटा पिरामिड शैली- यह समाचार-लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह कहानी या कथा लेखन शैली की ठीक उलटी होती है। इसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है। इसमें शुरू में समापन, मध्य में बॉडी और अंत में मुखड़ा होता है।

संपादक के कार्य - संपादक संवाददाताओं तथा रिपोर्टरों से प्राप्त समाचार-सामग्री की अशुद्धियाँ दूर करते हैं तथा उसे त्रुटिहीन बनाकर प्रस्तुति के योग्य बनाते हैं। वे रिपोर्ट की महत्वपूर्ण बातों को पहले तथा कम महत्व की बातों को अंत में छापते हैं तथा समाचार-पत्र की नीति, आचार-संहिता और जन-कल्याण का विशेष ध्यान रखते हैं।

पत्रकारीय लेखन- पत्रकार अखबार या अन्य समाचार माध्यमों के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारीय भाषा सीधी, सरल, साफ़-सुथरी परंतु प्रभावपूर्ण होनी चाहिए। वाक्य छोटे, सरल और सहज होने चाहिए। भाषा में कठिन और दुरूह शब्दावली से बचना चाहिए, ताकि भाषा बोझिल न हो।

खोजपरक पत्रकारिता- सार्वजानिक महत्व के भ्रष्टाचार और अनियमितता को लोगों के सामने लाने के लिए खोजपरक पत्रकारिता की मदद ली जाती है। इसके अंतर्गत छिपाई गई सूचनाओं की गहराई से जाँच की जाती है। इसके प्रमाण एकत्र करके इसे प्रकाशित भी किया जाता है।

वॉचडॉग पत्रकारिता- जो पत्रकारिता सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और कोई गड़बड़ी होते ही उसका परदाफ़ाश करती है, उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

एडवोकेसी पत्रकारिता- जो पत्रकारिता किसी विचारधारा या विशेष उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर उसके पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार और जोर-शोर से अभियान चलाती है, उसे एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।

वैकल्पिक पत्रकारिता- जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करते हैं, उसे वैकल्पिक पत्रकारिता कहते हैं।

पेज थ्री पत्रकारिता- पेज श्री पत्रकारिता का आशय उस पत्रकारिता से है, जिसमें फ़ैशन, अमीरों की बड़ी-बड़ी पार्टियों, महफ़िलों तथा लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। ऐसे समाचार सामान्यत: समाचार-पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होते हैं।

पीत पत्रकारिता- इस तरह की पत्रकारिता में झूठी अफवाहों, सनसनीखेज मुद्दों तथा खबरों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके ध्यान-खींचने वाले शीर्षकों का बहुतायत में प्रयोग किया जाता है।

आत्मपरिचय, एक गीत - हरिवंशराय बच्चन

प्रश्न- 1 कविता एक ओर जग-जीवन का मार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'- विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय हैं?

उत्तर- जग-जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख-दुख, हानि-लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अत: इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

प्रश्न- 2 जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं- कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फैसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

प्रश्न- 3 मैं और, और जग और कहाँ का नाता- पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर- यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अत: यहाँ यमक अलंकार है। पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है। वह आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया है। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है। तीसरे 'और' का प्रयोग 'संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं' दर्शाने के लिए किया गया है।

प्रश्न- 4 शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर– कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम-रहित संसार को अस्वीकार करता है। अत: अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जाग्रत कर रहा है।

प्रश्न- 5 बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर– पक्षी दिन भर भोजन की तलाश में भटकते फिरते हैं। उनके बच्चे घोंसलों में माता-पिता की राह देखते रहते हैं कि मातापिता उनके लिए दाना लाएँगे और उनका पेट भरेंगे। साथ-साथ वे माँ-बाप के स्नेहिल स्पर्श पाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। छोटे बच्चों को माता-पिता का स्पर्श व उनकी गोद में बैठना, उनका प्रेम-प्रदर्शन भी असीम आनंद देता है। इन सबकी पूर्ति के लिए वे नीड़ों से झाँकते हैं।

प्रश्न- 6 दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं- की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता हैं?

उत्तर– 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अत: समय के साथ स्वयं को समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

प्रश्न- 7 कौन-सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को धीमा कर देता हैं? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसके आने

के इंतजार में व्याकुल होने वाला कोई नहीं है। अत: वह किसके लिए तेजी से घर जाने की कोशिश करे। शाम होते ही रात हो जाएगी और कवि की विरह-व्यथा बढ़ने से उसका हृदय बेचैन हो जाएगा। इस प्रकार के विचार आते ही दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदम धीमे हो जाते हैं। **प्रश्न- 8 कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?**

उत्तर- कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता। वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। सांसारिक लोग माया-मोह और अपने स्वार्थ की पूर्ति के पीछे दौड़ते हैं जिसे कवि व्यर्थ मानता है। सांसारिक लोग प्रेम को महत्व नहीं देते हैं। इसलिए कवि को संसार अपूर्ण लगता है।

पतंग - आलोक धन्वा

प्रश्न- 1 'सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवतन कवि ने दिखाया हैं, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर- इस कविता में कवि ने प्राकृतिक वातावरण का सुंदर वर्णन किया है। भादों माह में तेज वर्षा होती है। इसमें बौछारें पड़ती हैं। बौछारों के समाप्त होने पर शरद का समय आता है। मौसम खुल जाता है। प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देते हैं-

1- सवेरे का सूरज खरगोश की आँखों जैसा लाल-लाल दिखाई देता है।
2- शरद ऋतु के आगमन से उमस समाप्त हो जाती है। ऐसा लगता है कि शरद अपनी साइकिल को तेज गति से चलाता हुआ आ रहा है।
3- वातावरण साफ़ व धुला हुआ-सा लगता है।
4- धूप चमकीली होती है।
5- फूलों पर तितलियाँ मंडराती हुई दिखाई देती हैं।

प्रश्न- 2 पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर- कवि ने पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। वह इसके माध्यम से पतंग की विशेषता तथा बाल-सुलभ चेष्टाओं को बताना चाहता है। बच्चे भी हलके होते हैं, उनकी कल्पनाएँ रंगीन होती हैं। वे अत्यंत कोमल व निश्छल मन के होते हैं। इसी तरह पतंगें भी रंगबिरंगी, हल्की होती हैं। वे आकाश में दूर तक जाती हैं। इन विशेषणों के प्रयोग से कवि पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

प्रश्न- 3 जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास- कपास के बारे में सोचें कि उससे बच्चों का क्या संबंध बन सकता हैं?

उत्तर- कपास व बच्चों के मध्य गहरा संबंध है। कपास हलकी, मुलायम, गद्देदार व चोट सहने में सक्षम होती है। कपास की प्रकृति भी निर्मल व निश्छल होती है। इसी तरह बच्चे भी कोमल व निश्छल स्वभाव के होते हैं। उनमें चोट सहने की क्षमता भी होती है। उनका शरीर भी हलका व मुलायम होता है। कपास बच्चों की कोमल भावनाओं व उनकी मासूमियत का प्रतीक है।

प्रश्न- 5 पतगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं- बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता हैं?

उत्तर- पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं की परिचायक है। जब पतंग उड़ती है तो बच्चों का मन भी उड़ता है। पतंग उड़ाते समय बच्चे अत्यधिक उत्साहित होते हैं। पतंग की तरह बालमन भी हिलोरें लेता है। वह भी आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहता है। इस कार्य में बच्चे रास्ते की कठिनाइयों को भी ध्यान में नहीं रखते।

प्रश्न- 6 दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर- इसका तात्पर्य है कि पतंग उड़ाते समय बच्चे ऊँची दीवारों से छतों पर कूदते हैं तो उनकी पदचापों से एक मनोरम संगीत उत्पन्न होता है। यह संगीत मृदंग की ध्वनि की तरह लगता है। साथ ही बच्चों का शोर भी चारों दिशाओं में गूँजता है।

प्रश्न- 7 जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती हैं?

उत्तर- जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए छत कठोर नहीं लगती। इसका कारण यह है कि इस समय हमारा सारा ध्यान पतंग पर ही होता है। हमें कूदते हुए छत की कठोरता का अहसास नहीं होता। हम पतंग के साथ ही खुद को उड़ते हुए महसूस करते हैं।

प्रश्न- 8 आसमान में रंग-बिरंगी पतगों को देखकर आपके मन में कैसे खयाल आते हैं? लिखिए

उत्तर- आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर मेरा मन खुशी से भर जाता है। मैं सोचता हूँ कि मेरे जीवन में भी पतंगों की तरह अनगिनत रंग होने चाहिए ताकि मैं भरपूर जीवन जी सकूं। मैं भी पतंग की तरह खुले आसमान में उड़ना चाहता हूँ। मैं भी नयी ऊँचाइयों को छूना चाहता हूँ।

प्रश्न- 9 'रोमांचित शरीर का संगीत और जीवन की लय में क्या संबंध है?

उत्तर- 'रोमांचित शरीर का संगीत' जीवन की लय से उत्पन्न होता है। जब मनुष्य किसी कार्य में पूरी तरह लीन हो जाता है तो उसके शरीर में अद्भुत रोमांच व संगीत पैदा होता है। वह एक निश्चित दिशा में गति करने लगता है। मन के अनुकूल कार्य करने से हमारा शरीर भी उसी लय से कार्य करता है।

प्रश्न- 10 'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ" उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं?

उत्तर- पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं से जुड़ी होती है। पतंग आकाश में उड़ती है, परंतु उसकी ऊँचाई का नियंत्रण बच्चों के हाथ की डोर में होता है। बच्चे पतंग की ऊँचाई पर ही ध्यान रखते हैं। वे स्वयं को भूल जाते हैं। पतंग की बढ़ती ऊँचाई से बालमन और अधिक ऊँचा उड़ने लगता है। पतंग का धागा पतंग की ऊँचाई के साथ-साथ बालमन को भी नियंत्रित करता है।

कविता के बहाने, बात सीधी थी पर - कुंवर नारायण

प्रश्न- 1 'कविता के बहाने' कविता के माध्यम से बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?

उत्तर- '[कविता के बहाने' कविता में 'सब घर एक कर देने के मायने' का अर्थ है- सीमा का बंधन समाप्त हो जाना। जिस प्रकार बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का ध्यान नहीं रखा जाता, उसी प्रकार कविता में स्थान की कोई सीमा नहीं है। यह शब्दों का खेल है। कवि बच्चों की तरह पूरे समाज को एक मानता है। वह अपने पराए का भेद भूलकर कविता की। रचना करता है। कविता समाज को बाँधती है, एक करती है।

प्रश्न- 2 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता हैं?

उत्तर- कविता का 'उड़ने' व 'खिलने' से सीधा संबंध है। चिड़िया एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़कर जाती है, परंतु कविता कल्पना के सहारे बहुत ऊँचे तक उड़ती है। यह काल की सीमा तक को लाँघ जाती है। इसी तरह कविता फूल की तरह विकसित होती है। फूल अपनी सुंदरता व गंध से समाज को प्रसन्न रखता है, उसी तरह कविता भी मानवीय भावों से विकसित होकर तरह-तरह के रंग दिखाती है तथा उसकी खुशबू सनातन है। वह हर युग में मानव को आनंद देती है।

प्रश्न- 3 कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- कवि ने बच्चे और कविता को समानांतर रखा है। बच्चों में रचनात्मक ऊर्जा होती है। उनके खेलने की कोई निश्चित सीमा नहीं होती। उनके सपने असीम होते हैं। इसी तरह कविता भी रचनात्मक तत्वों से युक्त होती है। उसका क्षेत्र भी विस्तृत होता है। उनकी कल्पना शक्ति अद्भुत होती है।

प्रश्न- 4 कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

उत्तर- कवि का मानना है कि कविता कभी मुरझाती नहीं है। यह अमर होती है तथा युग-युगांतर तक मानव-समाज को प्रभावित करती रहती है। अपनी जीवंतता की वजह से इसकी महक बरकरार रहती है। कविता के माध्यम से जीवन-मूल्य पीढ़ीदर-पीढ़ी चलते रहते हैं।

प्रश्न- 5 भाषा को 'सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर- कवि कहता है कि मानव मन में भावों का उदय होता है। यदि वह भाषा के चमत्कार में उलझ जाता है तो वह अपने भावों को सही ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाता। वह तभी उन्हें प्रकट कर सकता है जब भाषा को वह साधन बनाए, साध्य नहीं। साधन बनाने पर भाषा सहजता से इस्तेमाल हो सकती है। वह लोगों तक अपनी बात कह सकता है।

प्रश्न- 6 बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है, कैसे?

उत्तर- बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न करना होता है। मनुष्य अपनी भाषा को कठिन बना देता है तथा आडंबरपूर्ण या चमत्कारपूर्ण शब्दों से अपनी बात को कहने में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। इससे वह अपनी मूल बात को कहने में असफल हो जाता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि हर शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, भले ही वह समानार्थी या पर्यायवाची हो। शब्दों के चक्कर में उलझकर भाव अपना अर्थ खो बैठते हैं।

प्रश्न- 7 'कविता के बहाने' कविता में कवि की क्या आशंका है और क्यों?

उत्तर- इस कविता में कवि को कविता के अस्तित्व के बारे में संदेह है। उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाएँ व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। प्रगति की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं। अत: कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

प्रश्न- 8 कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती हैं?

उत्तर- कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नहीं पाता। वह मनोरंजन तो पा सकता है, परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। इस तरीके से बात पेचीदा हो जाती है।

प्रश्न- 9 प्रशंसा का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता हैं? 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर- प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को सही व उच्च कोटि का मानने लगता है। वह गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाता। उसका विवेक कुंठित हो जाता है। कविता में प्रशंसा मिलने के कारण कवि अपनी सहज बात को शब्दों के जाल में उलझा देता है। फलत: उसके भाव जनता तक नहीं पहुँच पाते।

प्रश्न- 10 'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

उत्तर- 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि ने भाषा के विषय में व्यंग्य करके यह सिद्ध करना चाहा है कि लोग किसी बात को कहने के क्रम में भाषा को सीधे, सरल और सहज शब्दों में न कहकर तोड़-मरोड़कर, उलट-पलटकर, शब्दों को घुमा-फिराकर कहते हैं, जिससे भाषा क्लिष्ट होती जाती है और बात बनने की बजाय बिगड़ती और उलझली चली जाती है। इससे हमारा कथ्य और भी जटिल होता जाता है क्योंकि बात सरल बनने की जगह पेचीदी बन जाती है।

कैमरे में बंद अपाहिज - रघुवीर सहाय

प्रश्न- 1 कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं। इनका क्या औचित्य है?

उत्तर- कवि ने कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी हैं। ये कोष्ठक कवि के मुख्य भाव को व्यक्त करते हैं। इनमें लिखी पंक्तियों के माध्यम से अलग-अलग लोगों को संबोधित किया गया है। ये एक तरह से संचालन करने के लिए हैं; जैसे-

कैमरामैन के लिए-

- कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा
- कैमरा ..... की कीमत है।

दर्शकों के लिए

- हम खुद इशारे से बताएँगे क्या ऐसा?
- यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा

अपंग व्यक्ति के लिए

- वह अवसर खो देंगे ?
- बस थोड़ी कसर रह गई।

ये कोष्ठक कविता के मुख्य उद्देश्य को अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं।

प्रश्न- 2 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है-विचार कीजिए।

उत्तर- यह कविता मानवीय करुणा तो प्रस्तुत करती ही है साथ ही इस कविता में उन लोगों की बनावटी करुणा का वर्णन भी मिलता है जो दुख दरिद्रता को बेचकर यश प्राप्त करना चाहते हैं। एक अपाहिज व्यक्ति के साथ झूठी सहानुभूति जताकर उसकी करुणा का सौदा करना चाहते हैं। एक अपाहिज की करुणा को पैसे के लिए टी.वी. पर दर्शाना वास्तव में क्रूरता की चरमसीमा है।

प्रश्न- 3 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- 'हम समर्थ शक्तिमान' पंक्ति के माध्यम से मीडिया की ताकत व कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता का पता चलता है। मीडिया कमी या मीडिया-संचालक अपने प्रचार-प्रसार की ताकत के कारण किसी का भी मजाक बना सकते हैं तथा किसी को भी नीचे गिरा सकते हैं। चैनल के मुनाफ़े के लिए संचालक किसी की करुणा को भी बेच सकते हैं। कार्यक्रम का निर्माण व प्रस्तुति संचालकों की मर्जी से होता है। **'हम एक दुर्बल को लाएँगे'** पंक्ति में लाचारी का भाव है। मीडिया के सामने आने वाला व्यक्ति कमजोर होता है। मीडिया के अटपटे प्रश्नों से संतुलित व्यक्ति भी विचलित हो जाता है। अपंग या कमजोर व्यक्ति तो रोने लगता है। यह सब कुछ उसे कार्यक्रम-संचालक की इच्छानुसार करना होता है।

प्रश्न- 4 यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे? तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर- यदि साक्षात्कार देने वाला अपंग व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रो देंगे तो प्रश्नकर्ता सहानुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाएगा। उसका यह भी उद्देश्य पूरा हो जाएगा कि हमने

सामाजिक कार्यक्रम दिखाया है। एक ऐसा कार्यक्रम जिसमें अपंग व्यक्ति की व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है। उस व्यक्ति की सोच और वेदना का हू-ब-हू चित्र हमने दिखाया है।

प्रश्न- 5 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है?

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति व्यावसायिक नजरिया प्रस्तुत किया है। परदे पर जो कार्यक्रम दिखाया जाता है, उसकी कीमत समय के अनुसार होती है। दूरदर्शन व कार्यक्रम-संचालक को जनता के हित या पीड़ा से कोई मतलब नहीं होता। वे अपने कार्यक्रम को कम-से-कम समय में लोकप्रिय करना चाहते हैं। अपंग की पीड़ा को कम करने की बजाय अधिक करके दिखाया जाता है ताकि करुणा को 'नकदी' में बदला जा सके। संचालकों की सहानुभूति भी बनावटी होती है।

प्रश्न 6 शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे किसी मित्र का परिचय किस तरह कराना चाहिए?

उत्तर- शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे मित्र का परिचय करते समय उसकी अपंगता का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए और न ही उसकी अपंगता का एहसास दिलाना चाहिए। लोगों से उसकी खूबियों के विषय में बताना चाहिए और अपनी मित्रता को महत्त्व देना चाहिए है। बचपन की बातों का जिक्र करते हुए उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। पढ़ाई और स्कूल की अन्य गतिविधियों में उसकी उपलब्धि के बारे में बताना चाहिए।

प्रश्न- 7 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त' ऐसे कार्यक्रम को देखकर आपको कैसा लगेगा?

उत्तर- सामाजिक उद्देश्य से युक्त ऐसे कार्यक्रम को देखकर मुझे बहुत दुख होगा। ऐसे कार्यक्रम किसी की सहायता नहीं करते। ये सिर्फ़ अपनी लोकप्रियता बढ़ाना चाहते हैं ताकि वे अधिक से अधिक धन कमा सकें। ऐसे कार्यक्रम बनाने वालों का उद्देश्य समाज-सेवा नहीं होता। वे मात्र संवेदना बेचना जानते हैं। ऐसे कार्यक्रमों पर तुरंत रोक लगानी चाहिए। दर्शकों को भी ऐसे कार्यक्रमों को सिरे से नकार देना चाहिए।

प्रश्न- 8 कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता क्या सोचता है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता सोचता है कि यदि अपंग व्यक्ति के साथ-साथ दर्शक भी रो देंगे तो उनकी सहानुभूति हमारे चैनल को मिल जाएगी। तब हम इसी प्रकार के और कार्यक्रम दिखाया करेंगे, जिस कारण हमें खुब फायदा मिलेगा। हमारा चैनल दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करता जाएगा। लोग हर समय हमारे चैनल को देखेंगे।

प्रश्न-9 प्रश्नकर्ता अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास क्यों दिलाना चाहता है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता चाहता है कि वह रो दे ताकि उसका रोना देखकर लोगों की करुणा जाग उठे। यदि ऐसा हो गया तो कार्यक्रम निश्चित रूप से सफल हो जाएगा। इसीलिए वह अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास दिलाता है।

प्रश्न- 10 'यह अवसर खो देंगे' पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता अपाहिज व्यक्ति से कई तरह के प्रश्न करता है। यह उससे पूछता है कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है। इस प्रश्न का उत्तर सोचकर बताइए। यदि आपने इस समय इस

प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो आप लाखों दर्शकों के सामने अपना अनुभव बताने का सुनहरा अवसर खो देंगे।

प्रश्न- 11 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का काव्य-सौंदर्य बताइए।

उत्तर- प्रस्तुत कविता में मीडिया के लोगों पर व्यंग्य किया गया है। मीडिया के वालों को दुनिया के दुःख-दर्द से कुछ लेना-देना है। टेलीविजन पर अपंग व्यक्ति को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करके वे अपना कारोबार और अपनी टीआरपी बढ़ाते हैं। कवि ने कुछ विशेष शब्दों का विशेष अर्थों में प्रयोग किया है। इस पद का प्रत्येक शब्द अर्थ की गंभीरता लिए हुए है। कवि ने भावों के अनुकूल अलंकारों का सुंदर एवं सार्थक प्रयोग किया है। अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, प्रश्न, उदाहरण आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। अलंकार योजना की दृष्टि से कविता अनूठी बन पड़ी है। दैनिक बोलचाल के शब्दों से युक्त सहज खड़ीबोली का प्रयोग किया गया है। कविता मुक्त छंद में रची गई है।

उषा - शमशेर बहादुर सिंह

प्रश्न- 1 कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है?

उत्तर- कवि के नीले शंख , राख से लीपा हूआ गीला चौका , सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

प्रश्न- 2 नयी कविता में कोष्ठक, विराम-चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्टकों से कविता में विशेष अर्थ पैदा हुआ है, कैसे ?

उत्तर- नयी कविता के कवियों ने नए-नए प्रयोगों से स्वयं को अलग दिखाना चाहा है। शमशेर बहादुर सिंह ने कोष्ठकों का प्रयोग किया है। कोष्ठकों में दी गई सामग्री मुख्य सामग्री से संबंधित है तथा पूरक का काम करती है। वह कथन को स्पष्टता प्रदान करती है। यहाँ (अभी गीला पड़ा है) वाक्य कोष्ठकों में दिया गया है जो प्रात:कालीन सुबह की नमी व ताजगी को व्यक्त करता है। कोष्ठकों से पहले के वाक्य से काम की पूर्णता का पता तो चलता है , परंतु स्थिति स्पष्ट नहीं होती। गीला पड़ने से कथन अधिक प्रभावपूर्ण बन जाता है।

प्रश्न- 3 अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूयस्ति का शब्द-चित्र खींचिए।

उत्तर- सुबह के समय सूर्य उदित होते समय ऐसा लगता है मानो कोई नीले सरोवर में स्नान करके बाहर आ रहा हो। सूर्य की किरणें धीरे-धीरे आकाश पर छा जाती हैं। ओस के कणों पर सूर्य की किरणें अद्भुत दृश्य उत्पन्न करती हैं तथा प्रकृति के दृश्य पल-पल में बदलते हैं। पक्षी चहचहाने लगते हैं। पशुओं व मानवों में नयी शक्ति का संचार हो जाता है। जीवन सजीव हो उठता है। जैसे-जैसे शाम होती है, सूर्य एक थके हुए पथिक की भाँति धीमी गति से अस्त होने लगता है। पक्षी अपने घरों की तरफ लौटने लगते हैं। सूर्य का रंग लाल हो जाता है मानो वह विश्राम करने जा रहा हो। सारा जीव-जगत भी आराम करने की तैयारी शुरू कर देता है।

प्रश्न- 4 सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं? 'उषा' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर- सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था , उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा

मानो काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

प्रश्न- 5 'उषा' कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

उत्तर- सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य की किरणें जादू के समान लगती हैं। इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो ज़ाते हैं।

प्रश्न- 6 स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने - इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि कहता है कि सुबह के समय अँधेरा होने के कारण आकाश स्लेट के समान लगता है। उस समय सूर्य की लालिमा-युक्त किरणों से ऐसा लगता है जैसे किसी ने काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। कवि आकाश में उभरे लाल-लाल धब्बों के बारे में बताना चाहता है।

प्रश्न- 7 भोर के नभ को ' राख से लीपा, गीला चौका ' की संज्ञा दी गई है। क्यों ?

उत्तर- कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमीयुक्त व धुंधला होता है। राख से लिपा हुआ चौका भी मटमैले रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका' की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

प्रश्न- 8 सिल और स्लेट का उदाहारण देकर कवि ने आकाश के रंग के बारे में क्या कहा है ?

उत्तर- कवि ने सिल और स्लेट के रंग की समानता आकाश के रंग से की है। भोर के समय आकाश का रंग गहरा नीला-काला होता है और उसमें थोड़ी-थोड़ी सूर्योदय की लालिमा मिली हुई होती है।

प्रश्न- 10 'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई हैं और क्यों?

उत्तर- 'उषा' कविता में प्रात:कालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गई है। इस समय आकाश नम एवं धुंधला होता है। इसका रंग राख से लिपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूखकर साफ़ हो जाता है उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

कवितावली, लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप - तुलसीदास

प्रश्न-1 तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- तुलसीदास अपने युग के स्रष्टा एवं द्रष्टा थे। उन्होंने अपने युग की प्रत्येक स्थिति को गहराई से देखा एवं अनुभव किया था। लोगों के पास चूँकि धन की कमी थी इसलिए वे धन के लिए सभी प्रकार के अनैतिक कार्य करने लग गए थे। उन्होंने अपने बेटा-बेटी तक बेचने शुरू कर दिए ताकि कुछ पैसे मिल सकें। पेट की आग बुझाने के लिए हर अधर्मी और नीचा कार्य करने के लिए तैयार रहते थे। जब किसान के पास खेती न हो और व्यापारी के पास व्यापार न हो तो ऐसा होना स्वाभाविक है।

प्रश्न-2 पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है-तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग सत्य है ? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर- पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य-सत्य कुछ हद तक इस समय का भी युग-सत्य हो सकता है। किंतु यदि आज व्यक्ति निष्ठा भाव, मेहनत से काम करे तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। निष्ठा और पुरुषार्थ-दोनों मिलकर ही मनुष्य के

पेट की आग का शमन कर सकते हैं। दोनों में एक भी पक्ष असंतुलित होने पर वांछित फल नहीं मिलता। अत: पुरुषार्थ की महत्ता हर युग में रही है और आगे भी रहेगी।

प्रश्न-3 धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ जोलहा लहा कहौ कोऊ
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब काहूकी जाति बिकार न सोऊ।

इस सवैया में 'काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब' कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर- तुलसीदास जाति-पाँति से दूर थे। वे इनमें विश्वास नहीं रखते थे। उनके अनुसार व्यक्ति के कर्म ही उसकी जाति बनाते हैं। पुरुष प्रधान समाज में विवाह होने पर लड़की की जाति या धर्म लड़के के जाति या धर्म के अनुसार हो जाती है। यदि वे काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते हैं तो उसका सामाजिक अर्थ में यही परिवर्तन होता कि बेटा या बेटी में उन्हें कोई अंतर नहीं दिखाई देता। यद्यपि उन्हें बेटी या बेटा को ब्याहना नहीं है, लेकिन वे दोनों की बराबर कद्र करते हैं।

प्रश्न-4 धूत कहौं ' वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की हैं। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर- तुलसीदास ने इस छंद में अपने स्वाभिमान को व्यक्त किया है। वे सच्चे रामभक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने किसी भी कीमत पर अपना स्वाभिमान कम नहीं होने दिया और एकनिष्ठ भाव से राम की अराधना की। समाज के कटाक्षों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। उनका यह कहना कि उन्हें किसी के साथ कोई वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करना, समाज के मुँह पर तमाचा है। वे किसी के आश्रय में भी नहीं रहते। वे भिक्षावृत्ति से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं तथा मस्जिद में जाकर सो जाते हैं। वे किसी की परवाह नहीं करते तथा किसी से लेने-देने का व्यवहार नहीं रखते। वे बाहर से सीधे हैं, परंतु हृदय में स्वाभिमानी भाव को छिपाए हुए हैं।

प्रश्न-5 भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर-लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- लक्ष्मण के मूर्चिछत होने पर राम को जिस तरह विलाप करते दिखाया गया है, वह ईश्वरीय लीला की बजाय आम व्यक्ति का विलाप अधिक लगता है। राम ने अनेक ऐसी बातें कही हैं जो आम व्यक्ति ही कहता है, जैसे-यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पहले पता होता तो मैं तुम्हें अपने साथ नहीं लाता। मैं अयोध्या जाकर परिवारजनों को क्या मुँह दिखाऊँगा, माता को क्या जवाब दूँगा आदि। ये बातें ईश्वरीय व्यक्तित्व वाला नहीं कह सकता क्योंकि वह तो सब कुछ पहले से ही जानता है। उसे कार्यों का कारण व परिणाम भी पता होता है। वह इस तरह शोक भी नहीं व्यक्त करता। राम द्वारा लक्ष्मण के बिना खुद को अधूरा समझना आदि विचार भी आम व्यक्ति कर सकता है। इस तरह कवि ने राम को एक आम व्यक्ति की तरह प्रलाप करते हुए दिखाया है जो उसकी सच्ची मानवीय अनुभूति के अनुरूप ही है। हम इस बात से सहमत हैं कि यह विलाप राम की नर-लीला की अपेक्षा मानवीय अनुभूति अधिक है।

प्रश्न-6 शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया हैं?

उत्तर- जब सभी लोग लक्ष्मण के वियोग में करुणा में डूबे थे तो हनुमान ने साहस किया। उन्होंने वैद्य द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। करुणा के इस वातावरण में हनुमान का यह प्रण सभी के मन में वीर रस का संचार कर गया। सभी वानरों और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूच्छा टूट जाएगी। इसीलिए कवि ने हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

प्रश्न-7 जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गवाई।
बरु अपजस सहतेऊँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित हैं?

उत्तर- भाई के शोक में डूबे राम ने कहा कि मैं अवध क्या मुँह लेकर जाऊँगा? वहाँ लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। वे कहते हैं कि नारी की रक्षा न कर पाने का अपयशता में सह लेता, किन्तु भाई की क्षति का अपयश सहना मुश्किल है। नारी की क्षति कोई विशेष क्षति नहीं है। राम के इस कथन से नारी की निम्न स्थिति का पता चलता है।उस समय पुरुष-प्रधान समाज था। नारी को पुरुष के बराबर अधिकार नहीं थे। उसे केवल उपभोग की चीज समझा जाता था। उसे असहाय व निर्बल समझकर उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाई जाती थी।

प्रश्न-8 कालिदास के 'रघुवंश' महाकाव्य में पत्नी (इंदुमत) के मृत्यु-शोक पर अज तथा निराला की 'सरोज-स्मृति' में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्‌गार निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें।

उत्तर- रघुवंश महाकाव्य में पत्नी की मृत्यु पर पति का शोक करना स्वाभाविक है। 'अज' इंदुमती की अचानक हुई मृत्यु से शोकग्रस्त हो जाता है। उसे उसके साथ बिताए हर क्षण की याद आती है। वह पिछली बातों को याद करके रोता है, प्रलाप करता है। यही स्थिति निराला जी की है। अपनी एकमात्र पुत्री सरोज की मृत्यु होने पर निराला जी को गहरा आघात लगता है। निराला जी जीवनभर यही पछतावा करते रहे कि उन्होंने अपनी पुत्री के लिए कुछ नहीं किया। उसका लालन-पालन भी न कर सके। लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर राम का शोक भी इसी प्रकार का है। वे कहते हैं कि मैंने स्त्री के लिए अपने भाई को खो दिया, जबकि स्त्री के खोने से ज्यादा हानि नहीं होती। भाई के घायल होने से मेरा जीवन भी लगभग खत्म-सा हो गया है।

प्रश्न-9 'पेट ही को यचत, बेचत बेटा-बेटकी'तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य हैं/ भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वतमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर- गरीबी के कारण तुलसीदास के युग में लोग अपने बेटा-बेटी को बेच देते थे। आज के युग में भी ऐसी घटनाएँ घटित होती है। किसान आत्महत्या कर लेते हैं तो कुछ लोग अपनी बेटियों को भी बेच देते हैं। अत्यधिक गरीब व पिछड़े क्षेत्रों में यह स्थिति आज भी यथावत है। तुलसी तथा आज के समय में अंतर यह है कि पहले आम व्यक्ति मुख्यतया कृषि पर निर्भर था, आज आजीविका के लिए अनेक रास्ते खुल गए हैं। आज गरीब उद्‌योग-धंधों में मजदूरी करके जब चल सकता है पंतुकटु सब बाह है किगबकीदता में इस यु' और वार्तमान में बाहु अंत नाह आया हैं ।

प्रश्न-10 तुलसी के युग की बेकारी के क्या कारण हो सकते हैं ? आज की बेकारी की समस्या के कारणों के साथ उसे मिलाकर कक्षा में परिचचा करें।

उत्तर- तुलसी युग की बेकारी का सबसे बड़ा कारण गरीबी और भुखमरी थी। लोगों के पास इतना धन नहीं था कि वे कोई रोजगार कर पाते। इसी कारण लोग बेकार होते चले गए। यही कारण आज की बेकारी का भी है। आज भी गरीबी है, भुखमरी है। लोगों को इन समस्याओं से मुक्ति नहीं मिलती, इसी कारण बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

प्रश्न-11 राम कौशल्या के पुत्र थे और लक्ष्मण सुमित्रा के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर, राम ने उन्हें लक्ष्य करके ऐसा क्यों कहा—'मिलह न जगत सहोदर भ्राता'2 इस पर विचार करें।

उत्तर- राम और लक्ष्मण भले ही एक माँ से पैदा नहीं हुए थे, परंतु वे एक ही पिता दशरथ के पुत्र थे और हमेशा एक-दूसरे के साथ रहते थे। राम अपनी माताओं में कोई अंतर नहीं समझते थे। लक्ष्मण सदैव परछाई

की तरह राम के साथ रहते थे। उनके जैसा त्याग सहोदर भाई भी नहीं कर सकता था। इसी कारण राम ने कहा कि लक्ष्मण जैसा सहोदर भाई संसार में दूसरा नहीं मिल सकता।

प्रश्न-12 यहाँ कवि तुलसी के दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित, सवैया-ये पाँच छद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में और छद तथा काव्य-रूप आए हैं। ऐसे छदों व काव्य-रूपों की सूची बनाएँ।

उत्तर- तुलसी साहित्य में अन्य छंदों का भी प्रयोग हुआ है जो निम्नलिखित हैं- बरवै, छप्पय, हरिगीतिका। तुलसी ने इसके अतिरिक्त जिन छंदों का प्रयोग किया है उनमें छप्पय, झूलना मतंगयद, घनाक्षरी वरवै, हरिगीतिका, चौपय्या, त्रिभंगी, प्रमाणिका तोटक और तोमर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। काव्य रूप-तुलसी ने महाकाव्य, प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्यों की रचना की है। इसीलिए अयोध्यासिंह उपाध्याय लिखते हैं कि "कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।"

प्रश्न-13 तुलसी ने अपने युग की जिस दुर्दशा का चित्रण किया हैं, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास के युग में जनसामान्य के पास आजीविका के साधन नहीं थे। किसान की खेती चौपट रहती थी। भिखारी को भीख नहीं मिलती थी। दान-कार्य भी बंद ही था। व्यापारी का व्यापार ठप था। नौकरी भी लोगों को नहीं मिलती थी। चारों तरफ बेरोजगारी थी। लोगों को समझ में नहीं आता था कि वे कहाँ जाएँ क्या करें?

प्रश्न-14 तुलसी के समय के समाज के बारे में बताइए।

उत्तर- तुलसीदास के समय का समाज मध्ययुगीन विचारधारा का था। उस समय बेरोजगारी थी तथा आम व्यक्ति की हालत दयनीय थी। समाज में कोई नियम-कानून नहीं था। व्यक्ति अपनी भूख शांत करने के लिए गलत कार्य भी करते थे। धार्मिक कट्टरता व्याप्त थी। जाति व संप्रदाय के बंधन कठोर थे। नारी की दशा हीन थी। उसकी हानि को विशेष नहीं माना जाता था।

प्रश्न-15 तुलसी युग की आर्थिक स्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर- तुलसी के समय आर्थिक दशा खराब थी। किसान के पास खेती न थी, व्यापारी के पास व्यापार नहीं था। यहाँ तक कि भिखारी को भीख भी नहीं मिलती थी। लोग यही सोचते रहते थे कि क्या करें, कहाँ जाएँ? वे धन-प्राप्ति के उपायों के बारे में सोचते थे। वे अपनी संतानों तक को बेच देते थे। भुखमरी का साम्राज्य फैला हुआ था।

प्रश्न-16 लक्ष्मण के मूर्चिछत होने पर राम क्या सोचने लगे?

उत्तर- लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्चिछत हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे हैं। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बड़ी हानि नहीं होगी, परंतु भाई के खो जाने का कलंक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

प्रश्न-17 क्या तुलसी युग की समस्याएँ वर्तमान में समाज में भी विद्यमान हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- तुलसी ने लगभग 500 वर्ष पहले जो कुछ कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय की मूल्यहीनता, नारी की स्थिति, आर्थिक दुरवस्था का चित्रण किया है। इनमें अधिकतर समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। आज भी लोग जीवन-निर्वाह के लिए गलत-सही कार्य करते हैं। नारी के प्रति नकारात्मक सोच आज भी विद्यमान है। अभी भी जाति व धर्म के नाम पर भेदभाव होता है। इसके विपरीत, कृषि, वाणिज्य, रोजगार की स्थिति आदि में बहुत बदलाव आया है। इसके बाद भी तुलसी युग की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं।

प्रश्न-18 कुंभकरण ने रावण को किस सच्चाई का आइना दिखाया?

उत्तर- कुंभकरण रावण का भाई था। वह लंबे समय तक सोता रहता था। उसका शरीर विशाल था। देखने में

ऐसा लगता था मानो काल आकर बैठ गया हो। वह मुँहफट तथा स्पष्ट वक्ता था। वह रावण से पूछता है कि तुम्हारे मुँह क्यों सूखे हुए हैं? रावण की बात सुनने पर वह रावण को फटकार लगाता है तथा उसे कहता है कि अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। इस प्रकार उसने रावण को उसके विनाश संबंधी सच्चाई का आईना दिखाया।

छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख- उमाशंकर जोशी

प्रश्न- 1 छोटे चौकोने खेत की कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर- छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में यही अर्थ निहित है कि कवि ने कवि कर्म को खेत में बीज रोपने की तरह माना है। इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि कविता रचना सरल कार्य नहीं है। जिस प्रकार खेत में बीज बोने से लेकर फ़सल काटने तक काफ़ी मेहनत करनी पड़ती है, उसी प्रकार कविता रचने के लिए अनेक प्रकार से मेहनत करनी पड़ती है।

प्रश्न- 2 रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' क्या है?

उत्तर- रचना के संदर्भ में 'अंधड़' का अर्थ है-भावना का आवेग और 'बीज' का अर्थ है -विचार व अभिव्यक्ति। भावना के आवेग से कवि के मन में विचार का उदय होता है तथा रचना प्रकट होती है।

प्रश्न- 3 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

उत्तर- अक्षय का अर्थ है - नष्ट न होने वाला। कविता का रस इसी तरह का होता है। रस का अक्षय पात्र कभी भी खाली नहीं होता। वह जितना बाँटा जाता है, उतना ही भरता जाता है। यह रस चिरकाल तक आनंद देता है। खेत का अनाज तो खत्म हो सकता है, लेकिन काव्य का रस कभी खत्म नहीं होता। कविता रूपी रस अनंतकाल तक बहता है। कविता रूपी अक्षय पात्र हमेशा भरा रहता है।

प्रश्न- 4 व्याख्या करें-

(1) शब्द के अंकुर फूटे
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि जब वह छोटे खेतरूपी कागज के पन्ने पर विचार और अभिव्यक्ति का बीज बोता है तो वह कल्पना के सहारे उगता है। उसमें शब्दरूपी अंकुर फूटते हैं। फिर उनमें विशेष भावरूपी पुष्प लगते हैं। इस प्रकार भावों व कल्पना से वह विचार विकसित होता है।

(2) रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

उत्तर- कवि कहता है कि कवि-कर्म में रोपाई क्षण भर की होती है अर्थात भाव तो क्षण-विशेष में बोया जाता है। उस भाव से जो रचना सामने आती है, वह अनंतकाल तक लोगों को आनंद देती है। इस फसल की कटाई अनंतकाल तक चलती है। इसके रस को कितना भी लूटा जाए, वह कम नहीं होता। इस प्रकार कविता कालजयी होती है।

प्रश्न- 5 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

प्रश्न- 6 'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि-कर्मके समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

प्रश्न- 7 कवि को खेत का रूपक अपनाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

उत्तर- कवि का उद्देश्य कवि-कर्म को महत्ता देना है। वह कहता है कि काव्य-रचना बेहद कठिन कार्य है। बहुत चिंतन के बाद कोई विचार उत्पन्न होता है तथा कल्पना के सहारे उसे विकसित किया जाता है। इसी प्रकार खेती में बीज बोने से लेकर फसल की कटाई तक बहुत परिश्रम किया जाता है। इसलिए कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत पड़ी।

प्रश्न- 8 'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर- यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है। वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

प्रश्न- 9 'पाँती-बँधी' से कवि का आवश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इसका अर्थ है-एकता। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों को एकता के साथ रहना चाहिए। एक होकर चलने से मनुष्य अद्भुत विकास करेगा तथा उसे किसी का भय भी नहीं रहेगा।

भक्तिन - महादेवी वर्मा

प्रश्न -1 भक्तिन अपना वास्तविक नाम क्यों छुपाती थी ?

उत्तर -भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था । हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार लक्ष्मी धन की देवी हैं। लक्ष्मी जगत-पालक भगवान विष्णु की पत्नी है, धन-ऐश्वर्य की देवी है। भक्तिन को अपने नाम के अर्थ और यथार्थ में विरोधाभास लगता है क्योंकि वह निर्धन एवं दुर्भाग्यशाली है। अत: वह स्वयं को लक्ष्मी नहीं कहलवाना चाहती थी। इसलिये वह अपना वास्तविक नाम छुपाती थी।

प्रश्न -2 लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा?

उत्तर- जब वह शहर में लेखिका के यहाँ जीविका खोजने के उद्देश्य से आई तो उसके गले में पड़ी कंठी-माला, उसके घुटे हुए सिर एवं सादगीपूर्ण वेशभूषा को देखकर लेखिका ने उसका नाम भक्तिन रख दिया।

प्रश्न -3 भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है?

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बांटा गया है। पहला परिच्छेद- भक्तिन का बचपन , दूसरा परिच्छेद- वैवाहिक जीवन, तीसरा परिच्छेद- संघर्षमय जीवन और चौथा परिच्छेद- महादेवी वर्मा की सेविका।

प्रश्न -4 भक्तिन का बचपन कैसा था ?

उत्तर -बचपन में ही मां की मृत्यु होने से भक्तिन का बचपन दुखमय रहा , सौतेली मां ने पांच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह कर दिया गया और नौ वर्ष की उम्र में भक्तिन का गौना कर उसे ससुराल भेज दिया।

प्रश्न 5- भक्तिन (लक्ष्मी) की विमाता ने उसे पिता की बीमारी का संदेश क्यों नहीं भेजा?

उत्तर- भक्तिन के पिता उस पर अगाध स्नेह रखते थे। पिता की संपत्ति में से लक्ष्मी अपना हिस्सा न मांगे इसलिये विमाता ने उसे पिता की बीमारी का समाचार तब भेजा जब वह मर चुका था।

प्रश्न 6- भक्तिन के जीवन का दूसरा परिच्छेद कैसा रहा?

उत्तर- भक्तिन के जीवन के दूसरे परिच्छेद में सुख कम और दुख अधिक रहा। भक्तिन का पति , उसके संस्कार, तेज, परिश्रमी स्वभाव और कार्य कुशलता से प्रभावित था, वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता था परंतु तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण भक्तिन को अपनी सास और जिठानियों की घोर उपेक्षा सहनी पड़ी।

प्रश्न 7- भक्तिन और उसकी बेटियों के साथ क्या भेदभाव होता था?

उत्तर- भक्तिन को घर भर के सारे काम करने पड़ते थे जबकि सास और जिठानियां आराम से बैठकर बातें करती रहती थीं भक्तिन की बेटियां दिनभर गोबर पाथती थीं जिठानियों के काले-कलूटे बेटे दूध मलाई खाकर खेलते रहते थे। भक्तिन और उसकी बेटियों को काले गुड़ की डली के साथ चना बाजरा दिया जाता था।

प्रश्न 8- भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था, लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर-

1- बचपन में ही मां की मृत्यु।
2- विमाता की उपेक्षा।
3- भक्तिन (लक्ष्मी) का बालविवाह।
4- पिता का निधन।
5- तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा।
6- पति की असमय मृत्यु।
7- दामाद का निधन और पंचायत के द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह।
8- लगान न चुका पाने पर जमींदार द्वारा भक्तिन का अपमान।

प्रश्न 9- भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन पर कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन शैली सरल हो गयी , वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय संगिनी बन गयी।

प्रश्न 10- भक्तिन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा की सेविका भक्तिन के व्यक्तित्व की विशेषताएं निम्नांकित हैं-

1-समर्पित सेविका 2-स्वाभिमानी 3-तर्कशीला 4-परिश्रमी 5-संघर्षशील

प्रश्न 11- भक्तिन के दुर्गुणों का उल्लेख करें।

भक्तिन में कई अवगुण भी हैं-

1- वह घर में पड़े रुपए पैसे को भंडार घर की मटकी में छुपा देती है । अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती।
2- महादेवी के क्रोध से बचने के लिये भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नही मानती। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क करती है।
3- वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल देना चाहती है पर स्वयं बिलकुल नही बदलती।

प्रश्न 12- निम्नांकित भाषा-प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

उत्तर-

(क) **पहली कन्या के दो और संस्करण कर डाले** - भक्तिन ने अपनी पहली कन्या के बाद दो और कन्याएं पैदा की।

(ख) **खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी** - आज भी अशिक्षित ग्रामीण समाज में बेटियों को खोटा सिक्का कहा जाता है। भक्तिन ने एक के बाद एक तीन बेटियां पैदा कर दी इसलिए उसे खोटे सिक्के को ढालने वाली मशीन कहा गया।

प्रश्न 13-भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का उल्लेख किया है-

1- लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव 2-विधवाओं की समस्या 3- न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के मानवाधिकार को कुचलना 4- अशिक्षा और अंधविश्वास

बाजार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार

प्रश्न-1 पर्चेजिंग पावर किसे कहा गया है और बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- पर्चेजिंग पावर का अर्थ है खरीदने की शक्ति। पर्चेजिंग पावर के घमंड में व्यक्ति दिखावे के लिए आवश्यकता से अधिक खरीदारी करता है और बाजार को शैतानी एवं व्यंग्य की शक्ति देता है। पर्चेजिंग पावर का इस्तेमाल करने वाले लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

प्रश्न- 2 लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है और इसका लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- बाजार की चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है। यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक आवश्यकता न होने पर भी सजी-धजी चीजों को खरीदने के लिए विवश हो जाते हैं।

प्रश्न- 3 आशय स्पष्ट करें।

मन खाली होना, मन भरा होना, मन बंद होना

उत्तर- मन खाली होना- मन में कोई निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य न होना। निरुद्देश्य बाजार जाना और ब्यर्थ की चीजों को खरीद्कर लाना।

मन भरा होना- मन लक्ष्य से भरा होना। जिसका मन भरा हो वह भली -भांति जानता है कि उसे बाजार से कौन सी वस्तु खरीदनी है। वह अपनी आवश्यकता की चीज खरीदकर बाजार को सार्थकता प्रदान करता है।

मन बंद होना- मन में किसी भी प्रकार की इच्छा को न आने देना। बलपूर्वक अपनी इच्छाओं को दबा देना।

प्रश्न -4 'जहां तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहां उस बल का बीज नहीं है।' यहां किस बल की चर्चा की गयी है?

उत्तर- लेखक ने संतोषी स्वभाव के व्यक्ति के आत्मबल की चर्चा की है। दूसरे शब्दों में यदि मन में संतोष हो तो व्यक्ति दिखावे और ईर्ष्या से दूर रहता है उसमें संचय करने की प्रवृत्ति नहीं होती।

प्रश्न -5 अर्थशास्त्र कब अनीतिशास्त्र बन जाता है?

उत्तर- जब बाजार में कपट और शोषण बढ़ने लगे। खरीददार और दुकानदार एक दूसरे को ठगने की घात में लगे रहें। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तब बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं।

प्रश्न -6 भगतजी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं?

उत्तर- भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय , लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।

निम्नांकित बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं।

1-पंसारी की दुकान से केवल जीरा और नमक खरीदना। 2-निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिये निकलना। 3-छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना। 4-बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ़्त बांट देना। 5- सभी का जय जय राम कहकर स्वागत करना। 6-बाजार की चमक दमक से आकर्षित न होना। 7- समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

प्रश्न-7 बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर- मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नही करते वे भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

काले मेघा पानी दे - धर्मवीर भारती

प्रश्न- 1 इन्दर सेना घर-घर जाकर पानी क्यों मांगती थी?

उत्तर- गांव के लोग बारिश के लिए भगवान इंद्र से प्रार्थना किया करते थे। जब पूजा-पाठ , व्रत आदि उपाय असफ़ल हो जाते थे तो भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गांव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी मांगते थे।

प्रश्न- 2 इन्दरसेना के संबंध में लेखक का क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर- इन्दरसेना का कार्य लेखक को अंधविश्वास लगता है , उसका मानना है कि यदि इंदरसेना देवता से पानी दिलवा सकती है तो स्वयं अपने लिए पानी क्यों नहीं मांग लेती? पानी की कमी होने पर भी लोग घर में एकत्र किये हुए पानी को इंदरसेना पर फ़ेंकते हैं। लेखक इसे पानी की निर्मम बरबादी मानता है।

प्रश्न- 3 जीजी ने लेखक को किस प्रकार समझाया?

उत्तर- जीजी ने लेखक को निम्न तर्क देकर समझाया-

1- त्याग का महत्व- कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है।

2- दान की महत्ता- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊंचा स्थान दिया है।

3- इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना- इंदरसेना पर पानी फ़ेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना है।

4- पानी की बुवाई करना- जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए जमीन पर बीज डालकर बुवाई करता है वैसे ही पानी वाले बादलों की फ़सल पाने के लिए पहले पानी की बुवाई की जाती है।

प्रश्न- 4 इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती थी ?

उत्तर- गंगा भारतीय समाज में सबसे पूज्य नदी है। वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है , स्वर्ग की सीढ़ी है, मोक्षदायिनी है। गंगाजल पावन है, पवित्र करने वाली है। उसमे पानी नहीं अपितु जल बहता है जो अमृत तुल्य है। ऐसे परिवेश मे उत्पन्न लड़के सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। गंगा भी तो स्वर्ग से उतरकर सागर के साठ हजार पुत्रों को अपने जल के स्पर्श से मोक्ष देने आई थी।

प्रश्न- 5 नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

उत्तर- भारतीय सामाजिक परिवेश में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है। नदियो की महत्ता निम्न बातों से प्रकट होती है-

1. इस देश मे अनेक नदियों को मोक्षदायिनी कहा है।
2. सात पवित्र नदियां-गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी, गोदावरी के पवित्र जल में डुबकी लगाने की कामना प्रत्येक भारतीय में रहती है।
3. हमारे देश के अधिकांश पवित्र स्थान नदियों के तट पर स्थित है। यथा-हरिद्वार , ऋषिकेश, प्रयाग, बनारस, उज्जैन, नासिक, मथुरा, आदि।
4. हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही यह समाज जीवित रहा है और तभी संस्कृति पनपी है।

प्रश्न- 6 लेखक दुखी क्यों है, उसके मन में कौन से प्रश्न उठ रहे है?

उत्तर- आजादी के कई वर्ष बाद भी भारतीयों की सोच में सकारात्मक बदलाव न देखकर लेखक दुखी है। उसके मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं - क्या हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं ? क्या हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को समझ पाए हैं ? राष्ट्र निर्माण में हम पीछे क्यों हैं , हम देश के लिए क्या कर रहे हैं ? हम स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं , त्याग में क्यों नहीं? सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं गरीबों तक क्यों नहीं पहुंचती है?

पहलवान की ढोलक - फणीश्वरनाथ रेणु

प्रश्न- 1 महामारी से ग्रस्त गाँव की रात्रि की विभीषिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर- गाँव में गरीबी थी। मले रिया और हैजे से लोग मौत के मुंह में जा रहे थे। रोज दो-तीन लाशें उठती थी। रात को सन्नाटा रहता था , जिसे सियारों और उल्लुओं की आवाजें और भी भयानक बना देती थी। बीमार लोगों के कराहने, उल्टी करने और बच्चों के कमजोर कंठ से निकली माँ-माँ की करुण पुकार भी रात्रि की विभीषिका को कम नही करती थी।

प्रश्न- 2 ढोलक की आवाज का पूरे गांव पर क्या असर होता था?

उत्तर- ढोलक की आवाज से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली सी दौड़ जाती थी , उनकी आंखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले लगा लेते थे। इस प्रकार ढोल की आवाज , मृतप्राय गांववालों की नसों में संजीवनी शक्ति को भर बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न- 3 लुट्टन ने अपना गुरु किसे माना और क्यों?

उत्तर- लुट्टन ने कुश्ती के दांव-पेंच किसी गुरु से नहीं बल्कि ढोल की आवाज से सीखे थे। ढोल से निकली हुई ध्वनियां उसे दांव-पेच सिखाती हुई और आदेश देती हुई प्रतीत होती थी। जब ढोल पर थाप पड़ती थी तो पहलवान की नसें उत्तेजित हो जाती थी वह लड़ने के लिए मचलने लगता था।

प्रश्न- 4 लुट्टन सिंह राज पहलवान कैसे बना?

उत्तर- श्यामनगर के राजा कुश्ती के शौकीन थे। उन्होंने दंगल का आयोजन किया। पहलवान लुट्टन सिंह भी दंगल देखने पहुंचा। नामक पहलवान जो शेर के बच्चे के नाम से प्रसिद्ध था , कोई भी पहलवान उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं करता था। चाँद सिंह अखाड़े में अकेला गरज रहा था। लुट्टन सिंह ने चाँद सिंह को चुनौती दे दी और उससे भिड़ गया। ढ़ोल की आवाज सुनकर लुट्टन के नस-नस में जोश भर गया। उसने चाँद सिंह को चारों खाने चित कर दिया। राजा साहब ने लुट्टन की वीरता से प्रभावित होकर उसे राज पहलवान बना दिया।

प्रश्न-5 लुट्टन को दरबार क्यों छोड़ना पड़ा?

उत्तर- राजा की मृत्यु के बाद उसके बेटे ने गद्दी संभाली। उसे घोड़ों की रेस का शौक था । मैनेजर ने नये राजा को भड़काया , पहलवान और उसके दोनों बेटों के भोजनखर्च को भयानक और फ़िज़ूलखर्च बताया। फ़लस्वरूप नए राजा ने कुश्ती को बंद करवा दिया और पहलवान लुट्टनसिंह को उसके दोनों बेटों के साथ महल से निकाल दिया।

प्रश्न- 6 किन घटनाओं से पहलवान लुट्टन के संघर्षशील व्यक्तित्व और हिम्म ती होने का परिचय मिलता है?

उत्तर- पहलवान लुट्टन बहुत हिम्मती था। अपने दुखों की परवाह न करते हुए दूसरों को हिम्मत बंधाना बहुत हिम्मत का काम है। उसने निम्नांकित अवसरों पर अपनी दिलेरी और हिम्मत का परिचय दिया।

1- श्याम नगर के दंगल में चांदसिंह से भिड़ते समय।
2- अपने बेटों की मृत्यु पर उनका अंतिम संस्कार करते समय।
3- बेटों की मृत्यु के बाद भी गांव वालों का हौंसला बढ़ाने के लिए रात-रात भर ढोलक बजाते रहना।

शिरीष के फूल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न- 1 हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है- शिरीष के फूल के आधार पर स्पष्ट करें ?

उत्तर- सज्जनों की परिभाषा देते हुए कहा जाता है कि वे वज्र से भी कठोर तथा पुष्प से भी कोमल होते हैं। शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। वह इतना कोमल है कि केवल भौंरों के पदों का दबाव ही सह सकता है। शिरीष की लकड़ी इतनी मजबूत अवश्य होती है कि इस पर झूला डाला जा सके। उसके फल इतने कठोर होते है कि नए फल आने तक भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। शिरीष वायुमण्डल से रस खींचकर ही इतना कोमल और इतना कठोर बना है। शिरीष के आधार पर यह कहना उचित ही है कि हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी कभी जरूरी हो जाती है।

प्रश्न- 2 द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भारी जीवन स्थितियों मे अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है- स्पष्ट करें।

उत्तर- शिरीष को गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू, प्रभावित नहीं करती। वह तब भी लहलहाता है, जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है। शिरीष से सीख लेते हुए लेखक सोचता है कि हमारे देश में जो मार काट , अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर है, क्या वह देश को स्थिर नहीं रहने देगा। गुलामी, अशांति और

विरोधी वातावरण के बीच अपने सिद्धांतों की रक्षा करते हुए गांधी जी स्थिर रह सके थे तो देश भी रह सकता है। जीने की प्रबल अभिलाषा के कारण विषम परिस्थितयों मे भी यदि शिरीष खिल सकता है तो हमारा देश भी विषम परिस्थितियों में स्थिर रह सकता है।

प्रश्न- 3 हाय वह अवधूत आज कहाँ है? ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के किस संकट की ओर संकेत किया है ?

उत्तर- यहाँ अवधूत 'गाँधी जी' के लिए प्रयुक्त हुआ है। उन्होंने अपने आत्मबल से देह बल को पराजित किया। आज आत्मबल पर देह बल का वर्चस्व दिखाई दे रहा है। आज गाँधी जी के अभाव में वर्तमान सभ्यता के संकट में लेखक को भयंकर कष्ट का अनुभव हो रहा है।

प्रश्न- 4 आधुनिक काल के किस कवि को कालिदास के समकक्ष रखा जा सकता है?

उत्तर- लेखक के अनुसार आधुनिक काल के कवि रवींद्रनाथ ठाकुर और सुमित्रानंदन पंत को कालिदास के समकक्ष रखा जा सकता है क्योंकि ये भी उन्हीं के समान अनासक्त एवं उन्मुक्त हृदय के हैं। **प्रश्न- 5 शिरीष को देखकर लेखक के मन में कैसी तंरगें उठती हैं?**

उत्तर- लेखक सोचने लगता है कि इस चिलचिलाती धूप में वह इतना सरस कैसे रह पाता है ? क्या ये लू आँधी, धूप, अपने आप में सत्य नहीं है? यह अपना जीवन रस कहाँ से ले पाता है।

प्रश्न- 6 शिरीष के समान किसे बताया गया है, और क्यों?

उत्तर- शिरीष की भाँति महात्मा गाँधी को बताया गया है । जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, अग्नि कुंड बनी धरती में स्वयं को कठोर होते हुए सुकोमल बना रहता है ठीक वैसे ही देश में मची मार-काट, अग्निदाह और खून-खच्चर के बीच महात्मा गाँधी इतने कोमल और कठोर बने रह सके थे। सत्य और अहिंसा के अपने सिद्धांतों के प्रति अडिग थे।

श्रम विभाजन और जाति प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज - डॉ. भीमराव अम्बेदकर

प्रश्न- 1 जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी एक कारण कैसे बनती रही है?

उत्तर- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी एवं भुखमरी का एक कारण हमेशा बनती रही है। इसके मुख्य कारण निम्नवत हैं -

1- मनुष्य के पेशे का पूर्व निर्धारण
2- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति न देना।
3- अपने पूर्व निर्धारित पेशे के प्रति व्यक्ति की अरूचि।
5. जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो।

प्रश्न- 2 आदर्श समाज की स्थापना का आधार क्या है?

उत्तर- निम्नांकित तीन बिंदुओं के आधार पर आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है-

1-समता 2-स्वतंत्रता 3-भाईचारा

प्रश्न- 3 शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों की असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धान्त मानने का आग्रह क्यों हैं ?

उत्तर- डॉ0 आम्बेडकर यह जानते हुए भी कि शारीरिक वंश परंपरा की दृष्टि से मनुष्यों की असमानता का होना संभव है समता के व्यवहार्य सिद्धान्त को मानने का आग्रह करते हैं-

इसके पीछे लेखक का तर्क यह है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो समाज के सभी सदस्यों को आरम्भ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। राजनीतिज्ञों को भी सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का

विकास करने के लिए अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि वंश में जन्म लेना या सामाजिक परंपरा व्यक्ति के वश में नहीं है। अतः इस आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं है।

प्रश्न- 4 समता का औचित्य कहाँ तक है?

उत्तर- समता का औचित्य बहुत आगे तक जाता है , जो जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार है।

प्रश्न- 5 राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है?

उत्तर- राजनेता के पास अनेक लोग आते हैं , उसकी उनके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती है। अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न- 6 राजनीतिज्ञ समान व्यवहार क्यों नहीं करते ?

उत्तर- सभी लोगों के समान होते हुए भी समाज में उनका वर्गीकरण और श्रेणीकरण करना आवश्यक होता है। इसलिए राजनीतिज्ञ समान व्यवहार नहीं करते हैं।

संदर्भ एवं आभार

1- www.learncbse.in>ncert-solutions- for class 12-hindi

2- https://keepinspringme.in>question

3- www.studyrankers.com>ncert

4- www.cbsetuts.com>ncert-solutions

5- cbseacademic-nic.in

6- ncert.nic.in/textbook